

श्री शारिका लीला-लहरी

(चवन तरंग हुंद संग्रह)

श्रेयमि लटि

जयतु शारिकैः

प्रद्यम्न शिखरासीनां मात्र चक्रोपशोभिताम्।
पीटेश्वरी शिला रूपां शारिकां प्रणामाम्यहम्।।



(©सर्वाधिकार सुरक्षित है)

जयतु शारिकैः

प्रद्यम्न शिखरासीनां मातृ चक्रोपशोभिताम्।
पीठेश्वरी शिला रूपं शारिकां प्रणामाम्यहम्।।

श्री शारिका लीला-लहरी

(नवन तरंगन हुंद संग्रह)

शेयमि लटि

प्रकाशकः

श्री श्री जगद्म्बा शारिका चक्रेश्वर संस्था
हारीपर्वत देवी आंगन श्रीनगर,
देवी आंगन पलोरा ढोक, जम्मू।





ॐ श्रीं सप्तभिरुज्ज्वला कुलिस्सौ वा सप्तसामिधुति
सप्तर्वि प्रणतदिग्बुधैकजयुगा या सप्तलोकार्थिनी

काश्यां प्रवेशे मध्य नगरी परास्रपीठे शिराया
देवी सप्तक याना भ्यावती श्री शरिका गतुः ॥

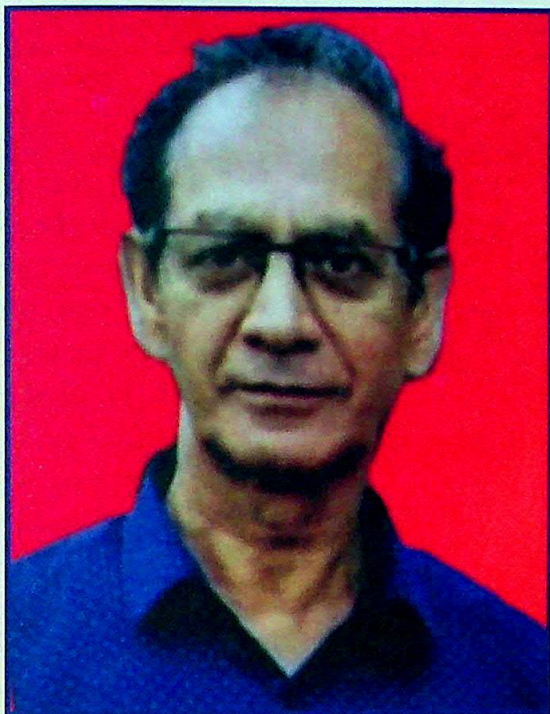
ॐ श्री शारिकायै नमः ॥

ॐ ह्रीं श्रीं हूं फां आं शां शारिकाय नमः









P. N. Koul popularly known as Kaka Je Chatabali though is not physically with us but has left a deep impression in the heart of everyone through his soulful and devotional singing. His composition has always blessed us to have the taste of divine nectar.

From early years of his life till his Moksha would always compose the Bhajans which would connect the Devotees to the eternal world. His indepth study of Bhakti Ras and spelling of every word was like adding Diamond to the Crown. A legend in true sense and a personality of calmness who would always sit at the Sharika Peet and change the atmosphere with his soulful singing. At last he is amongst us like a star in the sky watching and blessing us.

(A Legend Never Dies)



वर्ण क्रमानुसार भजन सूची

ॐ

ॐ परवुन हंसु ताजदार	श्री आफताब जी	174
---------------------	---------------	-----

अ

अपॉरय यपॉरय च्वपॉरय पानस	श्री परमानन्द जी	121
अज वाति बूजुम मोल म्योन	मास्टर ज़िन्दु कौल	161
अज सॉन्य व्यनती सत् ग्वरु सादय	श्री कृष्ण दास	125
आमुच मनस रँच वासना	मास्टर ज़िन्दु कौल	206
अंतः कालुचि ज़ालु छम तमि हालु	श्री कृष्ण दास	82
अँरिनि रंग गोम श्रावण हिये	अरिनि माल	200
ओरुत प्रारान छुस बर तलय	श्री जगन्न नाथ त्राली	153
ओस कुस रुजिथ अंदरी वेर		155
अभ्यास किन्य व्यकास फोलुम		233
आदन बाजो कन थाव नादन	श्री परमानन्द जी	248
आरस मंज अचॉवय	श्री परमानन्द जी	249
अमर पानो भ्रम समसार छुय	श्री परमानन्द जी	261

इ

इन्द्रिय द्वार ज़ानुन ज़ॉनिथ सुज्ञान		129
इतना तो कर ले स्वामी	श्री कृष्ण दास	180

उ

उत्तम भाव सहज यज्ञस ब्राह्मन		261
------------------------------	--	-----

क

करुम मे हे प्रभो मंगल	श्री ठाकुर जी	138
काँसि यम भय चोन प्रेयम तु लोलो	श्री परमानन्द जी	133
कोरनस यी टॉठि तु क्याह वनस		166
कर यियि मे कुन	श्री वासुदेव जी	94
कर सनु कुनुय बनि सुत्य तस जानानसुय	श्री नील कंठ जी	178
करस स्वन पोशन मालु	श्री वासुदेव जी	93
कस क्या छु ज़ेनुन येमि संसॉरी	श्री लक्ष्मण जी	131
कृपा करतम हरी हरय	श्री कृष्ण दास	60

र

राम लीला चॉन्य वनय	श्री ठाकुर जी	59
रामन सिद्ध कॅर्य मॉन्य मनु कामन	श्री हलधर जी	118
रादे श्याम हरे कृष्ण	श्री कृष्ण दास	128

ल

लालु लगयो बालु बावस	श्री आनन्द जी	57
लथ लॉयिथ संसारस	श्री कृष्ण दास	211
ललुवान सिरि हक ज़ेरि ज़ेरि हेरि ब्वन	श्री आफताब जी	136
लुयि दारि त्रोपरिथ सपद मावरयो	श्री लसु शाह जी	120
लोलु बुलबुल आव यॅन्नकॉल्य व्यसिये	श्री परमानन्द जी	263

व

वुछिथ गत चॉन्य देवागथ	मा. ज़िन्दु कौल	160
वन्दयो वुन्य बु पादन	श्री प्रकाश राम	198
व्यनथ बोजुम चु राधा कृष्णन	श्री कृष्ण दास	56
वॅलिव पूजा करव नेष्कल	श्री कृष्ण दास	114
वंदे शिला त्वम् ईश्वरीय श्री शारिका नमः	श्री कृष्ण दास	240
वरदया कर दया ही दया सागर	श्री परमानन्द जी	256
वयक्वंठ बन्याव बिंदराबनसुय	श्री परमानन्द जी	262

श

शिव शंकर बव बय हर	श्री गोविंद जी	222
शिव नाथस प्यठ सपजुक सॅतिये	श्री कृष्ण दास	148
श्यामु सुंदर बेह सुन्दर जाये	श्री कृष्ण दास	88
शुब म्वख हाव मैति अमृत चावतम	श्री परमानन्द जी	147
शरीर ज़ोलम अमि मदनवारन	श्री रॉहिमस जी	176
श्री निराकारय त्रिभुवन सारय	श्री कृष्ण दास	192
श्री परमानन्द जियनि शिवलग्न	श्री परमानन्द जी	190
श्री राज़ु रॉज़ीश्वरियय शरन आमुत्य छिय	श्री कृष्ण दास	52
श्यामु स्वंदर जी लालु बना	श्री परमानन्द जी	65
श्री राज़ी स्तोत्रम्		109
श्री श्याम स्वंदर म्वरली मनोहर	श्री परमानन्द जी	245
श्याम स्वंदर मुरली वोलुय	श्री परमानन्द जी	246

स

सिरियि वुजुनोवुम चंद्रम सोवुम	श्री कृष्ण दास	199
सुन्दरो स्वन संलद गरय	अज्ञात	137
संसारु सागरस सुम दिथ तरु अपोर	श्री हलधर जी	35
सखियव रूठम हॉय रूठम हॉय	अरिनि माल	49
स्मरणि चानि पाप सॉरी हॉरी	श्री कृष्ण दास	201
स्मरण पनुन्य दिन्नम	मा. ज़िन्दु कौल	162
सतज्ञन बन मन कर कैलासुय	श्री कृष्ण दास	177
सन्यास बे परवायि मसतानय	मा. ज़िन्दु कौल	170
स्वख शब्द दर्शन चाने	श्री आनन्द जी	51
स्वकलि निष्कल द्रायिसो कले	श्री परमानन्द जी	102
संकट कट अथु रठ दयालो	श्री कृष्ण दास	123

ह

हीमालु पर्वतने गरि ज्ञायक	श्री कृष्ण दास	204
होश दिम लगयो पम्पोश पादन	श्री कृष्ण दास	75
हे प्रभु, अग्यान कौसिथ	श्री कृष्ण दास	184
हे कृष्ण दया छय ना गछन	श्री कीशव काक	39
हे दय, बोझ कनय	श्री विष्णु दास जी	80
हे दयालु छुस बु चंचल लोलो	श्री विष्णु दास	55
हे दयि, बोझ म्योन्य लोलु नाद	श्री विष्णु दास	78
हतो ज़ीवो तसुंज थव कल	श्री नीलकंठ जी	207
हशाम ज़ीवो देह दोह छुनु शान	श्री विष्णु दास जी	84
हरे राम टाठि मेत्रय म्यानि	श्री राज काक	44
हे दयावानु मे ह्यव चोर त्रे कोताह प्रारे	श्री कृष्ण दास	71
हे निरंजन कष्ट भंजन भक्त रंजन हे दयाल	श्री ठोकर जी	135
हा कृष्ण मनसा वॉसी कौसी यादव नन्दन	श्री नीलकंठ जी	152

न यत्रास्ति पथव्याप्ती र्थेऽबहिष्कृतः^{११}। (कश्मीर प्रदेश का कोई भी ऐसा स्थान नहीं है जहाँ पर तीर्थ नहीं है)

कश्मीर देश स्वयं माँ भगवती का स्वरूप है। यह बात स्वयं भगवान श्री कृष्ण ने कश्मीर में आकर, राजा दामोदर की विधवा रानी यशोवती को कश्मीर के राजसिंहासन पर बिठाते समय इस प्रकार से कही थी 'कश्मीरः पार्वती तंत्र'¹⁰ (कश्मीर की धरती स्वयं पार्वती का स्वरूप है) धर्म और धार्मिक अनुष्ठानों की दृष्टि से कश्मीर शक्ति धर्म का अनुयायी हराप्पा की संस्कृति के साथ-साथ ही रहा है। शक्ति संप्रदाय की मान्यता है कि यह सारा ब्रह्माण्ड मात्र एक अपार सक्रिय-चेतना का प्रवाह है¹¹ (The entire Cosmic-universe is creative-conscious flow) श्री अभिनव गुप्त¹² ने अपने तंत्रालोक में इस अपार की महाशक्ति को द्वादशकाली के प्रतीक के रूप में इसका विभाजन 360 अंशो या डिग्रियों में आकर इसके स्वरूप का अपार वर्णन किया है जैसे : द्वादशकाली का स्वरूप 12 की गिनती है। प्रतिपद्य (एक) से अमावस्या तक 15 की गिनती बनती है और फिर प्रतिपद्य से पूर्णिमा तक 15 की गिनती बनती है इस प्रकार से $15+15=30 \times 12=3600$ अंश इस प्रकार हमारी पृथ्वी की अंश-रेखा बनती है। यही द्वादशकाली प्रथमतः सृष्टि (creation) स्थिति (Preservation) और संहार (Distruction) करती रहती है, (क)। सृष्टि + सृष्टि, ॥ सृष्टि +

9. कल्हण : राजतरंगिणी 138

10. कल्हणः राजतरंगिणी 1.72

11. शिवदृष्टि-17

12. अभिनवगुप्तपाद : तंत्रलोक, चोथा अहिक

स्थिति, ॥ सृष्टि + संहार (ख) । स्थिति + सृष्टि, ॥ स्थिति + स्थिति, ॥ स्थिति + संहार ।

ग) । संहार + संहार, । संहार + सृष्टि, ॥ संहार + स्थिति ।

इस प्रकार से काल-चक्र का बनना और बिगड़ना निरन्तर चलता रहता है। कश्मीर का प्राचीनतम धर्म इसी दर्शन पर आधारित है। जो कालान्तर में वैदिक धर्म के साथ मिलकर एक नये स्वरूप में उभर आया ।

शारिका पर्वत पर अवस्थित चक्रेश्वरी महायंत्र का सिद्धपीठ ब्रह्माण्ड-व्यापी शक्ति (Cosmic-universal energy) का एक स्वयंभूः (Automatic) स्वरूप है। इस महाशक्ति पीठ के चारों ओर आठ भैरवों का निवास है। भैरव का सामान्य अर्थ है :- 'भ' भरण (सृष्टि या creation) 'र' रमण (स्थिति या Preservation) और 'व' वमन (संहार या Destruction) । भैरवों की संख्या आठ हैं, इस का तात्पर्य है: पूर्व, पश्चिम, दक्षिण और उत्तर तथा चार कोण, जैसे पूर्वोत्तर कोण, पश्चिमोत्तर कोण, वगैरा। इस तरह इनकी गिनती आठ बनती है। इन आठों भैरवों में पूर्णराज भैरव सदा चक्रेश्वरी महायंत्र के सामने रहकर लगातार प्रवाहित-जल से अभिषेक करता रहता है। चक्रेश्वरी महायंत्र के बायें तरफ दक्षिण दिशा में काल शक्ति महाकाली का निवास रहता है और उत्तर में महायंत्र के दाये तरफ शारिका अर्थात् विकास और समृद्धि देवी का निवास रहता है और पूर्व में सिद्धलक्ष्मी का निवास है। शीतला आदि देवियाँ भी पीठ के आस पास रहती है।¹³ चक्रेश्वरी यंत्र के पास दक्षिण के द्वार पर गणनायक गणपति का वास

13. यामिनी तंत्र

पौराणिक कथा के आधार पर मां शारिका (मैना, कश्मीरी हॉर) का स्वरूप धारण करके अपनी चोंच से मेरु पहाड़ के एक बड़े खण्ड को उठाकर उस भयंकर राक्षस के उपर फेंका जिसके फलस्वरूप वह राक्षस वही नीचे दबकर मर गया। शारिका महात्मय और सोमदेव के कथा सरित सागर में इस प्रकार की कथाएँ मिलती हैं। नीलमत पुराण (200 B.C.) में शारिका पर्वत के चक्रेश्वरी महाश्रीयंत्र का ऐतिहासिक साक्ष्य इस प्रकार से मिलता है:-

आषाढ नवमी चैव यशोविजयकांक्षमि ।

पूजनीया महाशक्ति चक्रेशयंत्र वासिनी । ॥ १७

(यश और विजय की कांक्षा रखने वाले मनुष्यों को आषाढ शुक्लपक्ष नवमी (9th day of Bright fort naght of Ashadha) को चक्रेश्वरी महायंत्र की पूजा करनी चाहिए।

नौलमत पुराण से लेकर कश्मीर के सब ही संस्कृत इतिहासकारों ने शारिका पर्वत और चक्रेश्वरी महायंत्र का साक्ष्य प्रस्तुत किया है। इस में कल्हण, जोनराज, श्रीवर और शुक विशेष उल्लेखनीय है। प्रवरसेन द्वितीय के समय कल्हण लिखते हैं:-

‘श्री पर्वते पाशुपतव्रतिवे षस्तमागतम्’¹⁸। (उसी समय श्री पर्वत अर्थात् शारिका पर्वत के निवासी तथा पाशुपत मत के व्रत के व्रती अश्वपाद नाम के सिद्ध ने अपने मेहमान राजपुत्र प्रवरसेन को भोजन के लिए कन्दमूल देते हुए इस प्रकार कहा)

15. शारिका महात्मय

16. सोमदेवः कथासरिस सागर 73, 109

17. नीलमत पुराण

18. कल्हणः राजतरंगिणी 3267

(इस प्रकार रणादित्य और उसकी महारानी ने रणारम्भा स्वामी तथा रणारम्भा देव नाम के दो मन्दिर बनवाये और पाशुपत संप्रदाय के साधकों के लिए प्रधुम्न शिखर पर एक मठ का निर्माण किया)

चक्रेश्वरी सिद्ध पीठ प्राचीनतम नाम 'प्रधुम्न-पीठ' रहा है। जैसे 'प्रधुम्नपीठे स्थिता'²⁴ (प्राधुम्नपीठ पर ठहरी हुई)। पंचस्तवी में भी चक्रेश्वरी शक्तिपीठ का नाम 'प्रधुम्नसीम्नि' ही मिलता है।²⁵ कई टीकाकार भ्रम के कारण 'प्रधुम्न' का अर्थ कामदेव या भगवान श्री कृष्ण के पोते अनिरुद्ध से जोड़ते हैं जो सरासर गलत हैं क्योंकि शाक्तमत श्री कृष्ण से भी प्राचीन रहा है। इस तथ्य को गीता जी में भगवान श्री कृष्ण स्वयं 'मम योनि महत्ब्रह्म' (मेरी शाक्त योनि ही विशाल ब्रह्म है) कहकर स्वीकारते हैं। वास्तव में संस्कृत भाषा में 'धुम्नम' का अर्थ है- शक्ति, चेतना, सत्ता या बहूमूल्य संपत्ति (Energy, Strength, power valuable Property) 'धुम्न' के आगे का 'प्र' उपसर्ग (Preflex) है। संस्कृत में 'प्र' का प्रयोग उत्कर्ष (Exaltation) के लिए होता है जैसे:- ताप (आंच) प्र + ताप = प्रताप (विशेष आंच) इस प्रकार से 'प्रधुम्न' का अर्थ है 'ब्रह्माण्ड व्यापी अपार चेतना' (Infinite cosmic conscious energy)। यह एक अदभुत आश्चर्य का विषय है कि कश्मीर के इतिहासकारों ने शक्ति चक्र चक्रेश्वरी सिद्धपीठ का नाम 'प्रधुम्न' ही प्रस्तुत किया है। कल्हण²⁶ ने प्रधुम्न मूर्धनि तथा प्रधुम्नपीठ,

24. शक्तितंत्र

25. पंचस्तवी : चर्चस्तत्र 2.14

26. कल्हण: राजतरंगिणी 3.460, 7.1616

27. जोनराज: राजतरंगिणी 589

द्वादशकोण, तथा षोडशकोण गोलाकार वलयों की तीन जोड़ियां इसके अतिरिक्त दक्षिण में गणेश जी का सिर, तथा स्थानों पै मैना (हॉर) की आकृतियां हैं। इसके अतिरिक्त बीच-बीच में मोहन-जी-दारो के आकार के अक्षर और ब्राह्मो लिपि के अक्षर और सरग उकेरे या खदे (Carved) हुए मिलते हैं। आश्चर्य तो इस बात का है कि प्रत्येक खींची हुई रेखा एक तो स्पष्ट और सीधी खींची हुई है और प्रत्येक बिन्दु पर कोण का निर्माण करती है। एक व्यवस्थित श्रीयंत्र, जैसा कि बंगाल आसाम, केरल, कर्नाटक और मध्य भारत के शाक्त पीठों में मिलता है, कश्मीर के प्रधुम्नपीठ का चक्रेश्वरी यंत्र उनसे यथार्थ में भिन्न है। हमें स्याम से इस बात को नये सिरे से समझना है कि कहीं किसी अन्धकार के युग में हमारी अतीत की परंपरा लुप्त हुई है। वर्तमान प्रधुम्नपीठ के चक्रेश्वरी सिद्ध पीठ को हम शारिका भगवती का स्थान समझ बैठे हैं किन्तु सबसे उलझा हुआ प्रश्न यह उभर आता है कि एक ही पीठ पर दो शारिकाओं का अस्तित्व सम्भव नहीं है। सही बात तो यह है कि प्रधुम्नसिद्ध पीठ से उत्तर कर जब हम उत्तर दिशा की ओर परिक्रमा के लिए आगे की ओर बढ़ते हैं तो सामने दायें तरफ पहाड़ की तलहटी के ऊपर 'हांरी' भगवती का पावन स्थान मिलता है। कश्मीरी भाषा में 'श' ध्वनि में प्रायः बदलती है इस भाषावैज्ञानिक (Linguistics) नियम के आधार पर संस्कृत 'शारी' या 'शारिका' का स्वरूप हारी या हॉरी या हारिका हुआ है। अतः प्रथमतः हमें यह समझना है कि प्रधुम्नपीठ का स्थान चक्रेश्वरी यंत्र का स्थान है और शारिका का स्थान 'हॉरी' का स्थान है। वास्तव में अगर हम फिर से इस बात को समझे कि पर्वत का नाम शारिका पर्वत है और वह इतिहास से स्वीकृत भी है। रहा प्रश्न

शाक्तपीठ चक्रेश्वर यंत्र का, वह स्थान किसी भी देवी से संबन्धित न होकर केवल प्रधुम्नपीठ है और प्रधुम्न का अर्थ है ब्रह्माण्ड की अपार सक्रिय-चेतना शक्ति और चक्रेश्वरी पीठ इसी का शक्ति स्रोत है।

होराषटमी संपत्तिषुभ संवत् 5059
श्रीनगर-कश्मीर (भारत)

सन्तों की चरण धूलि
डॉ. त्रिलोकि नाथ गंजू
82 सत्यु श्रीनगर।



(क)

श्री गणेशाय नमः

आदि शक्ति हुंदिस टॉठिस संतानसुय ।

महा गणपतसुय जय जयकार ।।

त्रि नेथुर दौरी छुख चु एक दन्तो, ड्यकि छिय शूबान चन्द्रम तारु ।

गजुम्वख बालु चन्द्र लम्भूदरसुय, महा गणपतसुय जय जयकार ।।

सेद्धी हुंदि दातु छुख चु विनायको, वल्लभा सुत्य ह्यथ गगुर वाहन ।

दीवन हुंदिसुय च़ेय सेदि दातसुय, महा गणपतसुय जय जयकार ।।



नमः शिवाय

तारि छुस गोमुत तार दिम बवुसर ।

शंकरु यियनय आर म्योनय ।।

१ यावुन ह्यथ गोम यिथु प्योम बुजर,

सोपुन ज़न ओस ल्वकुचार म्योनय ।

न्यथु हाव शिव रूप मंज च्यथ मन्दुर ।।

शंकरु यियनय आर म्योनय ।।० ।।

२ माया ज़ाल रज़ु रठ च़ठ अकि दुर,

लबि कनि थव परिवार म्योनय ।

अन्तर म्वख रोज़ सुख बर द्वख हरु ।।

शंकरु यियनय आर म्योनय ।।० ।।

- ३ वॉराग मछु ज़ोरु सुत्य त्याग खंजर,
देह अभिमान मद मार म्योनुय।
जिन्दु थव वॉसि सुत्य स्यज़र तु पज़र॥
शंकरु यियनय आर म्योनुय॥०॥
- ४ वासनायि म्यानि मंज़ बस प्रकृति पर,
पछि सोस थव आचार म्योनुय।
लछि प्यठ प्योमुत छुस करतम खर॥
शंकरु यियनय आर म्योनुय॥०॥
- ५ क्या करु सारि वॉसि कोर मे गरु गरु,
कस अँकिस वोत उपकार म्योनुय।
नशनकि वेलु पशनुय बैयि अरसरु॥
शंकरु यियनय आर म्योनुय॥०॥
- ६ वासनायि अरुखुरिस करुनाव अरु,
चन्दुन कर दिवदार म्योनुय।
यारि ह्यु सब्ज कर अदु वन्दस दर॥
शंकरु यियनय आर म्योनुय॥०॥
- ७ अन्नु दातु ज़ॉन्य मंज़ ख्यनु च्यनु व्वदरु,
सु आहार पूर्ण व्यचार म्योनुय।
असत्त्वथ च़ेय कुन करु शांती श्रुक्य पर॥
शंकरु यियनय आर म्योनुय॥०॥
- ८ सासु बज़ु उलट रायि कोह ज़न गँयि खरु,
गासु कचि ह्यु व्वस्तार म्योनुय।
दय छुख तु लय कर निर्णय नयि स्वरु॥
शंकरु यियनय आर म्योनुय॥०॥

- ९ प्राख जन्मचि खँडिथुय आदि गँयि खरु,
अति क्या पकि गाटुजार म्योनुय ।
थोद तुल तु पथर प्योमुत प्यठु दुरु ॥
शंकरु यियनय आर म्योनुय ॥०॥
- १० प्रारब्ध फल बूगनुय छुम तु क्या करु,
पोत फेरनस छुन वार म्योनुय ।
प्रानि वैर मंज कड नवि धैर्य सुत्य दुरु ॥
शंकरु यियनय आर म्योनुय ॥०॥
- ११ दोह आयि छोय दितु अन्दर तु न्यबर,
अज ननि कुस आसि यार म्योनुय ।
परदु थव क्वंगु पोश हरदु क्यथ गछ बरु ॥
शंकरु यियनय आर म्योनुय ॥०॥
- १२ छ्योट तु श्रूच मतु वुछतु अछ तु म्योनुय गरु,
शिव लूक ह्यु बनि द्वार म्योनुय ।
यमदूत खोचन सुत्य अभय वरु ॥
शंकरु यियनय आर म्योनुय ॥०॥
- १३ छ्येट वासना म्योन्य छल निर्मल सरु,
काम क्रूद चमार मार म्योनुय ।
ब्यल पँतर सुत्य वातुज जन वर हरु ॥
शंकरु यियनय आर म्योनुय ॥०॥
- १४ विचित्र पूज च्यत नेत्र कमल करु,
यन्द्रेय शुत्रू रूग हार म्योनुय ।
ब्यल पँतर सुत्य प्रदान करनेश्वरु ॥
शंकरु यियनय आर म्योनुय ॥०॥

- १५ पाद थँक्य पँक्य पँक्य नाद करतु अन्दर,
खलवत बनि दरबार म्योनुर्य।
जगतुचि रक्षायि हुंज व्यनथा करु॥
शंकरु यियनय आर म्योनुर्य॥०॥
- १६ व्वपकारु सुत्य पनुनुर्य छुख चु व्वपर,
रुचि वति लागि रोजगार म्योनुर्य।
दातु नाव कडुनावतम जगत ईश्वरु॥
शंकरु यियनय आर म्योनुर्य॥०॥
- १७ कॉम कार करनि आस गम कास दम बरु,
यार छा यि ब्रम संसार म्योनुर्य।
हे अगम अपार हे दिग्मबर हरु॥
शंकरु यियनय आर म्योनुर्य॥०॥
- १८ लूक हुंजि ज़ेवि परनाव परात परात,
परुनय महिम्ना-पार म्योनुर्य।
पुष्प दन्त आचारि बन नन्दुकीश्वरु॥
शंकरु यियनय आर म्योनुर्य॥०॥
- १९ सत् संग रंग दिम राय म्वख बंग परु,
द्यानु सुत्य प्रान सन्दार म्योनुर्य।
येति तति शूब अन युथ नु वति प्यठ मरु॥
शंकरु यियनय आर म्योनुर्य॥०॥
- २० अज्ञान काठ ज़ॉलिथ भस्माधरु,
तीजु रूप थव आकार म्योनुर्य।
देह कतरिस, देह कास बास भास्करु॥
शंकरु यियनय आर म्योनुर्य॥०॥

- २१ च्यतु पीडा कास नतु येति क्या करु,
मृत विजि छांड हितकार म्योनुर।
ही इष्टदीव भ्रष्ट प्रकृत थव मु ज़रु॥
शंकरु यियनय आर म्योनुर॥०॥
- २२ पाप ज़ाल अग्नि नेत्र सुत्य जटादरु,
चुय छुख व्यग्न हर्तार म्योनुर।
न्यवरथ दिम अँछ क्याजि लगनम दरु॥
शंकरु यियनय आर म्योनुर॥०॥
- २३ शुरय तु बाँच बुछ्य बुछ्य ओश त्रावान जरु,
कुस वदुन स्यद करि कार म्योनुर।
यिनु त्युथ मरु ध्यानु निश गछु व्यसमरु॥
शंकरु यियनय आर म्योनुर॥०॥
- २४ वाँसि हुंघ करतूत ब्रोंठकनि गँयि खरु,
मृत विजि ती निवार म्योनुर।
मनि यिम परम स्वख दिम परमेश्वरु॥
शंकरु यियनय आर म्योनुर॥०॥
- २५ हे महेश जगत ईश हे विशेष ईश्वरु,
छेति कीश बोज़ ज़ारु पार म्योनुर।
दीशु दीशु फिर मु, वातनाव पनुनुय गरु॥
शंकरु यियनय आर म्योनुर॥०॥
- २६ मोह मस च्यथ छुस दूशि लद फिर मु थरु,
आशतोश केंछा यार म्योनुर।
'कृष्णस' मोक्ष प्रावुनाव अमरीश्वरु॥
शंकरु यियनय आर म्योनुर॥०॥

लालो अज़वलो माल्युन म्योन

फवलुवनि सोंतु छुय म्योन सालो ।

लालो अज़ वलो माल्युन म्योन ।।

आरवलि आरुक्कं गँयि कमि हालो, च़ालि च़ालि ओश दारि हारान छस ।
 यँचकाल गव व्वन्य प्रारु कूत कालो, लालो अज़वलो माल्युन म्योन ।।
 यँम्बरज़ल लँजिमुच बोंबरुनि ज़ालो, प्यालु ह्यथ मसवल प्रारान छय ।
 दूरिरुक दाग दिलस ह्यथ छुय गुलालो, लालो अज़वलो माल्युन म्योन ।।
 मायि चानि सुलि मुलि फवजि हीमालो, लयि सोस यियि कर दियि दर्शुन ।
 द्रुय चॉन्य छम व्वन्य यूत नो बु च़ालो, लालो अज़वलो माल्युन म्योन ।।
 रोशु रोशु करुहय पोशन मालो, रोशि मति गोय ना गोशन म्योन ।
 रोशि मा पोशि नूल दोह गछि व्वबालो, लालो अज़वलो माल्युन म्योन ।।
 आदनुक याद पाव वादु मो डालो, नाद लोय कुकिलव गोविंदु गू ।
 आदन बाजि म्यानि त्राव शुरय ख्यालो, लालो अज़वलो माल्युन म्योन ।।
 बॉल्य वनतु यियिना नॉल्य छस मालो, वॉल्य छिस कनुनय ग्रायि मारान ।
 कॉल्य मा रावव कस क्या मलालो, लालो अज़वलो माल्युन म्योन ।।
 साक़ुया प्यालु चाव माला मालो, युथ नसॉ बाकी रोज़ी ग्राव ।
 मस च्यथ रसु रसु बन मतवालो, लालो अज़वलो माल्युन म्योन ।।
 सासु मंजु खास सुय रटुहोन नालो, सास मलि सन्यास मेलि गूपालो ।
 'भास्कर सास' छुय नॉली नालो, लालो अज़वलो माल्युन म्योन ।।



शारिका दीवी

- १ मे सोंगो पानु दर्शुन चोन बन्यम ना शारिका दीवी ।
मनस मंज राग चोनय वुनि सन्यम ना शारिका दीवी ।।
- २ मे पैयि ना मॉज्य पायस मन, बु करुहय चॉन्य आरादन ।
मे अँन्दरी चानि लोलुक श्रेह, गन्यम ना शारिका दीवी ।।
- ३ यि दिल म्योन ज़न छु क्रेन्खा अख, लॅण्थि क्रेहन्यर छु अथ प्यठ सख ।
अक्षर अथ पनुनि भख्ती हुंद खनख ना शारिका दीवी ।।
- ४ बु छुस ना क्रूर अज्ञॉनी, स्यठा मुरखा तु अबिमॉनी ।
मे माता गाश ज्ञानुक सुय अन्यम ना शारिका दीवी ।।
- ५ लगान कोताह मोदुर दुनिया, यि खॉली आसवुन स्वप्ना ।
मे सोरुय सिर ज़्यनुक मरनुक नन्यम ना शारिका दीवी ।।
- ६ दिवान भ्रम आयि मोह माया, द्या करिना महा माया ।
मे संसारुच यि मोह माया छैन्यम ना शारिका दीवी ।।
- ७ बु 'प्रेमी' छुस तसुन्द अबिलाश, करेम ना मॉज्य पूर्न आश ।
व्वपाया भवुसरस तरनुक करेम ना शारिका दीवी ।।



वाँनी वनहारि लोलो

होशि पोशि नूल थव कन ।

वाँणी वन हारि लोलो ।।

રાધા કૃષ્ણ કૃષ્ણ વન, લોલનિ અશિ દારિ લોલો ।

रंग किन्य तस ह्युव बन, वॉनी वन हारि लोलो ।।

ग्वड कर मन बिंदराबन अद नेर बॅरूय दारि लोलो ।

श्याम रूप वृद्ध हन हन, वॉनी वन हारि लोलो ।।

चाव वीद कामदीनन थन भख्ती हंज़ि च़डवारि लोलो ।

च्यथ बनि आनन्द गण, वॉनी वन हारि लोलो ।।

तती ब्रच गूपियन कोरमुत छु मन तारि लोलो ।

व्यापक वासुदीवन, वॉनी वन हारि लोलो ।।

प्रेयम सत्य कर मन बिन्द्राबन, नाद लायस प्यारि लोलो ।

भरखी भाव अख बनि दून, वॉनी वन हारि लोलो ।।

ख्वनि जसुदा छस ललवन, मूह पूतनायि मारि लोलो ।

येछि बबि द्वद चैन सतजन, वॉनी वन हारि लोलो ।।

भरखती मंज बन अर्जन रथबान सुय लारि लोलो ।

किसि प्यठ छुस गोवर्धन, वॉनी वन हारि लोलो ।।

मन वाजे कृष्ण नाव खन, धीर अल्मास तारि लोलो ।

गलि पानय क्रुद दर्योधन, वॉनी वन हारि लोलो ।।

हमसाये कंसस मारन सूक्ष्म दारि तलवारि लोलो ।

माजि यियम राज़ तस ह्य ज़न, वॉनी वन हारि लोलो ।।

खँट्य खँट्य छु नोन बासन अँन्दरिमि छेपि छारि लोलो ।
 च्यथु वुजुमल गटु कासन, वॉनी वन हारि लोलो ॥
 वृन्दा वनकुय वन मन म्योन उच्चारि लोलो ।
 सब्जार ज़न लगि च़रनन, वॉनी वन हारि लोलो ॥
 दास येति रास खेलन, व्यास नारुद ति लारि लोलो ॥
 बोलुनावुन शुकदीव ज़न, वॉनी वन हारि लोलो ॥
 यूगियव बूगिथ बूगन दोपहस ब्रह्मचारि लोलो ।
 निर्मल निष्कल निरगुन, वॉनी वनहारि लोलो ॥
 'कृष्णस' टोठ विशनारपन नतु येति क्या लारि लोलो ।
 जॉन्य मंज़ तस ति सूहम अन, वॉनी वन हारि लोलो ॥



ॐ महा रॉज्ञनाय नमः

व्यज्ञान मूर्ति राज्ञा ज्योती, सुज्ञान आश्राण चे प्रज्ञावान ।
 सत् चित् आनन्द गण उदैती, कोटी सूर्यन हुंद चे प्रकाश ॥
 सुराट बावु किन्य फॅलेमुचुय, विराट रूपस बाह्य अंतर ।
 सम्राट शक्ति सम्वित ज्योति, तत् त्वमसि पद चोन विकास ॥
 पूर्ण पूर्णातीत सम्वित ज्योति, भेदा भेद पर शिवाक्षर ।
 खन्डाखंड अवतरणन भगवती, सत् सौ प्रकाश ॥



टोठ्योम दय मनस

अन अपीक्षत प्रावनावतम पूर्णानन्द मे मनस ।

टोठि तस विन केह नु ज्ञानुन, गव ज़ि टोठ्योम दय मनस ॥

१ पॉन्य पानय ज्ञान ज्ञानिहे मानि बूज बुजमानि हे,
क्युथ तु क्या, कति तति व्यपान कवु नवि हे तु प्रानि हे ।
बोजिनय बूजिथ तु रोजिनय कँच वाय वॅन्य नय मनस ॥
टोठ तस विन केह नु ज्ञानुन, गव ज़ि टोठ्योम दय मनस ॥ ० ॥

२ बोग मुक्ता क्षेत्र क्षेत्रज्ञ शिव शख्तु यिय वौनुय,
शम तु दम तय भाव भावना भख्तु मुख्ती यिय वौनुय ।
चक्रवरतस तु कंगालस वयिवुन यिय वयि मनस ॥
टोठि तस विन केह नु ज्ञानुन गव ज़ि टोठ्योम दय मनस ॥ ० ॥

३ ब्रह्म निर्वान शब्द प्रकाश अन्दरु न्यबर अछरी,
होल तु स्योद शोज्रिथ श्रोचव सुत्य वारु पॉठ्यन वाशि रोस ।
दगि लोलुच लगि हे क्या रगि रगि यियि पय मनस ॥
टोठि तस विन केह नु ज्ञानुन गव ज़ि टोठ्योम दय मनस ॥ ० ॥

४ जग छु संग्रामा तु मन छुय राजु अमिकुय ज़ेन व्वन्य,
वासना न्यरवासना ह्यत अप्रमानस मेनवुन ।
छुन पोत फेरुवुन वनु हा कोताह ज़ि लय मनस ॥
टोठि तस विन केह नु ज्ञानुन गव ज़ि टोठ्योम दय मनस ॥ ० ॥

५ आईनस मंज वुछतु केह मा वुछतु ऑनय रोस्तुय,
ऑन मंजु मा म्वख छु खटान, कांह ति ऑनिसुय रोस्तुय ।
आस मो ओन कॉसिथ, गव खास कॉसिन खय मनस ।।
टोठ तस विन केह नु ज्ञानुन गव ज़ि टोठ्योम दय मनस ।० ।

६ मन व्यचारव तय मदारव सूत्य अनुन होशसुय,
मोत लोत लोत होश अनुन पज़ि तिय मनोशसुय ।
नतु क्या सुय पलजु वुनुय, आसि ख्यनु ख्यनु प्रिय मनस ।।
टोठि तस विन केह नु ज्ञानुन गव ज़ि टोठ्योम दय मनस ।० ।

७ शल्प शल्पत सोर कलपित कल्प कल्पांतन लगुन,
पज़ि दुय त्रावन्य छु प्रावुन युस यि रावन अथि युन ।
व्यापि कुस तस व्यापकस पुरुशार्थ पोश हा बुय मनस ।।
टोठि तस विन केह नु ज्ञानुन गव ज़ि टोठ्योम दय मनस ।० ।

८ ब्रांत तय ब्रम ज़ोनमुत संसार प्राँन्यव यिय वौनुख,
सोंथ हरुद पनुन तु परुद दफतु तिम यिम मा चु छुख ।
वोन्तु छा यथ भवसरस रंगु रंग थर चायि मनस ।।
टोठि तस विन केह नु ज्ञानुन गव ज़ि टोठ्योम दय मनस ।० ।

९ साद सन्त छिनु अंत ज्ञानान आदि यस छुनु आसुवुन,
श्रूच हूँदै ऑगन्यायि सूत्यन एक छु अनेक बासुवुन ।
सारिनुय सुय ज्ञाननुय छुय करतु यिय न्यरनय मनस ।।
टोठि तस विन केह नु ज्ञानुन गव ज़ि टोठ्योम दय मनस ।० ।

- १० पान छुनु करता अकरता बाव अबावय बोरमुतुय,
रावुराँविथ पान पनुनुय होश बोरमुतुय पोरमुतुय।
तैलि पेयस करमुच यि क्रय ख्यति यैलि चलेस रेय मनस॥
टोठि तस विन केँह नु ज्ञानुन गव ज़ि टोठ्योम दय मनस॥०॥
- ११ आस 'परमानन्द' प्राँविथ, परमानन्द ब्योन मु रोज़,
साँरिसुय मंज साँरिसुय ह्यु पार सुय वाति नोन मु रोज़।
यियि चीतन रूप प्राँविथ कति विखेफ ओर लय मनस॥
टोठि तस विन केँह नु ज्ञानुन गव ज़ि टोठ्योम दय मनस॥०॥



सोद्य वॉनिन्य पॉठ्य हावतम रूप

- १ भूल बालु बालकन सुत्य खेलुनावतम,
बालक अवस्था प्रावनावतम ।
ज्ञान करुनावतम पानु परजुनावतम ॥
सोद्य वॉनिन्य पॉठ्य हावतम रूप ॥० ॥
- २ कठिने भवसुर छंठ वायिनावतम,
मुंह पोन्थ वोतुम हँटिसुय तान्य ।
लटिसुय बृषभस थफ करुनावतम ॥
सोद्य वॉनिन्य पॉठ्य हावतम रूप ॥० ॥
- ३ थज़रय प्यठ अख नज़रा त्रावतम,
शेशरम नाग मे थावतम नेब ।
वनि थितु अनिरुकि सनिरय मु रावतम ॥
सोद्य वॉनिन्य पॉठ्य हावतम रूप ॥० ॥

४ ब्रह्मण जन्म दिथ मतु मन्दुछावतम,
नबु प्यठु ब्वन मतु द्यावतम दब।
अमरनाथ अमर बनावतम॥

सोद्य वॉनिन्य पॉठ्य हावतम रूप॥०॥

५ दासन हुंद दासा गँजुरावतम,
मतु मँशिरावतम पननी ज्ञान।
येति छुख पानय तोत वातुनावतम॥

सोद्य वॉनिन्य पॉठ्य हावतम रूप॥०॥

६ अज्ञपा जप यज्ञि ज्यूत्य प्रजुलावतम,
होदु शीश ज्ञन मोचरावतम मे।
ही महेश छेति केशि मतु दिशरावतम॥

सोद्य वॉनिन्य पॉठ्य हावतम रूप॥०॥

७ सत् चित् आनन्द अमृत चावतम,
नित्य बासुनावतम सू हम सू।
ॐ शेव शम्भू शब्द शूबरावतम॥

सोद्य वॉनिन्य पॉठ्य हावतम रूप॥०॥

८ मुंह मायायि सुत्य मतु तंबुलावतम,
सतुची कथ पावुनावतम याद।
च्यतु कुय चेनुन न्यथ चेनुनावतम॥

सोद्य वॉनिन्य पॉठ्य हावतम रूप॥०॥

९ सतु के न्यरनय पयि पकुनावतम,
दयि पनुने नयि हावतम वथ।
नाव छुम 'कृष्ण' शिव भाव बँडरावतम॥

सोद्य वॉनिन्य पॉठ्य हावतम रूप॥०॥

दास कव छुस उदास अनाथ

आशि चानि बरतल आस अनाथ ।

दास कव छुस उदास अनाथ ॥

- १ त्रैयि तापु होखमुत प्रेमुक स्नेह,
तैह छम नु चैय व्वन्य ख्यमु ना वेह ।
त्रेशि त्रेशि ज़न्मु ज़न्मु पेपास अनाथ ॥

दास कव छुस उदास अनाथ ॥० ॥

- २ यन्द्रेय हंदुराविथ छुम मन,
सँन्दुरिथ लोलु रेह छुम नु ह्यवान ।
दौदुमुत ख्यमु कहि कास अनाथ ॥

दास कव छुस उदास अनाथ ॥० ॥

- ३ होन्यन अथि प्योमुत शाल ज़न,
हाचि सुत्य रूदुम नु नम न्याल नोन ।
कालु ग्वफि सुह सुंदि आस अनाथ ॥

दास कव छुस उदास अनाथ ॥० ॥

- ४ सासु क्रूह छँडिथ आशावान,
अथ छुन फीरय फीरय यूरय यिवान ।
लबु तवु देव बरु न्यास अनाथ ॥

दास कव छुस उदास अनाथ ॥० ॥

५ होशव बो वोंचमुत रोशन छुय,
वनु क्या हाल म्योन रोशन छुय।
प्योमुत चानि आम खास अनाथ।।
दास कवु छुस उदास अनाथ।।०।।

६ पज़ि यी तिय करुनावतु मै,
ज्यथ ज्यथ मतु मरुनावतु मै।
'परमानन्द' यूग अब्यास अनाथ।।
दास कवु छुस उदास अनाथ।।०।।



सत् ग्वरु मोक्षदायक रामो

परमु दामुक मै चावतम दामो।
सत् ग्वरु मोक्षदायक रामो।।

१ त्रैयि ताप कामनायि आमतावय,
व्यसुरावान छुम बख्ती बावय।
फिरुवान त्रेशना गामु गामो।।
सत् ग्वरु मोक्षदायक रामो।।०।।

२ गौलिथ काम क्रूद ज़ौलिथ तम,
सार द्राव पथकुन कुनुय सू हम।
अनुग्रैह चानि सुत्य गाश आमो।।
सत् ग्वरु मोक्षदायक रामो।।०।।

- ३ जिंदु युस मरि तस क्याह करि काल,
रोज्यस नु गरि गरि मरुनच ज़ाल।
प्रेयम अमृत चावतम दामो॥
सत् ग्वरु मोक्षदायक रामो॥०॥
- ४ मन तय प्रान युस करि अर्पन,
सनम्बख सुय वुछि नारायण।
यिथु पॉठ्य लक्षमणन वुछ रामो॥
सत् ग्वरु मोक्षदायक रामो॥०॥
- ५ तारि बवसागरस चोनुय नाव,
नाव तरि तैलि यैलि गलि वरज़ु वाव।
फटि नु ज़ि रोज्यस नु पतु पामो॥
सत् ग्वरु मोक्षदायक रामो॥०॥
- ६ सोरुम श्रम च़े पुशरोवुम पान,
न्यरवानकुय दिम ज्ञान वैज्ञान।
निर्मल न्यशकल न्यशकामो॥
सत् ग्वरु मोक्षदायक रामो॥०॥
- ७ मूंह तुरि सुत्य छुस बरु गोमुत,
संताप ताप ज़रु ज़रु प्योमुत।
होल च़लि चानि यिनु लोल आमो॥
सत् ग्वरु मोक्षदायक रामो॥०॥
- ८ राम लक्षमण च़े वन्दहय पान,
'परमानन्द' आनन्द प्रावान।
दामु चावतम यूग बलु रामो॥
सत् ग्वरु मोक्षदायक रामो॥०॥

हचरु बाव कास्तम हरि शम्भू

च्यथ आकाशस भास्कर मे बासतम ।

हचरु भाव कास्तम हरि शम्भू ॥

- १ लम्बोदर स्वरु ग्वरु हर शंकर गंगाधर सू हम सू ।
जॉन्य गाश स्व-प्रकाश आस्तम तु कास्तम ॥

हचरु भाव कास्तम हरि शम्भू ॥० ॥

- २ तनु मनु सोन व्वोगुन हनि हनि ननि,
फना फिला व्वज्जवान शिव शम्भू ।
सनिदान दीप्तिमान संतुष्ट आस्तम ॥

हचरु भाव कास्तम हरि शम्भू ॥० ॥

- ३ राम श्याम कृष्ण विष्ण शेव भवु भय हर,
सरु कॅरजि वुजि ओम हम सू ।
न्यशक्रयमय न्यरनय पेयि बास्तम ॥

हचरु भाव कास्तम हरि शम्भू ॥० ॥

- ४ जल थल निर्मल न्यशकल ओजल,
सम बल स्मरनायि दिम शम्भू ।
कलु माल दारवुनि हनि हनि बास्तम ॥

हचरु भाव कास्तम हरि शम्भू ॥० ॥

- ५ स्व वोन्दु 'परमानन्द' आनन्द कन्द,
नादु व्यन्दु कृष्ण चन्द शेव शम्भू ।
ध्यान धारनायि ज्ञानु म्वखु स्वख आस्तम ॥

हचरु भाव कास्तम हरि शम्भू ॥० ॥

संतोष्ट रोज़तम गरि गरे

कष्ट कास्तम भगवान हरे ।

संतोष्ट रोज़तम गरि गरे ॥

भ्रमचे वुनरे वुनरोवुस, मुंह छटि अनिगटि वति रोवुस ।
चेय रोस कुस मे अथुरोट करे, संतोष्ट रोज़तम गरि गरे ॥

भवसुर क्रमुनय रटिनम खोर, यिम ज़ोर लॉगिथ गोस कमज़ोर ।
छांबरि लोगमुत छुस बांबरे, संतोष्ट रोज़तम गरि गरे ॥

वेरि बु लागय शेरि पम्पोश, गद गद वॉनियन थावतम गोश ।
वेंद्य वेंद्य येंच छम म्यच मा हरे, संतोष्ट रोज़तम गरि गरे ॥

व्यकोन्ठ प्यठु यितु ननुवोरुय, गरुडस खँसिथ त्रॉवुथ चे दोरुय ।
म्वकुलावतम संकटुचे थरे, संतोष्ट रोज़तम गरि गरे ॥

संकट मंज तस प्रह्लादस, कन थोवथस, आरचर नादस ।
हरनाकश्यप अद मदु वुतरे, संतोष्ट रोज़तम गरि गरे ॥

हंगु आख द्रोपदी नंग रँछिथस, नंगु वुछनस तस सामरथ कस ।
रंगु रंगु आबरन नॉल्य तस हरे, संतोष्ट रोज़तम गरि गरे ॥

लक्ष्मणो छारुन 'परमानन्द', चर चराचर युस छुय अंद वंद ।
लो लो करान नेरवुन लोलरे, संतोष्ट रोज़तम गरि गरे ॥



सनियॉस्य हा गोसाने

सनियॉस्य हा गोसाने ।

कुनि कने यिखना वने ॥

जटि मंज छय गंगा जॉरी, ज़न छय वसान अमृत दॉरी ।
सूर बस्मा मॅलिथ छु तने, वुगनि कने यिखना वने ॥

ड्यकस प्यठ छिय यिम त्रे नेथर, शूबवुन्य ज़न पम्पोश वॅथुर ।
वासुक नाग छुय योनि कने, वुगनि कने यिखना वने ॥

जाय चे रॅटथम शिन्या शयन, छायि छ्येफ ह्यथ रूदुहम नयन ।
सर्वुव्यापक छुख हनि हने, वुगनि कने यिखना वने ॥

खास भृषभा छुय वाहनय, सॉर करान छुख त्रुभवनय ।
छय चे उमा खोवरि कने, वुगनि कने यिखना वने ॥

पानु म्यान्यो मो नाज़ तने, काल वॅरिथ यथ सूर बने ।
शिव चु गारुन मंज बाग मने, वुगनि कने यिखना वने ॥

ऑरतिस कास्तम ऑरचरय, गटु कास्तम अमरीश्वरय ।
म्वख मे हावतम हरम्वख कने, वुगनि कने यिखना वने ॥

च्वन व्वज़न छिय आयुदा, शंख चॅक्र कपाल गधा ।
सारिनुय मंज छुख अन्दु कने, वुगनि कने यिखना वने ॥



ॐ नमो जगदंविनाय ॥

श्री शारिका लीला-लहरी

(प्रथम तरंग)

लीला 1

गवडुन्य गणपत जियस कुन कर नमस्कार ।

पतुय रठ राजरेनि हुंद खास दरबार ॥

वैनिथ क्या ह्यकु बु दीवी चॉन्य लीला ।

करय व्वन्य मूर्खगियि किन्य मूर्ख खेला ॥

चु माता शारिका संतुष्ट मे प्यठ रोज़ ।

गदा आमुत बु दर्गाह छुस सदा बोज़ ॥

वैहरिथ ज़ाल संसारन वोलुम नाल ।

करुम व्वन्य चारु नतु क्या म्योन छुय हाल ॥

मदन लूभन मुहन कैरमुच छनम जाय ।

कृपाये किन्य करुम म्वकुलावनुक पाय ॥

अहंकारन स्यठाह ह्योतमुत छुनस तल ।

यिमेन चोन मुशकिलन माता करुम हल ॥

बु दर्शुन छुस नु वातान न्यथ भवौनी ।

क्षमा पापन मे करतम मॉज्य भवौनी ॥

कोठ्यन शख्ती, अँछन थाव तम पनुन गाश ।

दरी दुनिया फकत चॉनी मे छम आश ॥

मे मूर्खस गछतु बूज़िथ मॉज्य भवौनी ।

सिवाये चानि वन कस कुस छु म्योनय ॥

दिलुक तमना मै कडतम छुस बु चोन दास ।

रक्षा करतम पद्यन चॉन्यन तलय आस ॥

कर्म फल किन्य अगर केंछा मै छुम पाफ ।

क्षमा सागर चु येमि किन्य छख करुम माफ ॥

कलम तुल पानु लेख म्यॉन्य कर्मलीखा ।

करुम सँज कांह अगर हँज्य छम मै रेखा ॥

कृपा सागर जगत माता छु चोन नाव ।

शरन आसय पद्यन पनन्यन तल मै थाव ॥

सिवाये चानि छुम नय कांह रछनवोल ।

चु दीवी म्यॉन्य छखना मॉज्य तय मोल ॥

ब्वजव आष्टादशव सुत्य कर चु रक्षिपाल ।

चु येमि किन्य आसवुन्य छख दीन दयाल ॥

चे रोस्तुय कस वनय कुस बोझि म्योन्य ।

बु छुसना नाबुकार संतान चोन्य ॥

यि अख मशहूर कथ, प्रथ कांह छु ज्ञानान ।

क्वपुत्र छुय, क्वमाता छय नु आसान ॥

मंगुन छुम न तगान, बोजुन तगान छुय ।

ल्वकुट शुर माजि यिथु पॉट्य द्वद मंगान छुय ॥

दिलस यँचु कोल अमिकुय छुम मै हावस ।

दितम दर्शुन लगय पॉर्य पॉर्य बु नावस ॥

बु चान्यन पादि कमलन रथ वंदय ना ।

शरीर अर्पन पनुन चेय पत करय ना ॥

पनुन जुव, जान, वॉलिंजि खोन्ठ वंदय ना।

पनुन्य यिम टॉट्य छिम सॉरिय वंदय ना॥

लगय ना चॉनि मायाये लगय ना।

लगय ना बजि दयाये चानि लगय ना॥

यिमन पम्पोश नेत्रन च़ेय लगय ना।

मुकट दॉरी स्वन्दर शेरस लगय ना॥

यि केंछा छुम चोनुय च़ेय वंदय ना।

क्षमा करतम क्षमा करतम चु क्षमा॥

चु छखना राजिरेन्य राजन दिवान राज।

अँतीत आमुत मे बख्शुम ज्ञानुक ताज॥

गछान दिथ छख अमीरन चुय अमीरी।

दरी दुनिया मे करतम दस्तुगीरी॥

च़े निश शाहो गदा प्रथ कांह बराबर।

मे पादन तल कृपाये पनुनि किन्य वर॥

बु ज़ॉरी छुस करान च़ेय दस्त बस्तय।

करय अर्पन जिगर ज़न पोशि दस्तय॥

दोयुम ब्याखा च़े ह्यु छुम नु कांह ति दाता।

बु हर कस्मुक मदद कर म्योन माता॥

गँडिथ गुल्य छुस करान च़ेय ज़ारु पारय।

पँतिमि वख़तय मतय करतम अवारय॥

परेशॉनी यि म्यॉन्यी करतु व्वन्य दूर।

यछाये दिल कॅरिथ करतय मे मंज़ूर॥

च छख म्याँन्य इष्ट दीवी कष्ट कास्तम ।

सदा संतुष्ट रूजिथ मनि बास्तम ।।

वनानं सॉरी छि चॉनी जाय स्यद पीठ ।

स्यदिथ करतम मे ह्यु म्वकलिथ गछ्युम कीठ ।।

बु कश्मीर कुत्य वैथ्य नेकनाम सतज्जन ।

कृपाये चानि किन्य सरतलि बन्योख स्वन ।।

मूर्ख ब्वज्जु किन्य न छम शख्ती न भख्ती ।

दयालु छव गछुम बरिष्थ मै म्वरत्ती ।।

बु छुस आरुत बन्योमुत आरवल ज़न ।

गशर चलिह्यम बन्यम मे ऑन ह्यु मन ।।

अगर रछहम पँद्यन तल कुस मै पौर्यम।

तवय किन्य चाँन्य भख्ती ज़ाह नुय सौरयम ।।

कबूल गछतम कॅरिथ व्वन्य म्याँन्य ज़ॉरी ।

वंदय रथ पादि कमलन मॉज्य च्वपॉरी ।।

यि लीला परि युस सुबहन त शामन ।

तैमिस दीवी सफल करि मनि कामन ।।

दपान 'दासस' छय चाँनिस टाँठ बख्ती ।

बु दुनिया स्वख बु उकबा दिम मे म्खती ।।



राम बन सागरस सोथ दिथ तारुन,

रावुन मॉरिथ सीता तारुन ।

शेथरु रोस राज कर पृथ्वी चलि बोर ।।

गच्छ शरन सत् ग्वरन अदु गाटस वाति बोर ॥०॥

सत् ग्वर सागरस सँनिस तु व्वोगनिस,

व्यापक छु पानय गॅनिस त तॅनिस।

सत् कथ बावनय व्वटि तरख अपोर ।।

गछ शरन सत् ग्वरन अदु गाटस वाति बोर ॥०॥

ज्ञानखय सलाह ग्वडु गॅन्यराव श्रदा,

ग्वरु वाक्यस प्यठ रोज़ ठीकित सदा ।

अनुभव अनुग्रेह दारि खुलु गॅछिय तोर ।।

गच्छ शरन सत् ग्वरन अदु गाटस वाति बोर ॥०॥

केंदलुक असबाब कर्मुक व्यस्तार,

व्यराग गिलकार शम दम छान खार ।

मुक्तिता ह्यथ बनाव नित्य अनित्यच सोर ।।

गच्छ शरन सत् ग्वरन अदु गाट्स वाति बोर ॥०॥

सथ डेडि सथ ठँठ्य तत् पद विशोषन,

ठँठ्य दिस तमिकिय तिमय तथ शूबन ।

निर्वैर बावुक कानुल तरि अपोर ।।

गछ शरन सत् ग्वरन अदु गाटस वाति बोर ॥०॥

चिल दिस बंद मुख्ती हुंद अब्यास,

न्यशकाम बल छुय छल छुय श्वास अश्वास ।

जीव ब्रह्म एकतायि हुंद दिज्यस ज़ोर ॥

गच्छ शरन सत् ग्वरन अदु गाटस वाति बोर ॥०॥

निर्द्वन्द्व निर्वैर निरअपेक्ष भावुक,

दिस फरश काठकर गंडुस श्वद भावुक ।

सत् संगु मॉर्यज्यन स्वरुफ च्वापोर ।।

गछ शरन सत् ग्वरन अदु गाटस वाति बोर ॥०॥

तत्त्व ज्ञानुच डेडि डीडि वोन्य प्रबुद्ध,

वेदान्त सार तस नित्य निज आनन्द ।

मज्जबूत ठीकिथ यपारि तर अपोर ।।

गच्छ शरन सत् ग्वरन अदु गाटस वाति बोर ॥०॥

आद्य अन्त मध्य निश त्रिशुन्य नाद बिन्द,

निमित्त उपादान कारन छु अबिन्द ।

एक भाव यपारि अपोर कुन दोर ।।

गच्छ शरन सत् ग्वरन अद् गाटस वाति बोर ॥०॥

हरिद्वार श्रान कर सपदिय श्वद मन,

भिन्न बावस सत्य ठीकित છુ અભિન્ન ।

निर्द्वन्द्व हर मोल हरम्वख द्राव सोर ।।

गच्छ शरन सत् ग्वरन अद गाटस वाति बोर ॥०॥



लीला 3

मन छुम मेलहा पननिस यारस ।

प्रारस अशि मुकाम ।।

वैनि मे दिचाम यथ भवसरस, वैन कस वनि नो आम ।

क्षनु क्षनु छयनु नो तसंदिस कारस, प्रारस अशि मुकाम ।।

बुलबुल मुश्ताक छुय गुलज़ारस, ज़ांह ति नो तमन्ना द्राम ।

कौल्य मा खजानु लागि अथ बहारस, प्रारस अशि मुकाम ।।

अंदरी वॅनि हू वोन्दि मंज यारस, मंदिरस अंदर चाम।

सौदा ब्योन ब्योन छु साहूकारस, प्रारस अशि मुकाम॥

द्वख छुम पूशुस नु लॉनिनिस कारस, नतु क्याह लेखनु आम।

ती बु वनहस पेयि ना पायस, प्रारस अशि मुकाम॥

युन तु गछुन छुय प्रथ जीवु द्वारस, यिनु यिनु मुस हो चाम।

सर कौरुथ नो यिथ संसारस, प्रारस अशि मुकाम॥

सुय नाव सुत्य छुम मै नावि तारस, येमि नावु सांपनुस राम।

‘वासुदेव’ लयि रोज तँथ्य दीदारस, प्रारस अशि मुकाम॥



लीला 4

पादि कमलन तल बु आसय, करनि मॉज चॉन्य अस्तोती।

मूक्ष दिम बौड वर मे दिम, हे भरगुशिखा भगवँती॥

गोम नेत्रन खून जॉरी, छुस चे कुन जॉरी करान।

बास प्रत्यक्ष कास खॉरी, अँस्य छि पापव वँल्यमती॥

चानि आशायि योत बु आसय, ना व्वमेद नेरय नु ज़ांह।

या मे वर दिम मूक्षदामुक, नतु छुसय प्रारान येतिय॥

लोलु बागस पोश फोल मे, वेरि चाने चॉर्य चॉर्य।

शेरि लागय बावु कोसम, शोलुवन्य कारेपँती॥

क्या वनव अँस्य मन्दछेमुत्य, चन्दु छैन्य सोदा करान।

कर दया व्वन्य वुछ मु तथ कुन, शर्मि सुत्य अँस्य गँल्यमती॥

चॉन्य ग्वन व्यसुतारुनुक ताकथ, अनी कुस कुस वँनी।

छुय चे जय जय शामु स्वँन्दरी, जामु शूबान छिय छँती॥

ग्यानु दाता मूक्ष दाता, छख ज़गत माता च छख।

ही भवौनी कर मे वौनी, स्यद म्वखस दिम सरस्वती ।।

पज़ि मनु युस बख्ती चॉनी, करि नैशकल राथ द्यन ।

क्या छु संशय तसुंदि बापथ, मूक्ष दामुक्य बर वॅथी ।।

चॉन्य ग्वन छुस बु व्यचारान, पन ओमुक्क्य खारान ब छुस ।

अबसनुक वर द्वन कुनुय कर, नतु छु आछुर कँत्य कँती ।।

सर्व व्यापक छख च्वपॉरी, अँस्य छि शॉरी क्या वुछव ।

व्वन्य च़ेय ऱोस कुस ब़ोज़ि ज़़ॉरी, हाव म्वख प़ेठ्य परब़्ती ।।

करमु हीनन धर्मु हीनन, करतव्यन सान्यन म वुछ ।

डाल स्योद अथु करमु लॉनिस, प्रक्रमस चॉनिस खँती ।।

वीलु ज़ॉरी बोज़ 'वैष्णस', रोज़ सन्तुष्ट सर्वदा।

छुय च़े रोशन छुस ब्रु तोशन, च़य मै बखशख थँज़ गँती ।।

पादि कमलन तल बु आसय, करनि चॉनी अस्तोती ।

मूक्ष दिम बोड वर मे दिम, ही भरगुशिखा भगवँती ।।



लीला 5

हे कृष्ण दया छय ना गछन,
ब्रम दिथ मचन नेन्दुरि हचन,
क्याह रुत समय ओसुय तैलि,
प्रेयम सुत्य रास मंडलस मंज नचन,
अन्तर बाहिर, रातस दोहस,
तोलान प्रेयम बोझ तारचन,

ब्रम दिथ मचन गोख ।
 ब्रम दिथ मचन गोख ।।
 येलि चु राधा ह्यथ ।
 ब्रम दिथ मचन गोख ।।
 आँस्य बाग्य वुठव सुत्य ।
 ब्रम दिथ मचन गोख ।।

दर्शुन दि करुनाकर भक्त वत्सल, उदास कैरिथ गोख ।
 अथुरोट कर वृचु गोपियि कँचन, ब्रम दिथ मचन गोख ॥
 गोपियि शुराह सास ह्यथ, शुराह छु खेलान रास ।
 आशचर यि कस ओस बोझ मंज अचन, ब्रम दिथ मचन गोख ॥
 माया मोहन चॉन्य मन मोहन, मोहन ब्योन ब्योन ओस ।
 मोहन रंग रूप आमुत मुनियन, ब्रम दिथ मचन गोख ॥
 अमृत रूपी दर्शुन म्वखय, व्याकजि गॉमुच छय ।
 शुर्य ज़न बोछे हँचन ब्रुछन, ब्रम दिथ मचन गोख ॥
 छ्यनु कमि स्वनि सानि द्युतुय कैरिथ, कन कँम्य बैरिय सॉन्य ।
 मन सोन यिनस छुय ना पचन, ब्रम दिथ मचन गोख ॥
 अमृत वर्शनु नारायनो, शैहलाव मनुय सोन ।
 सन्ताप भव सागर दज़मुचन, ब्रम दिथ मचन गोख ॥
 असि लोल चोनुय गन्योमुतय, कँम्य सोनि द्युतुय चै डोल ।
 सुय लोल सन्योमुत असि कँचन, ब्रम दिथ मचन गोख ॥
 बरय चै कैरिथ विश्वम्बरय, बरय अचख ना ।
 छुय ना सोन ज़रु ज़रुह गछन, ब्रम दिथ मचन गोख ॥
 त्याँगिथ लज़ायि क्रॉनिस द्राये, सीवायि आये चैय ।
 पँज़्या अनह्यौत लागुन ह्यचन, ब्रम दिथ मचन गोख ॥
 ऑदीन अनाथ बख्त ऑरती, पालान छि दर्म तु दान ।
 हितकार उपकार करान गछन, ब्रम दिथ मचन गोख ॥
 श्रीधर, करुणाकर श्याम स्वन्दर, ज़ानान चै छि भास्कर ।
 ब्योन छुखनु सुत्य सुत्य ऑसिथ ज़ँचन, ब्रम दिथ मचन गोख ॥

प्रेमन तु वीनायि आनन्द स्वरन,
 ब्रजवाँसी दाँसियि मलु हँचन,
 प्राणो यिय चै करुथ वाँणी,
 दुबार म्वख होवुथ न मुह हचन,
 केशन त्रॉविथ बूशन पॉरिथ,
 दर्शुन करन वाजे मँचन,
 ज़ाँनी नु असि चाँन्य सेवा कॅरिथ,
 दया कर असि व्यचार रछन,
 पज़िहे नतय छा दर्म करुन,
 त्याँगिथ मथुरायि गोख अछ रछन,
 च्यथ, ब्वद, मन, प्रान, अर्पन कॅरिथ,
 सुय ध्यान खेलान असि ग्यान वचन,
 रछ असि क्षन क्षन साँरिय निशे,
 'केशव' आव आपदायव त्रचन,

ब्रम दिथ न्यून मन सोन ।
 ब्रम दिथ मचन गोख ॥
 फीरिथ बु यिमोव यूर्य ।
 ब्रम दिथ मचन गोख ॥
 डेंशान छिनु म्वख चोन ।
 ब्रम दिथ मचन गोख ॥
 पूजा तु त्वता कैह ।
 ब्रम दिथ मचन गोख ॥
 फीरिथ न नज़र दिन्य ।
 ब्रम दिथ मचन गोख ॥
 देंरिथ ह्यु चोनय ध्यान ।
 ब्रम दिथ मचन गोख ॥
 सौरिय ज़न, राज़ ह्यथ ।
 ब्रम दिथ मचन गोख ॥



लीला 6

पोत ज़ूने मोत वुज़्ज़नोवुम ।

ललनोव्रम नारायन । ।

प्रेयि तम्य सुंजि हियि तन नाँवुम,
रोशि यियिना होश रावुरोवुम,
बालु पान तस पतु रावुरोवुम,
शिवु शंभू शुन्य बोलनोवुम,

पोश वथुरस प्यठ गोशन ।
ललु नोवुम नारायन ।।
हालु कॅमि सुय नालु रटहन ।
ललनोवुम नारायन ।।

कामुदीवस नाम लेखुनोवुम,
रुमु रुमु राम रमुनोवुम,
द्वारु पतु द्वारु वारु वुछुनोवुम,
मारकन मंजु लालु व्वलुसोवुम,
ल्वलि मंजलि लाल ललुनोवुम,
चीरय सोवम सुलि वुजुनोवुम,
जीरु बंमकुय सीर वुजुनोवुम,
वेरि तॅम्य सुंजि शेरि वातुनोवुम,
ज्यव नारु सुत्य वारु छलुनॉवुम,
अँछव बूजुम कनव वुछुनोवुम ,
कंदु नाबदु आरदु नोवुम,
अन्द लोबमसन व्वंद फ्वलुनोवुम,
हंसु दारय वारु पान प्रजुनोवुम,
ब्रमु सरु पान सरु करुनोवुम,
अथुवासय रास खेलुनोवुम,
'सास भास्कर' व्यकास बासुनोवुम,

पामु थविनम कर डेंशन ।
 ललु नोवुम नारायन ।।
 जूनि छोंडुम मंज तारकन ।
 ललु नोवुम नारायन ।।
 बोलुनोवुम सुबह शामन ।
 ललुनोवुम नारायन ।।
 फेरुनोवुम तति हेरि ब्वन ।
 ललुनोवुम नारायन ।।
 तवु लोलुन नार शोलान ।
 ललुनोवुम नारायन ।।
 फंद कॅरिथ यूर्य अनतन ।
 ललुनोवुम नारायन ।।
 प्रारि प्रारोस रामु रादन ।
 ललुनोवुम नारायन ।।
 श्वास-अश्वास नोन छु बासन ।
 ललुनोवुम नारायन ।।



लीला 7

प्राता काल आव मेति अनतु गाश मति,
छम चॉन्य आश मेति पूरन कर ।
लटि म्वख हाव मोह गटि करतु नाश मति ॥
छम चॉन्य आश मेति पूर्ण कर ॥०॥

जन्मादि जन्मन ग्यूर आम फेरान,
छुस हालि हॉरान डेंशथ कर ।
जल हाव म्वख पनुन छुम नु बरदाश मति ॥
छम चॉन्य आश मेति पूरन कर ॥०॥

भक्ति भावु सुत्यन वति चानि नेरय,
कति छुख आसान पॉगाम सोज़ ।
नतु दिम पनुनुय प्रोन यादाश मॅति ॥
छम चॉन्य आश मेति पूरन कर ॥०॥

मोहगटि मंज छुस वथ छमनु यिवान,
सत् ग्वरु हावतम सतुचिय वथ ।
वथ हाव नोन त्राव सिरियि प्रकाश मॅति ॥
छम चॉन्य आश मेति पूरन कर ॥०॥

हनि हनि फयूरुस ह्यथ मनि कामन,
शहरन तु गामन कति आसि यार ।
छुख पाताल किनु छुख आकाश मॅति ॥
छम चॉन्य आश मेति पूरन कर ॥०॥

निरवासन वनतु कॅति चोन आसन,
अंधकार कास्तम वंदयो प्रान ।
करतम सोद्यवानिन्य हिश बाश मॅति ॥
छम चॉन्य आश मेति पूरन कर ॥०॥

कल्पनायि रोस्तुय कलु हो वन्दयो,
कलि चानि रॉवम नेन्दुर तु नेह ।
वलु व्वन्य 'वेष्णस' ज़लि अबिलाश मॅति ॥
छम चॉन्य आश मेति पूरन कर ॥०॥

लीला 8

हरे राम टाठि मैत्रय म्यानि ।

लागय दान दान तुलसी । ।

कौशल्या हुंघ आनन्दु गनु,
निर्बन्दन रघुनन्दन,
महा प्रभू शुभ दर्शन दि,

पादि कमलन पान वन्दुयो,
दासस कास भव बन्दुनय ।
लागय दान दान तुलसी ।।

हा रामु श्याम स्वन्दर देव,
शरनहो आसय वासुदेव,
परन प्योसय सर्व ईश्वर चैय,

हृदयस वेशि सेवय चॉन्य पदम पाद,
चावतम चरनन हुंद अमृत प्रसाद ।
लागय दान दान तुलसी ।।

जगतस उत्पत्त स्थित तय नाश,
आदि देव त्वं स्वयं प्रकाश,
तनु मनु पान पुशुरमय चै,

तमि निश सांपनुस नेरआश,
कीवल छम चरर्णाबिंध चिय आश।
लागय दान दान तुलसी।।

यस चावि ईश्वर प्रेमय रस,
त्रावि राजस तु अमृतस,
जीवन-मुक्त सांपनान प्रेमी,

तस थॉविन भव नियम च्यतस,
प्रावनाव्यस परम तत्वस ।
लागय दान दान तुलसी ।।

स्वर्ग स्वखु खोतु रस रागस,
जगत आकार वृत्ति बानस,
राग रस ज्ञानि अख वॉरागी,

रसु रसु व्यसुरावॉनी,
च्यतु निश मशरॉवानी ।
लागय दान दान तुलसी ।।

मूर्ख ज़ीवन काम रस चाव, जन्म मृत ज्वरा रोग बाँगी,
ज्ञाता जीवन राम रस चाव, स्वतः सांपनान सर्व त्याँगी।
शुकदेव सु देवदत्त साँक्षी, लागय दान दान तुलसी॥

प्रेम अग्निसु तेज बलुवान, बव नियम काष्ट बीज गालान,
प्रेमी मनस छु संबालान, नियमी ज़ीवन बन्दन गालान।
सहज प्रेमी सदा नियमी, लागय दान दान तुलसी॥

आश्चर्यवत छु बगवत ध्यान, अति वाहक दृष्टि मौकुलान,
च्यत विकास हतु कमल फोलान, सांपान श्वद स्कंलप बान।
बनान निर्विकल्प समाधी, लागय दान दान तुलसी॥

गौतमुनि शाप सुत्य अहलँया, बनेमँचे आँस जड शिला,
जगत मंगल छि राम लीला, व्वदयस आयस श्वब वेला।
पादि स्पर्श सुत्य बनेयि देवी, लागय दान दान तुलसी॥

वलनु आस बुद्धिस्थित चिदाबास, चित रंजन वाल वाशे,
चित घन राम साक्षात बास, कास अज्ञान कर्म ज़ाल पाशे।
बंद छुस चिदाकाश पँक्षी, लागय दान दान तुलसी॥

मोक्ष दायक मुकुन्द राम, भाग्यवान अजोध्या वाँसी,
प्रावनाव्यथख विष्ण स्वदाम, युस यछान योग अभ्याँसी।
बख्त प्रिय मोक्ष करिथ सारिय, लागय दान दान तुलसी॥

जगत गुरु त्वं पुरुषोत्तम,
 बगवान् स्वखु म्बख यितम,
 करतम निर्वाण व्वपदीशिय,
 सर्वेश्वर सर्व व्यापक सम,
 श्रीमान श्वब दर्शुन दितम।
 लागय दान दान तुलसी ।।

ज्ञानार्दन गोपाल गोविन्दय, नारायण विष्णु वासुदेवय,
हृषीकेश माधव मुकुन्दय, हरे राम कृष्ण आदिदेवय ।
आशा छम नाम निदान दानचिय, लागय दान दान तुलसी ।।

प्रिय ब्द, शवद च्यथ क्षेत्रस,
नावस स्वरूप बनि मित्रस,
फल दायक छि प्रेयम खेती,
वैदिवत वविजि बगवत नाम,
चतुर्भुज श्याम सुन्दर राम।
लागय दान दान तुलसी ।।

देव बुद्धदेव दृष्टि छि सादन,
परम पावन छि राम आरादन,
उपासना बिन्न छय न गती,
नेष्काम सीवान तिम विष्णु पादन,
क्षय सांपनान अपरादन ।
लागय दान दान तुलसी ।।

दास छुन स्वर्गु स्वख पुछि राम, बरतल चनि त्राविथ लर,
कास मनस नरक दुख बय श्याम, दौनवय आसवुन्य अस्थिर ।
दासस छय प्रय श्वब दर्शन चियं, लागय दान दान तुलसी ।।

यिछ गथ छय राम नाव प्रेयमस, तिछ गथ छनु तपस तु व्रतस,
प्राणायामस यमस तु नियमस, राजस स्वर्गस तु अमृतस ।
राम महिमा क्या वनि वाणी, लागय दान दान तुलसी ॥

जीवनमुक्त हनुमान देवन, सीवुन राम नाव जानिथ सार,
सीता-पति राम जुवन, कृपा कोरनस सारंगी म्वख्तुहार ।
हलमतस छय राम नाम प्रीती, लागय दान दान तुलसी ।।

चवान राम नामु रस गलि गले, राम सेवक महा नेष्काम,
म्वख्तु हारस फलि फले, वुछनस न कुनि श्रीराम नाम ।
चुन्य कॅरिथ त्रोव हलुमती, लागय दान दान तुलसी ।।

महा महिमा राम नावस, दैव विबूत दर्शन न्यथ,
मान सांपनान निष्कामस, चिदाकाशस अन्तर्गत ।
महा पुरुशन छु सुय हर्षय, लागय दान दान तुलसी ।।

राम नाम रस महादेवस, तवय सीवान सर्व लूक तस,
गिरिजा राम नाम भूषणस, तोशान-तोशान लागान मनस ।
क्षनु क्षनु न्यथ सादान ती, लागय दान दान तुलसी ।।

युस वोर बख्ती यूग अभ्यासन, सुय फेरान न्यथ पॅचन कोशन,
रामु नामु सुमरना बूशन, निवारान रोज़तम दूशन ।
सांपनान ज्ञानु ग्वन सातविकी, लागय दान दान तुलसी ।।

आदन बाजि म्योन्य स्नेह, कवु कारन कॅंहति छुयन चे,
छालु मार कोत गछा लालो वे, अकिलटि रटतु नालु पायस पे ।
म्योन संयोग चे सुत्य वीदान्ती, लागय दान दान तुलसी ।।

नर्कवासी सादु निन्दक,
स्वर्ग वासी छि सन्तु सीवक,
सादु वल्लबो लगय पारी,
दुर्जनन क्रय स्वय न्यशदयेन,
सन्तन पालन मधुसूदन।
लागय दान दान तुलसी॥

यस अनाथस वरि रघुनाथ,
साद सन्त राम रूप साक्षात,
रामु नामु रस च्यथ छिवेमती,
तस क्या करि अस्त्वत तु निन्द्वा,
रघुवरि प्रेयम प्वरुशस सदा।
लागय दान दान तुलसी ।।

चंदन वृक्ष संत दुर्जन मख,
मखस प्रथ शायि अग्न दाहक,
जीव कृत कर्म फल भूगी,

मख चंदनस दिवान टख,
चंदनस वरान हरि मस्तक ।
लागय दान दान तुलसी ।।

प्रेयमस छय सारिचिय सिद्धता, महा दुर्लब बनान सुलब,
यस वरि हरि हर विदाता, दासु भावु किन्य सांपनान प्रभ ।
भ्रमर कीटवत् छय प्रेम खेती, लागय दान दान तुलसी ।।

यस मनस आसि न प्रेयमच लीश, तस क्या करि गुरु व्वपदीश,
तस कदाचित गलि न राग द्वेश, चलि न तस माया मोह आवेश।
सगु खोतु संस्कार बली, लागय दान दान तुलसी।।

यथ शायि आसन संस्कारी नागवत, वुज्जान तति प्रेयमु ज़ल,
स्वतः सांपनान आदिकारी, प्रेमु जलु छलान च्यतु वृति मल।
स्वखसान बनान नैवृती, लागय दान दान तुलसी।।

यिथु पाठय मेघ वालि वर्शन, जलु वेग छुन वुछान दारि त बर,
तिथय पाँठय स्वतः सेद्ध पुरुशन, प्रवेश करान बाह्य अन्तर।
सप्त सेद्धी ख्वतु छय प्रेम नदी, लागय दान दान तुलसी॥

तीर्थ जल कासान बाह्य मल, अंतःकरण वृत रोजान चंचल,
 राम राग यात्रा सफल, चित्तु वृत बनान शांत शीतल।
 'प्रेमी' वोर राम भगवॉनी, राम महिमा क्या वनि वॉनी
 लागय दान दान तुलसी ॥०॥



लीला 9

सखियव रूठम हॉय रूठम हॉय, गँछिथ ब्यूठुम हॉय गामनुय ।	
तति विगिन्यव ड्यूठुम हॉय,	बु चाक दिमना जामनुय ।।
सैंदि ज़लु तन नावसॉय,	बु सीर पनुनुय बावसॉय ।
क्याज़ि लॉजिथस पामनुय,	बु चाक दिमना जामनुय ।।
बालु प्यठु नादा लायसुय,	बु साज़ु सेतार वायसुय ।
छवन्य छवन्य करस र्वनि दामनुय,	बु चाक दिमना जामनुय ।।
तारामंड़ला द्रामतुय,	ज़ूनि नादस आमुतुय ।
रोव हॉय करव सुबह शामनुय,	बु चाक दिमना जामनुय ।।
वनु विगिने द्रामुचय,	डलु सॉलस आमुचय ।
ज़ूला ज़ालव रंगु नावनुय,	बु चाक दिमना जामनुय ।।
सँखियव मनुविथ अँनितोन,	आदन बोज़ म्योन नुंदबोन ।
व्वन्य नय काँसि ब हावनय,	ब चाक दिमना जामनुय ।।

लीला 11

स्वख शब्द दर्शन चाने। आनन्द गनुं ठाठि म्याने।।

रात घन करान छुस चैनतन, ख्यनु ख्यनु छुम चंचल मे मन।

ईश्वर दूरे चाने, आनन्द गन टाठि म्याने ।।

राग चो न युस छुम मनुसुय, सातु सातु रातस द्यनसय ।

મ્યોન દ્વચ છે રોસ કુસ જ્ઞાને, આનન્દ ગન ટાઠિ મ્યાને ।।

राजन हंदि महाराजे, टाठि म्यानि आदन बाजे।

लीखिथ में क्याह ओस लाने, आनन्द गुन टाठि म्याने ।।

योदवय च म्यानि कथं बोझख, दूरि दूरि चूरि क्याजि रोज़ख ।

रोज़ चूरि यथ ग्वफायि म्याने, आनन्द गण टाठि म्याने ।।

यँचकोल च़े त़ मे दूरेर, किथ ज़ोरुथ युथ कोरुथ न पूरेर ।

अद कर यि जॅट येलि प्राने, आनन्द गण टाठि म्याने ।।

ओसुस जल बो न्यरमल, मोह कठकश कोरनम छल।

वचिनम कचि शीन माने, आनन्द गन टाठि म्याने ।।

त्रेशि हँतिसय मनस त्रेशा अमरयथ वरशुन ब डेंशा ।

गलि शीन अकि कटाक्ष चाने, आनन्द गन टाठि म्याने ।।

कर्म किन्य वेश कम दारिम, गर्दब बुथि बोर्य सारिम ।

ब्रशब वेश तल अलबाने, आनन्द गनु टाठि म्याने ।।

कामनायि अतुर कोरनस, अमर्यथ बास्योम वेहरस ।

श्रोपरोवुम दानि दाने, आनन्द गन टाठि म्याने ।।

कन थोवुम न सतगवर शब्दन, ज़र छुनुम खोट्य प्रारब्धन ।

कर्मव कोडुस परिनि छाने, आनन्द गनु टाठि म्याने ।।

आनन्दसु चाव अमरयथ रस, संसारु निशि बनि बेहस ।

बनि नोन अनुरेह चाने, आनन्द गन टाठि म्याने ।।

श्री शारिका लीला - लहरी

(द्वितीय तरंग)

लीला 12

चराचर छुख परमु ईश्वरो ।

रछितम साँ पनुन्यन पादन तल ॥

गज म्वख बालचन्द्र लम्बूदरो, विनायको बँविनुय जय ।

हर म्वख दर्शुन दितम ईश्वरो, रछितम साँ पनुन्यन पादन तल ॥

निष्कल नाव चोन निरंजनो, स्वकल दारिथ त्रे कारन ।

सुमरनि चानि सुत्य जन्म मृत हरो, रछितम साँ पनुन्यन पादन तल ॥

दीवी तु दीवता साँरी सँमिथ, नैमिथ छि करान चाँन्य सुमरन ।

सुमरनि चानि सुत्य साँरी पाप हरो, रछितम साँ पनुन्यन पादन तल ॥



लीला 13

श्री राजु राँजीश्वरियय आमुत्य शरन छिय

पूजायि लागय व्यनु पोश, ग्वेलाब, मादल तु हिय ।

गौरी अम्बा अम्बराक्षीम अहम ईडे ॥

जगत अम्बा चुय छख, मंज वदुनस असनाव,

निष्पुद्ध शुर्यन दयायि हुंद दामानु प्यठु त्राव ।

कल्यानु सोस थाव सुत्य अँश फेर्यन बरान छिय ॥

पूजायि लागय व्यनु पोश, ग्वेलाब, मादल तु हिय ॥०॥

बाहन सिर्यिन जुचन चान्यन हुंद प्रकाश,

चरन चॉन्यी करान संकट गटे छि नाश।

तिहुंजेय गरदि सुत्य देव मुकट जरन छिय॥

पूजायि लागय व्यनु पोश, ग्वलाब, मादल तु हिय॥०॥

लोका लोकन हुंद सतजन कारन देवगन,

सिंहासनस चॉनिस दिवान छिय प्रदिख्यन।

परम दामक्य पुरुश प्यवान परन छिय॥

पूजायि लागय व्यनु पोश, ग्वलाब, मादल तु हिय॥०॥

षट्चक्र रूपी चक्र नागस छि नॅन्य नेरन,

तीजुचि रेखायि च्वापौरय त्रिकोनस फेरान।

यूगी ग्यानी प्रॉनी सुय दान दरन छिय॥

पूजायि लागय व्यनु पोश, ग्वलाब, मादल तु हिय॥०॥

व्वद छेनु वातन कम रंग चान्यन रंगन छिय,

कामेश्वरी च़ेय मन कामनायन मंगन छिय।

येछि चानि श्रद्धायि सुत्य स्तुतायि परन छिय॥

पूजायि लागय व्यनु पोश, ग्वलाब, मादल तु हिय॥०॥

पनुन्यन बॅखत्यन दासन हुंदुय पेयनय पास,

तिहुंदेय पासय क्वकर्मन हुंज गटय मे कास।

ज्योति स्वरूप हाव छय च़े भूतेश्वरुन्य द्रुय॥

पूजायि लागय व्यनु पोश, ग्वलाब, मादल तु हिय॥०॥

भगवत मायायि हुंदि रंग चॉन्य छि रंगा रंग,

चाने सुती छुय यूग, छुय भोग, छुय सतसंग।

तप ज़प समाद क्रिया कर्म करन छिय॥

पूजायि लागय व्यनु पोश, ग्वलाब, मादल तु हिय॥०॥

महामाया चुय छख, चठ चुय अँसि माया ज़ाल,

असि वोलमुत छुय गृहस्थकि कालसर्पन नाल ।

लङ्ग्यमुत्थ सौरिय पनुन्यन पनुन्यन गरन छिय ।।

पूजायि लागय व्यनु पोश, ग्वलाब, मादल तु हिय ॥०॥

कम बैंगनी किन्य बङ्गावारन स्वरन छिय,

कथ कामि लगव क्याह तगि ज़िन्दय मरन छिय ।

चुय टोठ सँच चानि सतय अँस्य दान दान बरन छिय ।।

पूजायि लागय व्यनु पोश, ग्वलाब, मादल त हिय ॥०॥

प्रसाद कर गाल जन्मादिजन्मन हुंघ अपराद,

सब्ज रंगय जलय मंज हाव पम्पोश पाद ।

यिम तिम स्वरन यथ बवसरस तरन छिय ।।

पूजायि लागय व्यनु पोश, ग्वलाब, मादल तु हिय ॥०॥

चाने सुत्यी सृष्टी गॅयि नॅन्य जय भॅविनय,

मंजु शून्य उत्पत्त स्थित साँपनी जय भविनय ।

कल्युगची महाराजरॉनी शरन छिय ॥

पूजायि लागय व्यनु पोश, ग्वलाब, मादल तु हिय ॥०॥

कुनुय यैलि ओस वुछन वोला तस कुस ओस,

जगत यस जाव माँजा मोला तस कुस ओस ।

चित शख्ती चॉनी एक अनेक स्वरन छिय ।।

पूजायि लागय व्यनु पोश, ग्वलाब, मादल तु हिय ॥०॥

चुय अज़पा गायत्री पांछ कारन ग्यवन छि गीत,

निस्त्रेग्वन छख ग्वनव चान्यन सृत्य परतीत ।

चानि सुत्य कार अन्तःकरन करन छिय ।।

पूजायि लागय व्यनु पोश, ग्वलाब, मादल तु हिय ॥०॥

अनेक नागन प्यठ चोन निर्वासन आसान,
प्यठ शेशनागस विष्णु रूपय छख बासान ।
सौरिय ग्वण चॉन्य महा पुरुषिय वरण छिय ॥

पूजायि लागय व्यनु पोश, ग्वलाब, मादल तु हिय ॥०॥

चेय कित्य नाना रंगय बूजन रनन छिय,
चेय निशि स्वर्न बानन लॅदिथ अनन छिय ।

नाना रंगव मिठायव थाल बरन चेय कित्य छिय ॥

पूजायि लागय व्यनु पोश, ग्वलाब, मादल तु हिय ॥०॥

चाने दयायि सुत्य कॅड्य बड्य बड्य नाव ।

नेशब्द 'कृष्णस' निश वॉनी हुंद अमृत द्राव,

परन वाल्यन जन्मन हुंद द्वख हरन छिय ।

पूजायि लागय व्यनु पोश, ग्वलाब, मादल तु हिय ॥०॥



लीला 14

हे दयालु छुस बु चंचल लोलो ।

अनुग्रह चानि बेमार बलु लोलो ॥

कर्महीन छुस आमुत संसारस, चन्दु छोन लोगमुत व्यवहारस ।

अविद्यायि हुंज छम गांगलु लोलो, अनुग्रह चानि बेमार बलु लोलो ॥

लय विक्षेप भय सुत्य छुम आवरन, मल खोतुमुत छुम अंतःकरनन ।

विवेक पॉनि पान बो छलु लोलो, अनुग्रह चानि बेमार बलु लोलो ॥

जॉन्य जॉनी ज़ांह तिनो ज़ोनमख चुय, ज्ञान दिम तिछ जॉनिथ तव गलि दुय ।

दिम नेशचय युश तु ज़ांह डलु लोलो, अनुग्रह चानि बेमार बलु लोलो ॥

छुस बु लोगमुत संसार सरसुय मंज, रोवमुत छुस पनुनिस गरसुय मंज ।

ध्यान सुत्य ज़ालु ग्यानु मशालु लोलो, अनुग्रह चानि बेमार बलु लोलो ॥

प्योमुत छुस गटि मंज अनतम गाश, त्युथ गाश हाव युथ नोन छु सिरियि प्रकाश ।
काँफी चाँन्य अख वुजमलु लोलो, अनुग्रह चानि बेमार बलु लोलो ।।
बानु हीन बु द्रास खानु गदाये, अंगहीन छुस फेरु कोत जायि जाये ।
दिम बेख्या अनुग्रह खलि लोलो, अनुग्रह चानि बेमार बलु लोलो ।।
यम्बरजल बौम्बरो छस बु प्रारान, वेरि चानि पान छस पौरावान ।
वनु वनु छस वेंच आरुवलु लोलो, अनुग्रह चानि बेमार बलु लोलो ।।
लोल बागस फौलिमो गुल तु गुलजार, पोशनूलो अज वलो छावु सब्जार ।
होश दिम युथ पोशि वॉर फौलि लोलो, अनुग्रह चानि बेमार बलु लोलो ।।
हा विष्णो पनुनुय पान ज्ञानतम, येलि ज्ञानख तेलि बनि सरतलि स्वन ।
चित्त 'ऑनस' करतु सोय कल लोलो, अनुग्रह चानि बेमार बलु लोलो ।।



लीला 15

व्यनथ बोजुम चु राधा कृष्णन,	लायय लोलु नादा बो ।
बरय लोला परय लीला बो,	करय हो हो, करय हो हो ॥
चु छुख यूगुक ज्ञानुक गुल,	बु छस ना बावु कुय बुलबुल ।
चु लोब रोज़ख ज़रय मा बो,	करय हो हो, करय हो हो ॥
त्रेय छय पम्पोश पादुच द्रुय,	वरुम छस बख्ती बागुच हिय ।
चु नय डेंशथ हरय मा बो,	करय हो हो, करय हो हो ॥
चु छुखना प्रान बो छस तन,	सत्ता चॉनी छि दोन मिलवन ।
चु नय आसख मरय मा बो,	करय हो हो, करय हो हो ॥
ज़लस मंज़ गॉड ज़न छस बुय,	बु छस त्रेय सुत्य ज़ल छुख चुय ।
त्रे रोस्तुय व्वन्य दरय मा बो,	करय हो हो, करय हो हो ॥

बु छस च़ेय मेघु वर्णस मोर, रँटिथ छस खोर रासस मंज़ ।
 नच़य लूकन खरय मा बो, करय हो हो, करय हो हो ॥
 चु सर्वस्य छस बु कुमरी ज़न, करन छस बूल्य मँशिथ हन हन ।
 छुनय त्रॉविथ गरय मा बो, करय हो हो, करय हो हो ॥
 चु छुख च़न्द्रम ह्यु ज़ोतन, ककुव ज़न छस च़े कुन बोलन ।
 वुछुथ नय अँछ ज़रय मा बो, करय हो हो, करय हो हो ॥
 च़े श्रीकृष्णस बु छस प्रारान, दितम दर्शुन यितम लारान ।
 च़े रोस्तुय व्वन्य बरय मा बो, करय हो हो, करय हो हो ॥



लीला 16

लालु लगयो बालु बावस ।

रामु नावस पॉर्य लगय ॥

तंग ओननस व्यवहारन, रंगु बुलबुल गोम कौल ।
 गंगु वोन्थ चाव मंज़ यथ तावस, रामु नावस पॉर्य लगय ॥
 बख्ती बावय नाद लायय, अर्दु रातन स्वन्दरो ।
 चानि दर्शुनकुय छुम मै हावस, रामु नावस पॉर्य लगय ॥
 हे मुरारी, वीलु ज़ॉरी, म्योन बोज़ख ना कनव ।
 छुख चु टोठान बैख़ि बावस, रामु नावस पॉर्य लगय ॥
 त्रटि हुंदि सायबानो, गटि हुन्दे गाशरो ।
 मुह अनिगटि मंज़ लोगुस दावस, रामु नावस पॉर्य लगय ॥
 गोब गोमुत बोर पापन, दोह लोगमुत छुम दरय ।
 नाव लँजिमच़ मंज़ व्यथु वावस, रामु नावस पॉर्य लगय ॥
 हे शिव, छुख सर्वु व्यापक, बेयि छुख विश्वम्बरय ।

केशवु तार दिम वर्जनिस् वावस,
कूठ प्योमुत छुम मै पानस,
ख्यमु क्या छुम नु कैह ति छावस,
बालु बावय वॅन्य मै दितिमय,
व्वन्य यितम ती छुम मै हावस,
शयि शये शय चुय छुख,
शयि रूद यैलि टोठयोख कावस,
'आनन्दो' बख्ती तमि सुंज़,
व्रत तम्य सुंद दर च मावस,

रामु नावस पॉरय लगय॥
 संसारुक लंगरय ।
 रामु नावस पॉरय लगय॥
 वेंनि नो आहम चु ज़ांह ।
 रामु नावस पॉरय लगय॥
 शय नो बेयि रोज़ि कांह ।
 रामु नावस पॉरय लगय॥
 ज़ान पनुनुय मोक्ष व्वपाय ।
 रामु नावस पॉरय लगय॥



लीला 17

चानि बरतल राव्यम रॉचय ।

आवाज़ वाँचय नो ।।

च्वञ्जु शूभहय बो खज़मुच्य,
 तवय नाव प्योम ललुमँच्य,
 बालि रनिमय सारेय न्याँमँच्य,
 तवय ललु छस छिन्दरेमुच्य,
 गरि द्रायस बा जमॉच्य,
 कॉल्य मेलव कँयामँच्य,
 खॉस्य व्वञ्जलि बॅरुग छँच्य,
 दादि बोम्बरुनि बरु गॉमुच्य,
 बाल्लै बॉली मो पख यच्य,
 काल्य सूरचन गछान मैच्य,

ग्रंज साहिबो ह्येचथम नु ज़ांह ।
 आवाज़ वाँचुय नो ॥
 खेनि साहिबो आहम नु ज़ांह ।
 आवाज़ वाँचुय नो ॥
 वनि साहिबो आहम नु ज़ांह ।
 आवाज़ वाँचुय नो ॥
 छस बु स्वर्गच यँम्बुरज़ल ।
 आवाज़ वाँचुय नो ॥
 गॉल्य काँत्याह संसारन ।
 आवाज़ वाँचुय नो ॥

राम लीला चॉन्य वनय ।

श्यामु स्वन्दर नारायनय ॥

तनु मनय अर्पन बनय, श्यामु स्वन्दर नारायनय ।
 निर्गुणय निज्जनय, श्यामु स्वन्दर नारायनय ॥
 चानि लोलुक छुम होल गोमुत, देहकिस ज़िसिसुय मंज़ बु प्योमुत ।
 वनु कस द्वख मै छुम ख्यन ख्यनय, श्यामु स्वन्दर नारायनय ॥
 येमि यूनी छम हँज्य कौरुय, गोसु त्राव व्वन्य मै छम क्वसु तौरुय ।
 म्वख हाव द्वखु किन्य आस ह्यनय, श्यामु स्वन्दर नारायनय ॥
 नट बँन्य बँन्य नाटक हॉव्यम, ईशु कम कम वेश बदुलॉविम ।
 निनु आस गँछ्य गँछ्य यिनु यिनय, श्यामु स्वन्दर नारायनय ॥
 कुतिस कालस व्वन्य बु प्रारय, बोज़तम ऑरचर ज़ारु पारय ।
 आर यियनय रघुनन्दनय, श्यामु स्वन्दर नारायनय ॥
 यथ वेशस मंज़ म्वकुलावुम, योग आनन्दस मंज़ मै सावुम ।
 मोचि आनन्द निर्बन्दनय, श्यामु स्वन्दर नारायनय ॥
 नाशु सोसतिस येथ संसारस, कॅमि बापथ बु पतु पतु लारस ।
 अतुगत पठ च़टुम पनु पनय, श्यामु स्वन्दर नारायनय ॥
 कालस छुनु करार ख्यनस, ग्रास करान रातस तु दैनस ।
 चानि दर्शनु अमर बनय, श्यामु स्वन्दर नारायनय ॥
 कालस निशि व्वपदान संसारुय, कॉली तथ बनान आहारुय ।
 मंगु क्या तंग आस मरनु ज़ैनय, श्यामु स्वन्दर नारायनय ॥

बूगन मंज तृप्ती मे न आये,	युथ मृगिन्यन मृग तृष्णाये ।
अमृत चेनुकुय छुम मे वैनय,	श्यामु स्वन्दर नारायनय ॥
श्वान नीरस हडन टकान,	टकि टकि पनुने ज़समु ब्रकान ।
रस रतुक तस हे रस गणय,	श्यामु स्वन्दर नारायनय ॥
कोमल पादि कमल मलय,	हे शरनागत वत्सलय ।
कोत बु चलय चे निशि रोज़ छैनय,	श्यामु स्वन्दर नारायनय ॥
स्वख कीवल चॉनिय स्मुरन,	स्वख कीवल चोनुय दर्शन ।
हे निर्वन्दु आनन्द गनय,	श्यामु स्वन्दर नारायनय ॥
‘ठाकुर’ चुय हषीकेशय,	बुद्धि पर युस निशचल राग द्वेश्य ।
सर्व आत्मा चुय सनातनय,	श्याम स्वन्दर नारायनय ॥



लीला 19

कृपा करतम हरी हरय ।

ब क्या करय जोर ।।

लूसिथ प्योमुत छुस बुजरय,	खोतमुत छुम बोड बोर ।
यथ पंचालस किथु पॉठय तरय,	बु क्या करय ज़ोर ।।
आरु छु वज़ान व्वगनि दरय,	वाराह छु करान शोर ।
छोपु छु करान समन्दरय,	बु क्या करय ज़ोर ।।
वैन्य वैन्य यँत्र गोम च़खि अंदरय,	ननन ज़न छुस चोर ।
छ़वपि हुंद स्वख दिम यूगीश्वरय,	बु क्या करय ज़ोर ।।
पखु छम जेरिमँत्रु छुम ज़रु ज़रय,	बन्योमुत छुस मोर ।
हीन छुस खोरन हुंदि ऑरच़रय,	बु क्या करय ज़ोर ।।

संम्वख रोजतम श्याम स्वंदरय,	प्रबात ह्युव चोपार ।
युथ नु पम्पोशस दोह लगि दरय,	बु क्या करय ज़ोर ॥
आबासु चानि सुत्य गौमृत्य खरय,	अन्तःकरण चोर ।
मे बास प्रकाश रूप ईश्वरय,	बु क्या करय ज़ोर ॥
त्रैग्वन उलंघित छुख शंकरय,	शख्ती चानि छुस लोर ।
ओगनिस दोगनाव कुनी वरय,	बु क्या करय ज़ोर ॥
चौरोंग जन मु फिरनाव गरु गरय,	यि बाँज्यगार छा सोर ।
दुबारु मु डाल प्यठ खार दरय,	बु क्या करय ज़ोर ॥
अन्दर चॉनिथ ग्यानुक गरय,	हावुम चूरिम पोर ।
तस मंज रूजिथ आनन्द बरय,	बु क्या करय ज़ोर ॥
‘कृष्णस’ मुचुराव बावुक्य बरय,	कुनी वरुतुरु तोर ।
युथ लरि ह्यथ च़ेय बसि अमरय,	बु क्या करय ज़ोर ॥



लीला 20

बो तनु मनय अर्पन बनय ।

नारायण श्रीमद् नारायणय ॥

भ्रम किन्य संसार सत्तरूप ज़ोनुम, द्वखसुय प्यठ स्वख मननुय मोनुम ।
 बासतम तु कास्तम मोहुन सनय, नारायण श्रीमद् नारायणय ॥
 च़ेय रोस्त नाश सोस्त ईशवरु सोरुय, मृग तृष्णा ज़लुचिय दोरु दोरय ।
 स्मृत पनुन्य दिम चुय ख्यनु ख्यनय, नारायण श्रीमद् नारायणय ॥
 यथ प्यठ ईश्वरु स्थित थव चुय व्यन, सोरुय गछिय पोन्थ सारुन क्रेञल्यन ।
 आसरु चोन थवु सनातनय, नारायण श्रीमद् नारायणय ॥
 संसारु कुलिस शरीर हर्दु पनुय, कामना संहित तथ कुलिस मूल मनुय ।
 कालु छटि सुत्य नटि मंज द्यन द्यनय, नारायण श्रीमद् नारायणय ॥

मूल संसारुक मन येलि गले, जामु बदलावनुचि आपदा चले।
मन गाल ज्ञानु खंड्ग सुत्य ज्ञानु घनय, नारायण श्रीमद् नारायणय॥
देह अबिमानन हनि हनि ज़ोलनस, दमु दमु क्रमु क्रमु शीन ज़न गोलनस।
स्मुरनि चानि निश कोरुनस छैनय, नारायण श्रीमद् नारायणय॥
थज़रुक ज़ल युथ कलु छावि पलनुय, ती करनोवनस ममता मलनुय।
समतायि हुंज ब्वद दितम सतु ज़नय, नारायण श्रीमद् नारायणय॥
अच्यतु सत् रूपु निरामये, भवु भय नाशस गछि चानि लये।
चानि प्रेयि दय बुति च़ेय ह्यु बनय, नारायण श्रीमद् नारायणय॥
विस्मृत कोरनस अविद्यायि दूशन, ब्रमु किन्य वश सौंपनुस पंच कोशन।
पंचु कोशातीत निरणजनय, नारायण श्रीमद् नारायणय॥
दिनम अपि रजनी सायं प्रातः, शिशिर वसंतो पुनरायातः।
कालुदेव करान ग्रास शनुय शनय, नारायण श्रीमद् नारायणय॥
मन म्योन मूहित कोर मुह मसनुय, बेहस कोरनस तृष्णायि रसनय।
मोह मद गाल व्वन्य हे मदसूदनय, नारायण श्रीमद् नारायणय॥
कामदेव कानय स्यज़रावानय, तस यस मनस आसि नु चोन दानुय।
सर्व आपदा नाश चानि दर्शनय, नारायण श्रीमद् नारायणय॥
जीवन छुय जीवन चॉनी स्मुरन, देवु भाव देवन करुन चोन कीर्तन।
उत्पत्त सारिचिय चानि यछुनय, नारायण श्रीमद् नारायणय॥
जीवन हुंदि जीवन देवु आदि देव, आनन्द दायक बांधव त्वमेव।
सर्व आत्मा रूपु सुदर्शनय, नारायण श्रीमद् नारायणय॥
हे निराकारय सर्व आदारय, चानि दर्शनु मुक्त बनु नरक नारय।
स्वखु रूपु म्वख हाव हे चिद्धनय, नारायण श्रीमद् नारायणय॥
सत् रूपु ज्ञान सत छम मलिन प्रकृत, संताप अँगनस ग्यव ज़न बु आहुवत।

कष्ट गाल संतुष्ट बन ज़नारदनय, नारायण श्रीमद् नारायणय ॥
 खो गया दिन दिन सो गया लडकपन, आगया योवन पीडा उत्पन्न ।
 तेरा अनुग्रह मेरा विनय, नारायण श्रीमद् नारायणय ॥
 आसुरी प्रकृत निर्मल करतम, श्वद प्रकृच्छ किन्य गोविंदु वरतम ।
 कर अभेद पानस सुत्य पूर्णय, नारायण श्रीमद् नारायणय ॥
 सारिनुय आत्मा पर प्रेमास्पद, सर्व आत्मा चॉन्य बख्ती स्वतः सेद्ध ।
 मूलस थफ छनु मूलु कौरनय, नारायण श्रीमद् नारायणय ॥
 सर्वात्मा चॉन्य एकात्म भक्ती, यस आसि तस भवु बंध निश मुख्ती ।
 'ठाकुर' बंदु भावु पेयि अर्चणय, नारायण श्रीमद् नारायणय ॥



लीला 21

पूर्ण पुरुषस सुरासुर विन्दनस, परमानन्दय परमात्मस ।
 तस रोस क्या छुम दप पान वंदस, परमानन्दस परमात्मस ॥
 कृष्णस जग यस तुँद बलि वोनय, चिनमय मंदिर द्वारिका तस ।
 सुदाम सालिग्राम सुय पूजि व्वंदस, परमानन्दस परमात्मस ॥
 द्वार द्वार पूजा म्वख अरविंदस, सर्गु अर्गु सुत्य ज़न अमृत रस ।
 पुष्प कनि आकाश पृथ्वी गंधस, परमानन्दस परमात्मस ॥
 ह्यनु व्यनु गौरिथ मन निस्पंदस, क्षनु क्षनु पनुन आर्चर वनुहस ।
 लगहा नु बेयि बेयि अग्यानु द्वंदस, परमानन्दस परमात्मस ॥
 वर येम्य जि निद्रा दिच मुचकंदस, कालयवनस सुय काल वनुनस ।
 पीताम्बर सुत्य लॉगिथ फंदस, परमानन्दस परमात्मस ॥
 वनुनचि मे यछ एकादश स्कंदस, बोज़नस तवुकिस परमु अर्थस ।
 मनु रोज़ि नेशचल बेहि मसनंदस, परमानन्दस परमात्मस ॥

जिन्दगी छूयफ दिथ रूज दिह जंदस, स्पर्श रोस वोत तस अपरस।
वाठ छुय तसुंदुय प्रथ पैवन्दस, परमानन्दस परमात्मस ॥०॥

स्वर येमि द्युतमुत छुम प्रथ बंदस, ग्वरु प्रणवय द्यान करि त्रानतस।
ब्रह्मा रेश्य तु यस गायत्री छंदस, परमानन्दस परमात्मस ॥
'परमानन्द' मेलि परमु आनन्दस, महिमा मेलनुक बनि मावस।
पानुवन्य यिथुपौठ्य रव छय इंदस, परमानन्दस परमात्मस ॥



लीला 22

दितम दर्शुन मे वर्शन तलु।
बेमारु बलु बु बेमार बलु ॥

रावुन रोव नु रावण तल, बु वन्दय कलु तु हावतम रोय।
गुपिथ गंगा बरतु नैर्मलु, बेमारु बलु बु बेमार बलु ॥
वज्जान शिवहू छु शंखु केय बलु, प्रज्जान छुम नार शशिकलि रेह।
रोटुम छलु अँशिक ब्रह्माण्डतलु, बेमारु बलु बु बेमार बलु ॥
पोरुम ओमकार सोऽहं तलु, कडँम पानस सोय कल मे।
हरन दोप पानु ब्रौठकुन वलु, बेमारु बलु बु बेमार बलु ॥
अचान ओसुस बु बीमस तलु, यछान ओसुस गोछुम यी मे।
तरुन तारु सोथि ईश्वर ज़लु, बेमारु बलु बु बेमार बलु ॥
गशुन त्रौवुम म्य संसार तलु, मशान आम सोर गंजरुम मे।
दोशान छुम कीवलु सुन्द फल, बेमारु बलु बु बेमार बलु ॥
वनान 'लसु शाह' वोवुम यी फल, ग्यवुम रातस द्वहस यी मे।
चोलुम वसवास म्य ऑईन तलु, बेमारु बलु बु बेमार बलु ॥

लीला 23

श्यामु स्वंदर जी लालु बना ।

खेलि बना राधायि सुत्य ॥

वेलु यिथ कोनु खेलुनि नेरव, नन्दलालस मेलुनि नेरव ।
 यि छु कीवल प्रयोजना, खेलि बना राधायि सुत्य ॥
 श्यामु सोन्दरस तस कामदीवस, राम, चन्द्रस श्री कृष्ण दीवस ।
 असि छय गामँच तस अर्पना, खेलि बना राधायि सुत्य ॥
 आश्चर्य छा मेलुन तसुन्द, जीवन सुति खेलुन तसुन्द ।
 पानु बँनिथ बिन्दराबना, खेलि बना राधायि सुत्य ॥
 प्रेयमु आनन्दु वीना वायन, तँथ्य मंज नाद थँदि थँदि लायन ।
 गछि स्वफल मनु कामना, खेलि बना राधायि सुत्य ॥
 द्राव पालुनि वादन सान्यन, फियुर दिनि कर्म फलन प्रान्यन ।
 पालुनि कँर सॉन्य पालुना, खेलि बना राधायि सुत्य ॥
 आयि जमुनायि जल तन नॉविथ, प्रोन मँशरॉविथ नोव प्रॉविथ ।
 शूबुन्य भूषण वर्दना, खेलि बना राधायि सुत्य ॥
 असि छय आमँचु असंख्य स्त्रिये, तृप्त आनन्द अमृत गये ।
 त्रैयि ग्वनु कँरुख प्रार्थना, खेलि बना राधायि सुत्य ॥
 वोसि यिथ कोनु विसव अँसी, यिथि रासु कोनु असव अँसी ।
 गेलि कुस मेलि नारायणा, खेलि बना राधायि सुत्य ॥
 ज्ञान गव अथि लगुन नु यमस, गँयि प्रॉविथ परम ब्रह्मस ।
 मोक्ष पद बख्ती कारना, खेलि बना राधायि सुत्य ॥

पोशि कुल्यन मंज दीव चाये, लॉगिथ बंबूर रूदिय छाये।
 चरण कमलन वरिना सना, खेलि बना राधायि सुत्य॥
 ऑस्य दीवता तति दर्शनस, पोशि वर्शनस हर्शनस।
 पोश वर्शन ति अवय छिना, खेलि बना राधायि सुत्य॥
 यूरमुत ओस कुकिलव ओलुय, पॅतिमि जन्मुक चोलुख होलुय।
 बोरुख लोलुय खवश गोख मना, खेलि बना राधायि सुत्य॥
 पनुनि शब्दु चु छुन थालुज जान, छस बवुसरु बु चेंय रोस वजान।
 यि छु जडम्बोड़ गुहयुल वना, खेलि बना राधायि सुत्य॥
 हृदयस मंज ह्यथ भगवत् चरन, ऑस्य तथ निथ सीवा करन।
 ब्रह्मस सुत्थी रूदुख नु ब्यना, खेलि बना राधायि सुत्य॥
 सनकादिक नारद मुन्नी, व्यास शुकदेव यी करुवनी।
 राधा कृष्णन कीर्तना, खेलि बना राधायि सुत्य॥
 लूक वनु वन क्या करि तिमन, ऑसि ब्रह्म ज्ञान गन्योमुत यिमन।
 कथु जि करनुच छख कल्पना, खेलि बना राधायि सुत्य॥
 रामु अमृत रस गछि चोनुय, बख्ती रस यॅमि नु चव रूद छोनुय।
 रूद छोनुय जन्मनि जन्मना, खेलि बना राधायि सुत्य॥
 रस उपदन कर सत बख्ती, गोपियव बख्तीवत प्राँव म्वख्ती।
 म्वख्ती छु बख्ती बिना, खेलि बना राधायि सुत्य॥
 द्रायि न्यरमल थॉविथ वोदंस, गॅयि प्राँविथ 'परमानन्दस'।
 कैरख कीशव आरादना, खेलि बना राधायि सुत्य॥



लीला 24

चौयशीथ लछ जन्म दारिथ ।

चिन्तामन देह अथि आव ।।

दीवन किन्नरन गंदरवन,
अविनाँशी पानु शम्भू,
आगरो चय कव लोगखो,

दुर्लब रटुन यहोय देह आव,
यमि शाये अथि आव ।
हा घरचे छाये ॥०॥

अश्वत्थ नोव कुल नाशु रोस,
मूल ह्योर कुन लंजि बोनकुन,
युसुय तथ ज्ञानि वीद तैमिय ज्ञोन,
आगरो चैय कव लोगखो,

वोन ज़नार्दनि धनुधरसुय,
पत्र वीद तथ कुलिसय ।
पौर्यज्ञान तस शिवसुय ॥
हा गरचे छाये ॥०॥

अमृत फल सुय कुल ह्यु दिवान,
हठ यूगियन कर्म कॉन्डियन,
रेयि पकुन तोतु संज्ञ वुफ,
आगरो चैय कव लोगखो,

राज यूगियन ति ह्योतये,
द्वलर्ब वातुन तोतये।
खँजुर कुलिसुय इथिये॥
हा गरचे छाये॥०॥

भ्रम काया माया छय,
ब्रम त्रॉविथ रोज़ ब्रह्मय,
सत्-चित आनन्द अद्वैतय,
आगरो चैय कव लोगखो,

पोज़ पोज़ टाठि बोज़,
सरु खर, करतु अँज्य दोह।
रोज़ि रोज़ बोज़॥
हा गरचे छाये॥०॥

नज़ि रटुन नज़ि त्रावुन,
युसुय अन्तर सुय बाहिर,
पॉन्य पान अरूप दय,
आगरो च़ेय कव लोगखो,

युथुय ओसुख त्युथुय आस,
युसुय स्वाँमी सुय दास।
साद वुन्य यूग अब्यास॥
हा गरचे छाये॥०॥

आत्म सौक्ष्मीं ताठि ज्ञानतो,
संसारुं किसं द्वयं रूपसं,
भू भुवः स्वः चैव निशं द्राव,
आगरो चैव कवं लोखो,

शरीर आव क्षण क्षण बंग,
यूग लयि चुय असंग।
छुख चु साँक्षी चेय न रंग॥
हा गरचे छाये॥०॥

जीव येलि गछि ईश्वरस लीन,
विश्व रूपस सुय बर्ता,
अविनांशी तस नावुय,
आगरो चैय कव लोगखो,

सुय ज़ीव अदु ईश्वर,
सुय हर्ता गव हर ।
अद्धय आनन्द सरु कर ॥
हा गरचे छाये ॥०॥

हर गरि तय बु कुसू छुस,
सुय बु निर्मल आत्मा ज्ञान,
पान्य पानय तति सुय गरि,
आगरो चैय कवु लोगखो,

सुय मरि घर परि युस,
मरि मोर जुव अमर गव।
वनतु ब्याख अदु रोज़ि कुस॥
हा गरचे छाये॥०॥

दिवसुरै मंजुगामि गोम,
बु नबा सुय युस बु वनान,
त्रेयन बवनन चूरिम दीवी,
आगरो चैय कवु लोगखो,

गुपिथ वनान रुवये,
मटन अंदर दिवये।
पुंछिम मौत्र पतु शिवये॥
हा गरचे छाये॥०॥

आंतु रोस्त्येन यूनीयन हव,
ग्वॅर शैछ्य हर गरि बोज,
येमि यूनीये वुछतः ऋशो,
आगरो चैय कव लोगखो,

छयपि छेयपरे गिंदु लो,
भूर भुवः स्वः छंड लो ।
जुतु लाला गव लो ।।
हा गरचे छाये ।।० ।।

रंगु लरि छुम रंगु रौस दय,
नाना रंग दारन सुय,
ज्ञानी कुस तस नेराकारस,
आगरो चैय कव लोगखो,

प्रथ वानु सुय रंगुरुय,
ना रंगु तस नु गुथरुय ।
सांरगी यस छि नेत्रुय ॥
हा गरचे छाये ॥०॥

चैनतुमनयू चिन्ताय मन त्राव,
खसुवुने वसुवुने द्रायि गंगा,
ज्ञानतु हरमुखु द्रायि गंगा,
आगरो चैय कव लोगखो,

चिन्तामन चित रूप प्राव,
हंसु द्वारै पूर्य त्राय ।
चय दिवये तन नाव ॥
हा गरचे छाये ॥०॥

शब्दु ब्रह्मस गच्छत लये,
खय त्राविय मन चित्त गव,
दय टोठयोम ऋशि पुत्रो,
आगरो चैय कव लोगखो,

सुय पुय कासि मनि खय,
चैनतन प्रथ शायि दय।
तस तु म्य द्वय रूज नय॥
हा गरचे छाये॥०॥

दय नोनुय ठोर पनुनुय,
मैरिथ परमु ज्ञान दय छु दिवान,
राम लंकायि रूद सन्वख,
आगरो च़ेय कव लोगखो,

मरनुक रस तिथि च्यय,
मरि मोर जुव अमर गव।
साक्षात दर्शुन हव॥
हा गरचे छाये॥०॥

वीद शास्त्र पर्य पर्य छिय,
अपरिस निशु नेरान छिय,
अज्ञानतो शब्दु ब्रह्मय,
आगरो चैय कवु लोगखो,

पॅरिमित्य जॅर्य गछान,
चोर वीद ब्ययि पुराण।
परमु पद दयि वथ मान॥
हा गरुचे छाये॥०॥

सहज विचार सहज पाठ यस,
भूतु विचार भ्रम जानतो,
मूर्खु भावय निश्चय कर,
आगरो चैय कवु लोगखो,

सुय ज्ञानि सहजानन्द,
विशय रस मूर्खानन्द।
श्वद नेरि सत चित्त आनन्द॥
हा गरुचे छाये॥०॥

निश्चल नित सहजानन्द,
बाशि रुस्तुय अविनाशी दय,
बोजि सुय बाश राजु यूगी,
आगरो चैय कवु लोगखो,

कुल अकुल गछि नाशस,
निशि ज्ञान वुछतु गाशस।
चैनवन स्व प्रकाशस॥
हा गरुचे छाये॥०॥

कामु क्रूधु लोबु मोहु स्यन्दुय,
यिरु सॉरिय जीव दॉरो,
वस्तु विचार क्षमा संतोश,
आगरो चैय कवु लोगखो,

गुति खोतु छुय गुतलुय,
अमि गुति कुस छु मोकलुय।
यस छु तस तार सरलय॥
हा गरुचे छाये॥०॥

लछिनोव दय नाना रूप,
रूप ना तस ना नावुय,
तत्त्व प्रकाश साक्षात्कार,
आगरो चैय कवु लोगखो,

द्राव जगंम तु थावरुय,
परम आत्मा सु अपरुय।
अंदर न्यबरय अँछयरुय॥
हा गरुचे छाये॥०॥

लीला 25

हे दयावानु मे ह्यव चोर चे कोताह प्रारे ।

असुवनि म्वखु वसुवुन ओश छुम मे दारे दारे ॥

फाकु दिय दिय गयि वाँसा येति क्याह हॉसिल आव,

चॉरिरस म्याँनिस व्वन्य टोठ, मनस यियि आराम ।

चि़तु शांती व्रत धारे नित्त द्वर्गत हारे ॥

असुवनि म्वखु वसुवुन ओश छुम मे धारे धारे ॥०॥

छिनु ठीकान पॅक्य पॅक्य कुनि अनेकन भवनन,

चंचल कर्यमुत्य अँस्य कुत्य येमि आवागमनन ।

कर्म फल सुत्य ह्यथ बारे यथ ग्रट अनवारे ॥

असुवनि म्वखु वसुवुन ओश छुम मे धारे धारे ॥०॥

रंग रंग डलनुक सामानु समय ह्यथ यिथ प्यव,

चेय शरण आयि पननि करतूतुक तसल्ला गव ।

हे दयावानु दया चॉनी म्य केंछाह यारे ॥

असुवनि म्वखु वसुवुन ओश छुम मे धारे धारे ॥०॥

कुत्य बदकार, दुराचार, परम्पार कॅरिथ,

कूत्य बदबक्त ग्वनाहगार ब यकबार वॅरिथ ।

कम गछिय क्याह च़ेय मेय तेय चॉन्य दया बोठ खारे ॥

असुवनि म्वखु वसुवुन ओश छुम मे धारे धारे ॥०॥

मंदछा छय ना कोर वॉसि म्य चाने चाने,

ज़ेवि किन्य कोर वनुना नतु महिमा कुस ज़ाने ।

सुय वनुनुय भद्दसर तारि अदु कस कर तारे ॥

असुवनि म्वखु वसुवुन ओश छुम मे धारे धारे ॥०॥

काल दिचु डालु फिरव मालु करव रुत्य रुत्य कार,
सुबह येलि फोलु तु पगाह आलछिकुय रोट दरबार ।
गँयि वांसा गंजरान द्येन असि वारे वारे ।।

असुवनि म्वखु वसुवुन ओश छुम मे धारे धारे ॥०॥
 चानि रायि कोर म्यं यि केंछाह ती थव मन्जूरय,
 नतु कुस ज्ञानि करुन्य भख्ती क्रेया गछि पूरय।
 काम क्रोदस लोभु मोहस मद सय कुस मारे ॥

असुवनि म्वखु वसुवुन ओश छुम मे धारे धारे ॥०॥
मृत विजि ध्यान थवख प्रान सु मेयँ सदांरे,
वारु 'कृष्णस' निर्मल करि भव सागर तारे।
पदम पत्रक्य पॉठ्य सरु मंज जल तस कँति लारे॥

असुवनि म्वखु वसुवुन ओश छुम मे धारे धारे ॥०॥



लीला 26

म्वकलाव मंज कौदखानय ।

हा दयावानय व्वलो ।।

वूनमुत मे छुम ज़ाला,
 छुम ज़लैरय ह्युव निशानय,
 न्यथु नैन्य सुंदि सायेबानय,
 त्राव रूदा आस्मानय,
 मंगुवुन छुस छुम नु बानय,
 बानु लदतम मानु सानय,
 म्वकुलावि चोन अनुग्रह।
 हा दयावानय व्वलो।।
 छुस बु तापु तच्चि वुडर मंज़।
 हा दया वानय व्वलो।।
 बडि दयि करतम दया।
 हा दयावानय व्वलो।।

प्रथ सौदा छु वानु वानय,	गछि आसुन चोन भाव ।
अदु मेलि पूर परमानय,	हा दयावानय व्वलो ।।
छुम स्यठाह बोड कारखानय,	अंद वाति चानि प्रेयमु सुत्य ।
सुत्य दीव सत्य नारायनय,	हा दयावानय व्वलो ।।
हिय बु लागय दानु दानय,	द्रय चै छय राधायि हुंज ।
यी मंगय ती दिम चु पानय,	हा दयावानय व्वलो ।।
सोम्बरिथ छुम सामानय,	वति लागुन चैय तगिय ।
अदु प्रावु आश्चर्य थानय,	हा दयावानय व्वलो ।।
छुख कुनिय रूपु भगवानय,	द्वैतय छुम मे बासान ।
त्रिबवुन सुत्य अग्यानय,	हा दयावानय व्वलो ।।
द्वारिका ज़न प्रथ मकानय,	वुछ बनोवुथ कृष्णु चैय ।
यि छु चोन, सोन छुय बहानय,	हा दयावानय व्वलो ।।



यँच काल वोतुम प्रारान प्रारान न्यबर बरस तल ।
व्यनथ करान थारान थारान त्वं देव दीन वत्सल ।।

थोकुस बु जन्म गारान गारान, व्वन्य मुचरावतमं बर ।
गोविंद गोविंद गोविंद गोविंद, गोविंद गोविंद कर ।।



लीला 27

बंद कोरनस बु बाशे,
 मोकलय चानि आशे,
 बाव सुत्यन यिमयो,
 मोह गटि हुंदि गाशे,
 कैलास कोह छारथ,
 सत चित आकाशे,
 जप शबनम दारे,
 कांह फोल गछिनु हाशे,
 शंभुनाथ सादय,
 सानि बोझ शुर्य भाषे,
 तार दिम मोह वावस,
 कड द्वख नावि पाशे,
 संसारक्य सरय बो,
 कास संकट विनाशे,
 'कृष्णस' आप चाँनी,
 शापन कर चु नाशे,

जगतुचि वालु वाशे ।
 शिव नाथु अविनाशे ॥
 हरम्बखु वॅन्य दिमयो ।
 शिव नाथु अविनाशे ॥
 दारनायि ध्यान दौरिथ ।
 शिव नाथु अविनाशे ॥
 पॅपि ब्योल तपु वारे ।
 शिव नाथु अविनाशे ॥
 आवाहनु नादय ।
 शिव नाथु अविनाशे ॥
 मायायि दॅरियावस ।
 शिव नाथु अविनाशे ॥
 हरु नावु सुत्य तरय बो ।
 शिवनाथु अविनाशे ॥
 बख्खुस पाप प्रॉनी ।
 शिव नाथु अविनाशे ॥



लीला 28

होश दिम लगयो पम्पोश पादन ।

हा सादन हृदि सादो हो ।।

यूगियन हुंदि यूग, प्रॉनियन हुंदि प्रान, ज्ञानियन हुन्दे ज्ञानो हो ।
चानि प्रसादु स्रुत्य स्यद छि तप सादन, हा सादन हुंदि सादो हो ।।

अच्युत चानि सुत्य च्यतु कुय चेनुन, नतु गछि मेनुन क्रँजल्लैन पोन्त्य ।
 प्रैयम् ज़ल छुय वुज़ान भावु नागरादन, हा सादन हंदि सादो हो ।।

ब्रह्मन जन्मस यिथ छुम नु ब्रह्म स्मृच, वुछ मु म्याँनि राक्षस प्रकृच कुन ।
चानि सुत्य भक्ति चॉन्य कॅर प्रह्लादन, हा सादन हुँदि सादो हो ॥

पूर्ण पुरुष छम चॉनी लादन, प्रणव पान वंदु होय च्वन पादन।
नादु ब्यंदु कन थव सान्यन नादन, हा सादन हुंदि सादो हो॥

व्यचार नैत्रन ज्ञान्य गाश अन छि अनय, हर हरम्वख च़ेय दिमहोय वॅन्य ।
निष्कल मन निष्काम राम रादन, हा सादन हुंदि सादो हो ।।

अनुग्रह चोन गछि आसुन सादन, क्या छु पापन कमन ज़्यादन प्यठ।
दय छुख क्षय कर सान्यन अपरादन, हा सादन हुंदि सादो हो॥

छोपि मंजय तस छोचरा नेरिहे, अदु कति बनिहे ज़ेछर यूत।
याद हय पेयिहेस वुनि छुस आदन, हा सादन हुंदि सादो हो।।

‘कृष्णय’ चाँनि कपटनि तल नेरिहे, अदु कति पॉरिहे जामु नॅव्य नॅव्य ।
पुश कति पेयिहेस होंज़न त रादन, हा सादन हुंदि सादो हो ।।

लीला 29

पाँछ दोह यावनुनि श्रावनुनि सूरी।

यी भूल त्यागु कस्तूरीये॥

मतु वुछ तु संसारुचि शोबायि कुन, मतु वुछतु देह सोनु लंकायि कुन।
वँद्य वँद्य गँयि लँद्य लँद्य लूर्य लूरी, यी भूल त्यागु कस्तूरीये॥

संसार वन छु कस लारि क्या यस छु तस, जेठुन छु ब्रेठुन बस कर बस।
येति प्यव सारिनुय पुशि पूर्य पूरी, यी भूल त्यागु कस्तूरीये॥

व्यवहारु बोझु सोस अनु दनु द्वार सोस, गाटुजार सोस ब्रह्म व्यचार रोस।
मूँय हिव्य गँयि हूँय जन वूर्य वूरी, यी भूल त्यागु कस्तूरीये॥

ज्ञानु वैरागुक बन अदिकॉरी, संकल्प विकल्प सॉरिय त्राव।
ममता पत थाव वथ युथ नु दूरी, यी भूल त्यागु कस्तूरीये॥

मोह जालु मंजु नेरनुक उपाया कर, राजु हंसुन साया त्राव।
अमरनाथचय जानवर जूरी, यी भूल त्यागु कस्तूरीये॥

क्रेयायि खोत छुय श्वद वासनायि फल, पूजायि खोत प्रेमस तु मायि फल।
'कृष्णस' रायि चानि आयि मनजूरी, यी भूल त्यागु कस्तूरीये॥



लीला 30

कृष्णा छुख मंज हनि हनि लोलो ।

व्वन्य यितु मनि रुखमनि लोलो ॥

सोज़य ब्रह्म जन्मुक मजिमयोर, पासा पैयिय यिख नतु छा मे ज़ोर ।
 व्यचार पुछि च़े सुत्य अनु लोलो, व्वन्य यितु मनि रुखमनि लोलो ॥
 यूगकिस बामस प्यठ मे खारुनाव, दोह तारु मजु रूद्य मे मु प्रारुनाव ।
 म्वख हाव तन लाग तनि लोलो, व्वन्य यितु मनि रुखमनि लोलो ॥
 रॉछ छिम च़े निशि वातनस, कुत्य ज़ोर निमु कंडिथ ह्यथ पानस सुत्य ।
 च़े रोस्स नतु क्याह मे बनि लोलो, व्वन्य यितु मनि रुखमनि लोलो ॥
 कामु क्रोद, लोब मोहुन शशपाल, ज़ेनुनि आव मे कस वनु हाल ।
 ज़ोर निम यिम ओरकनि लोलो, व्वन्य यितु मनि रुखमनि लोलो ॥
 शरणागत वत्सल छुय च़ेय नाव, धर्मस यथ नावस मु मंदुछाव ।
 वीरु धर्मय चोन व्वन्य ननि लोलो, व्वन्य यितु मनि रुखमनि लोलो ॥
 भक्त वत्सल छुख बौड़ बलुवीर, म्वकुलॉविथ निम कॅरहस गीर ।
 ऑर्चर म्योन च़े कुस वनि लोलो, व्वन्य यितु मनि रुखमनि लोलो ॥
 अँछि लोसम च़े वुछ्य वुछ्य यिम, दर्शुन दिम सुत्य पानस निम ।
 युथ नु ज़ांह अथुवास छ्यनि लोलो, व्वन्य यितु मनि रुखमनि लोलो ॥
 द्यानु जामुवन्तस कास मे हान, वासनायि जामवन्ती सान ।
 मनि मन नितु दाज कनि लोलो, व्वन्य यितु मनि रुखमनि लोलो ॥
 म्यानि संसारु यशुकुय मॉज मोल, तृप्त कर ज्यवराव मोकतुक ब्योल ।
 बख्ती कुलिनय म्वखतु छनि लोलो, व्वन्य यितु मनि रुखमनि लोलो ॥
 तन स्वख मन स्वख भाव प्रावुनाव, स्वख म्वख 'कृष्णस' कृष्ण म्वख हाव ।
 अख सुखिया अख सु बनि लोलो, व्वन्य यितु मनि रुखमनि लोलो ॥

लीला 31

हे दयि, बोझ म्याँन्य लोलु नाद, कूत गोमुत छुस बेदाद।
यिथि द्वखु मंज कर मे आज्ञाद, दयालु बोझ फरियाद॥

यि छु संसार ब्रम तु बौज्यगार, अंत ज़ोनुस नु काँसि अक्क्य ।
ज्यूठ सौदराह बे शुमार, तार ज़ोनुस नु काँसि अक्क्य ।
यथ नु अंत आसि तथ कँति आदि, दयाल बोज़ फरियाद ।।

मोह आवलुनि फाटुनोवनस, छूट छूट करुनोवनस,
गोस बाम्बरि थरु थरु छम, नरि जंगु वायिनोवनस ।
वांति लगनस दिम विवेक पाद, दयालु बोझ फरियाद ।।

दिह तु येंद्रिय छि परिणॉमी, मन छु यिहुंदुय स्वांमी,
अथ मनस पतु पतु दोरुन, स्व छय ब्वजि हुंज खॉमी ।
संकल्पन हुंज छस उपाद, दयालु बोज फरियाद ।।

चानि आशायि चैय कुन आस, छूट छूट संकट मे कास,
छुस चोन दास पैयिनय पास, हृदयस मंज कर मे वास।
ग्यानु अगनु ज़ाल म्यान्य अपराद, दयालु बोज़ फरियाद॥

संकल्पन तु विकल्पन, सुत्य गव म्योन वर्तन,
विवेक नॉम्य शिल वासन, चूरि नियहम हन हन ।
होश डालान छुम मे प्रमाद, दयालु बोझ फरियाद ॥

गोसु क्याह गौय क्याज़ि रूठहम, छा़यि छ्यप दिथ ब्यूठहम,
दूरि रूज़िथ लावि मूरे, नार ललुवुन थोवथम।
दिम दर्शुन मन गछ्यम शाद, दयालु बोज़ फरियाद।।

यस नेथ आसि सम च्यत मन, सुय ज़न गव सतज़न,
श्रुतियन मंज़ ती छि वखनन, यी छु वोनमुत व्यासन।
सुय छु तप ज़प स्वय छय समाद, दयालु बोज़ फरियाद॥

आसि करुवुन अज़पा ज़प, दारनायि मंज़ त्रावि डाफ,
अंतः किन्य दूर कोरमुत, संसारुक संताप।

छुस नु शुमार छुस नु तेदाद, दयालु बोज़ फरियाद॥

हे दयालो, दिह त्यागु विज़ि, नेर संम्बख पानय,
वृथ म्यौन्य पज़ि रज़ि सुत्य, थौविज्यन समादानय।

द्वर्लब छुम पानु युन याद, दयालु बोज़ फरियाद॥

नेर्वान पद दितु 'विषणस', चावतन विज्ञान रस,
रोज़ि अन्दकनि शुमारस, मनु कामनायि चलुनस।

हृदयस मंज़ रटि चॉन्य पाद, दयालु बोज़ फरियाद॥



लीला 32

यितु दितु दर्शन भस्माधरय, प्रारय कोताह काल।

हे शम्भो, रक्षपाल स्वामी, हे शम्भो रक्षपाल॥

हुर दितु दर्शुन मरु मरु कास्तम, आस्तम नॉली नाल,
लोलुचि बबरे तर छुम द्रामुत, गोमुत छुम यॅन्न काल।

दयायि ज़लु अथ बबरे सग दिथ, पनुनुय अथु चुय डाल॥

हे शम्भो रक्षपाल॥०॥

मोह सैंदि उदरस मंज़ छुस यिरय, येति छुम नु सुम नॅय तार,
तलु छुम ज़लुकुय नीजर हावान, प्यठु कनि छुम गटु कार।

नरि छम हजि तौय ज़ंगु छम बेसौर, किथु पॉठ्य मारय छाल॥

हे शम्भो रक्षपाल॥०॥

फुचमच्चि ख्वपरे मंज छुस प्योमुत, प्यठु छुम कर्मुक ताव,
 अँदरी अँदरी ग्रख छम आमच, बतु लैजि हुंद छुम छाव।
 शैहलनु खौतरु प्यठु कनि छखतम अख अमृत ज़लु ज़ाल॥
 हे शम्भो रक्षपाल॥०॥

ईश्वर, म्यान्यन पापी कर्मन कुस करिय शुमार,
 चुय छुख अनिनय अनि गटु कासान, चुय छुख बख्खानहार।
 येमि किन्य सौरिय छिय ज़े वखुनान दीनन हुंद दयाल॥
 हे शम्भो रक्षपाल॥०॥



लीला 33

हे दय, बोज़ कनय, ज़ेय रोस्त कस बु वनय।
 करयो अर्चनय, ज़ेय रोस्त कस बु वनय॥
 संसार आवलनुय यि छु सनि खोतु सौनुय।
 अथ मंज आस ह्यनुय, ज़ेय रोस्त कस बु वनय॥
 चोवनस मोह मसय रूदुम नु दानु ह्यसु।
 उन्मंत गोस तनय, ज़ेय रोस्त कस बु वनय॥
 हरुम मै कष्ट हन हन हरि हर छुख थवुम कन।
 ओर्चर आलवनय, ज़ेय रोस्त कस बु वनय॥
 सूक्ष्म नेर्मल करुम वृथ, प्रत्यक्ष पौठ्य बु वुछहथ।
 सुत्य ज्ञानु लोचनय, ज़ेय रोस्त कस बु वनय॥
 च्यतस सोय कल करुम पूर अज्ञानु गछयम दूर।
 हे टाठि नेरंजनय, ज़ेय रोस्त कस बु वनय॥

पादन तल बु मरय चॉन्य त्वता करय।

वारु वारु आर अनय, च़ेय रौस्त कस बु वनय॥

वासनायव नालु रोटहस संकल्पव बु च़ोटहस।

कोडहोस पनु पनय, च़ेय रौस्त कस बु वनय।

दितम सत् संग मे हरदम यियेम शाँती तु शम दम।

बैनिथ आज़ाद बनय, च़ेय रौस्त कस बु वनय॥

‘विष्णु’ थावतन समादान, च़ल्यम दयेवु दिह अबिमान।

मंगन छुय क्षनु क्षनय, च़ेय रौस्त कस बु वनय॥



लीला 34

यिमय पतु दिमय नाद।

क्यथो याद मे प्योहम॥

च़ुय छुख ज़पु यग्युक ज़प, च़ुय छुख तप वनुक तप।

च़ुय छुख सादन हुंद साद, क्यथो याद मे प्योहम॥

च़ुय छुख यूगियन हुंद यूग, च़ुय छुख प्रॉनियन हुंद प्रान।

च़ुय छुख सतुकुय संवाद, क्यथो याद मे प्योहम॥

च़ुय छुख ड्यकु, च़ुय छुख टिकु, च़ुय छुख दूर, च़ुय नज़दीक।

च़ुय छुख सारिनय हुंद आदि, क्यथो याद मे प्योहम॥

च़ुय छुख द्वख च़ुय छुख स्वख, च़ुय छुख परमु आनन्द म्वख।

च़ुय छुख कम च़ुय छुख ज़्यादु, क्यथो याद मे प्योहम॥

च़ुय छुख सादन हुंद संग, च़ाने तनि सफ़ेद रंग।

पम्पोश हिव्य छि चॉनी पाद, क्यथो याद मे प्योहम॥

वीदन मंज छुख साम वीद, दीवन मंज इन्द्रा ज़न।
 दैतन मंज छुख प्रह्लाद, क्यथो याद में प्योहम ॥
 रजो ग्वन छुख ब्रह्मा, सत्त्व ग्वन विष्णु भगवान।
 तमोग्वन गालान व्याद, क्यथो याद में प्योहम ॥
 धर्मीच लरि कर्मीकि बर, चाने सुत्य अचुन छुम।
 चुय छुख कुन तु चुय बुनियाद, क्यथो याद में प्योहम ॥
 येम्य युस ज़ोन सुय तम्य मोन, चुय छुख म्योन कर्मलो न।
 वनय च़ेय बु लानिन्य वाद, क्यथो याद में प्योहम ॥
 लोलुक्य साज़ प्रेमुक्य बंग, वायय सोज़ दमा बोज़।
 यितम योर ह्यतम दाद, क्यथो याद में प्योहम ॥
 'कृष्ण' दारनावुन द्यान, सुय युथ द्यान छु ब्रह्म ज्ञान।
 ह्यथ शिवराग दितु समाद, क्यथो याद में प्योहम ॥
 संकल्प त्रावि रटि मन प्रान, वासना गालि दियि समाद।
 चानि दयायि प्रावि बिंदु नाद, क्यथो याद में प्योहम ॥

✽

लीला 35

अंत कालुचि ज़ालु छम तमि हालु निश रछतम दये।
 दिम अभय वर छम यमुन्य थर कर दया मृत्युज्जये ॥
 भवसागरु दिवयि रंगस आयि कुत्य कुत्या गये,
 पार तारुम बोठ में खारुम द्वख नेवारुम मंज भये।
 दिम अभय वर छम यमुन्य थर कर दया मृत्युज्जये ॥
 आस्तम ख्वश कास्तम द्वख बास्तम संम्वख दये,
 मन में छुम आईनु सूरत साफ कोरमुत छुम खये।

दिम अभय वर छम यमुन्य थर कर दया मृत्युञ्जये ।।

किथु पाँठ्य जिंदुय मरव व्वन्य क्या करव वांसा गये,

मायि रॅट्य पुन्यव गरव बस, नाव मंज शाँती शये ।

दिम अभय वर छम यमुन्य थर कर दया मृत्युञ्जये ।।

वश छि गौंमुत्य संसारस यश कडनस ख्वश छिये,

ओरु योर अनतु ज़ोरु म्योनुय मन च मंज नेर्नय नये ।

दिम अभय वर छम यमुन्य थर कर दया मृत्युञ्जये ।।

द्वुन शरीरस वाँसि हुंद आराम वुन्यक्यन क्याह लये,

यथ दपन ब्रमा छु तथ थानस मे निम सत् ग्वर पये ।

दिम अभय वर छम यमन्य थर कर दया मृत्युञ्जये ।।

नि च म्याँन्यर म्योन लागन्य क्वस अथ लागथ छये,

पत म्वचक्रक सोरुय च पानय अथि कालस क्या यिये।

दिम अभय वर छम यमन्य थर कर दया मृत्युञ्जये ।।

शून्यकिस शून्यस वनय क्या तत सौरुन कांह क्या ह्यये,

कर तु नैर्वासिन च दासन मोक्ष मस प्रथ कांह चेये ।

दिम अभय वर छम यमन्य थर कर दया मृत्युञ्जये ।।

चलनावख जीवतक्य छूट युथ नु यिछ मूच्छा पेये,

फोलनावख यस च्यथ सुय भक्ति बागस फल खेयि।

दिम अभय वर छम यमन्य थर कर दया मृत्युञ्जये ।।

श्वेत दीपक्य हिव्य मनुशाय कर पालवुनि काल क्षये,

मोक्ष अमृत प्याल चाव अज्ञान रोस्त नेरामये ।

दिम अभय वर छम यमन्य थर कर दया मृत्युञ्जये । ।

गच्छ शरण 'कृष्णस' करिय अंतःकरण लय मंज प्रये,
लूक डेशन दय सौरन आलव करन जितेन्द्रिये।
दिम अभय वर छम यमुन्य थर कर दया मृत्युञ्जये॥



लीला 36

हशान जीवो देह दोह छु नशान ।
अमर पान कवु मशन छुय ॥

कालुनि चंजे देह यैलि प्यवान सु कुस सना युस मॅरिथ गव,
 वोथान बेहान भूगन बूगान, सुय यैलि गछान देह अदु प्यव।
 देहस च़े क्या हिशर छुयो जुव ज्ञान ईश्वरु अंश दो॥
 हशाम जीवो देह दोह छु नशान, अमर पान कवु मशन छुय॥०॥

जुव ज्ञानवनी छिय ज्ञान वानुय नतव यिम मूढु भावस गॅय,
नाना यूनियन देह आदिकन कुंबीपाक नर्कन बैयि।
पुण्य पाप कर्म शापन वॅलिमुत्य जन्म-मरन रूगन क्षय॥
हशाम जीवो देह दोह छु नशान, अमर पान कवु मशन ह्युय॥०॥

ईश्वरु अंश अँगु त्यंबुर, अग्यानु काठस संदुर्यजे,
काठस ह्यथ सोय अग्न त्यंबुर ईश्वरु अंश सांपनिजे ।
यि दय दनु, तस यस ग्वरु कृपा भ्रम यि संसार गंजुर्यजे ॥
हशान जीवो देह दोह छु नशान, अमर पान कवु मशन छुय ॥०॥

ग्वडु छुख वेश्य भूगन भ्रमन पतव विफल नेरन द्वख,
कालुनि सुँदे तिमय तरन सिद्ध यस ग्वरु चरन परम स्वख ।
महा चंचल मन लय करन स्वरान सु देव अंतर्मुख ॥
हशा ज़ीवो देह दोह छु नशान, अमर पान कवु मशन छुय ॥०॥

संसार यशस वश गछि बूतय, थ्यकन दीहक्य डबर दो,
छम लरि छुम राज्य, छुम नाव, गोत्र, छिम बंद बांदव मित्र दोस्त ।
थरि पोश बरु ज़न गँयि कालु छटि वॅर्य दयि तिम यिम अमर दो ॥
हशान ज़ीवो देह दोह छु नशान, अमर पान कवु मशन छुय ॥०॥

सतुक यश सुय येंद्रिय रँटिथ सौरान सु देव आत्म शिव,
त्वतान नेत्य तस दीवता सौरिय प्यथर सतु रेशॅय चंद्रम रव ।
अनेक अश्वमेद नरमेद कॅर्य तम्यँ त्र्यन भवनन हुंद स्वॉमी गव ॥
हशान ज़ीवो देह दोह छु नशान, अमर पान कवु मशन छुय ॥०॥

पतव कॉल्य देह येलि पेवन खोचन तिम टाठॅय रँछिमुत्य यिम,
चिंतायि हुंदुय यत्न करन यॉन्य दज़ि मोरु गरु गछन तिम ।
पतव तस सुत्य कुस छुय पकन कस यमु किंकर पचन दो ॥
हशान ज़ीवो देह दोह छु नशान, अमर पान कवु मशन छुय ॥०॥

तवय अमृत कथा वनय मरनु ब्रोंठुय हा मॅर्यजे,
मरनय मरुन गव दय सोरुन यूग लयि सुय दय सौर्यजे ।
सहज अमृत च़े गलि गले यम बयि भवुसरु तॅर्यजे ॥
हशान ज़ीवो देह दोह छु नशान, अमर पान कवु मशन छुय ॥०॥

युथ नो यि कथ वोन्य कॅन्य पॅत्य गछिय तु गछख गटे मंज,
युथनो यि वथ पॅकुन्य मशिय, कठकशि लगख छटे मंज।
यि कथ यि वथ पालनु प्रावख दय गरि मेलिय व्वटे मंज॥
हशान ज़ीवो देह दोह छु नशान, अमर पान कवु मशन छुय॥०॥

यिमव यथ कथि यछ पछ बरुख सत्संगु नावे तॅरिथ गॅय,
येमि बवसरय स्वरूप विमुख तिमय अकालु मरिथ गॅय।
देहुचि छाये लॅगि मोह माये पतव पानस फॅरिथ गॅय॥
हशान ज़ीवो देह दोह छु नशान, अमर पान कवु मशन छुय॥०॥

हरन तिमय सौरुख नु ईश्वर, गरूक ब्रम गोख असुर गॅय,
यिमॅ गयि शरन तिम वॅर्य हरन, यमु त्रासु कठिने उद्धार गॅय।
गर बार वर्जिथ अंदय रूजिथ कॉलुनि सेंदे अमर गॅय॥
हशान ज़ीवो देह दोह छु नशान, अमर पान कवु मशन छुय॥०॥

कालुनि चंजे गछान खंजे स्वंदर तु गंदर गछान दो,
अन्न पान चे कियुथ रोचान छुयो चे क्यथ मन अदु पञ्चान दो।
कालस हारि बयस तारि च़ु कोनु दयस सौरान दो॥
हशान ज़ीवो देह दोह छु नशान, अमर पान कवु मशन छुय॥०॥

कालुन दुर्बय सु क्युथ सना, ज़न्म कष्टय सु क्या गव,
ईश्वर अनुग्रह यस बाग्य ज़नस तति छुय पानय उदय शिव।
ज़न्म कस सनु सुफल गछे त्युथ कॅमि सना युथ अमृत चव॥
हशान ज़ीवो देह दोह छु नशान, अमर पान कवु मशन छुय॥०॥

यिमन भाग्य उदय करान स्वामी सौरान व्वन्दे मंज्र,
आकाशु पातालु तैरिथ गछान क्रीड़ा करान कंदे मंज्र।
संगरमालन शीनु यिथ जल द्राव जलय बिंदु सेंदे मंज्र॥
हशान ज़ीवो देह दोह छु नशान, अमर पान कवु मशन छुय॥०॥

यिम ज़नि आसान कुने कुने व्यापक तिम हनि हने मंज्र,
यस लोल ईश्वरु सुंद ग्वन मने तस कोनु तिम अदु वने छिय।
युस यी वने सुय तिय बने यिम सॉमनित सन्य व्वगने छिय॥
हशान ज़ीवो देह दोह छु नशान, अमर पान कवु मशन छुय॥०॥

मधुर वेह छुय मनुक वेश्य हा मित्र रूपी शथुर ज़ान,
युथ नो फसख लसख नु अदु मन लय कर दीव सौरुन ज़ान।
वेह गलि देंह येलि शुत्र गलन नेथ यूग अमृत चोनुय ज़ान॥
हशान ज़ीवो देह दोह छु नशान, अमर पान कवु मशन छुय॥०॥

यन्द्रेय अति विषय महावीरुय मन राज़ु महावीरन दो,
अख वीर दह सास वीर करि यिरय ब्योन ब्योन बल छुख त्युथुय दो।
अँकिसुय कामे सॉरिय छि लारन क्या तति उपाय ज़ीवन दो॥
हशान ज़ीवो देह दोह छु नशान, अमर पान कवु मशन छुय॥०॥

कुस सनु यिथेन वीरन मारे मन वीरु राज़स रटे कांह,
बैयिस कांसे बख्ती आसे, सु ज़न योदवय टोठे कांह।
वुज़मलि सुय रँट आकाश च़टे रवस रटे कांह॥
हशान ज़ीवो देह दोह छु नशान, अमर पान कवु मशन छुय॥०॥

नाथो बु नो रानिम मंगय मे रावनुन राज्य करे क्या,
यि कैह दीहस प्रारब्द आसे तथ मंज हरे तु हरे क्या।
ओसुम दुर्लब बन्योम सुलब स्वराज्य लोबुम व्वंदे मंज॥
हशान ज़ीवो देह दोह छु नशान, अमर पान कवु मशन छुय॥०॥



लीला 37

श्यामु स्वन्दर बेह स्वन्दर जाये।

वथुरय मन मथुराये लोलो॥

प्रान पवन सुत्यन मुचरनु आये, नव द्वार देह द्वारिकाये लोलो।
वृंच गूपियि च़ेय वुछने द्राये, वथुरय मन मथुराये लोलो॥

बालु रठ नालुमति सुत्य पालनाये, सानि भक्ति हुंजि क्वबुजाये लोलो।
निष्काम सिद्ध कर मनु कामनाये, वथुरय मन मथुराये लोलो॥

टोठ्योख गजेंद्रस कथ विद्याये, आहिरस कथ श्रद्धाये लोलो।
कमि श्रोचि ख्वश सॉपनुक शिबराये, वथुरय मन मथुराये लोलो॥

कीवल भक्ति हुंद कर मे उपाये, सुत्य पनुनि प्रेयमु तु माये लोलो।
वासुदेव वास कर मंज वासनाये, वथुरय मन मथुराये लोलो॥

राजु द्वारस चॉनिस बेख्याये, आदीन कर्महीन आये लोलो।
चारु कर मे आरुकॉचि सुशीलाये, वथुरय मन मथुराये लोलो॥

सुदाम जॉनिथ कर मे उपाये, वलुमुत छुस ज़िष्टाये लोलो।
छोचरुय म्योन पूर सृत्य पूर्नाय, वथुरय मन मथुराये लोलो॥

बानु रौस द्रामुत छुस बैख्याये, वूँचमुत दैव संपदाये लोलो।
बिक्षुकस त्राव राज़ हंसुन साये, वथुरय मन मथुराये लोलो॥

फलु दायक चानि खलु किन्य आये, अनुग्रह तोल पूरि त्राये लोलो।
वोवमुत कैह ति छुम नु कर्म बूमिकाँये, वथुरय मन मथुराये लोलो॥

शोज़ुराव संकट तु ग्रह दशाये, उल्ट समयस प्यठ ज़ाये लोलो।
फिरथुर कर चु सानि कर्म लीखाये, वथुरय मन मथुराये लोलो॥

भावु मुचुकन्द म्योन पनुनि यछाये, साव मंज़ु मोह निद्राये लोलो।
वुज़नाव मंज़ स्मृच ग्वफाये, वथुरय मन मथुराये लोलो॥

पानस पतु दोरनाव म्यानि राये, सिरियि रूपु ज़न पोत छाये लोलो।
ज़ाल मदु कालयवनस कायाये, वथुरय मन मथुराये लोलो॥

मारकँण्डी ज़न चानि आशाये, आयस मंगने चे आये लोलो।
कालस ग्रास कर बास जायि जाये, वथुरय मन मथुराये लोलो॥

आत्मा रामु निर्वृन्न हुंज़ि राये, सृत्य पख शांत सीताये लोलो।
दण्ड कर प्रवृन्न श्रुपनखाये, वथुरय मन मथुराये लोलो॥

गाल मोह रावनस तु क्रूद सेनाये, जाल लूबचि लंकाये लोलो।
विवेक मनु लक्ष्यमनुनि बाये, वथुरय मन मथुराये लोलो॥

सत् ग्वन प्रकृञ् कवशलाये, म्वख हाव सुत्य दयाये लोलो।
राज कर आनन्द अजोध्याये, वथुरय मन मथुराये लोलो॥

ज्ञान ताज दितु ध्यान दारनाये, सुत्य स्वतंत्रताये लोलो।
च्युत तख्तस बेह ह्यथ समताये, वथुरय मन मथुराये लोलो॥

होशयार रोज़ मंज़ योगु नेंद्राये, ह्यथ समदृष्ट एकताये लोलो।
तुर्या रूप मंज़ राजु सबाये, वथुरय मन मथुराये लोलो॥

अ॒ज्ञं तान्य॑ कु॒त्याह॑ गँयि॑ कु॒त्य आ॒ये, व॒तु॒गत॑ य॒थ या॒त्रा॒ये लो॒लो॥
ए॒क कु॒स वो॒त चा॒नि अ॒नेक॑ता॒ये, व॒थ॒रय॑ म॒न म॒थु॒रा॒ये लो॒लो॥

वीरु कॅर्य यिरु चानि विष्णु मायाये, बडि दय बेपरवाये लोलो।
यिम तॅर्य तु तिम तॅर्य चानि कृपाये, वथुरय मन मथुराये लोलो॥

मेति तार बवसरु आवलुनि जाये, सुत्य विवेक उपाये लोलो।
युथ दिह डंगु सोहम हम वाये, वथुरय मन मथुराये लोलो॥

केशव नाव ज़पनाव भावनाये, अज़पा ज़प मालाये लोलो।
मन नाव आत्म तीर्थचि जमुनाये, वथुरय मन मथुराये लोलो॥

राम चन्द्र शिव लगहोय एकताये, हौविथ चन्द्र कलाये लोलो।
मोह गटु कास म्यानि बोझ मीनाये, वथुरय मन मथुराये लोलो॥

सावदान मन कर यँजमन बाये, खसु द्रायि मंज प्रजाये लोलो।
वर तस व्वन्य वॉनी कन्याये, वथुरय मन मथुराये लोलो॥

विश्वरूप व्यूग ल्यूख कर्मु लीखाये, सुत्य नाना वर्णाये लोलो।
शक्तिपात दृष्ट थव प्यठ नेष्टाये, वथुरय मन मथुराये लोलो॥

कर्णेश्वर्यन हुंज गूर्य बाये, रास खेलुनि ननि द्राये लोलो।
थफ कर क्रशनुनि रागु राधाये, वथुरय मन मथुराये लोलो॥



लीला 38

चित्त गोम शांत चोन प्रेयम् अमृत चोम।

ओम् श्रीमत् नारायण नारायण ओम्॥

येमि संसारु मंज पतु लार्यम क्या, दय नाव स्वरनु रोस्त थावुम मु जांह।
चानि भक्ति भावु खोतु कांह परम स्वख छा, पतु बनु बिक्षुका ह्युव बादशाह।
ब्रोंठय मे ह्यसु फिर, गरि कुय ब्रम गोम, ओम् श्रीमत् नारायण नारायण ओम्॥

मनु वाजि नारायण नाव खनतम, संकटु गटि मंज अनतम गाश।
रायि मंज गनतम, मोक्ष पद वनतम, प्रकट बनतम परम आत्मा।
कैन्य हिश ब्बद छम थैन्य जन करतु मोम, ओम् श्रीमत् नारायण नारायण ओम्॥

न ज़ांह ज़्यवहा न ज़ांह मरु हा, नारायण नारायण करहा न्यथ।
चानि नावु सुत्य भव सागरस तरहा, ध्यान चोन स्वरुहा थव मे स्मृत।
हेश दिम व्यवहार राग द्वीश यिथ प्योम, ओम् श्रीमत् नारायण नारायण ओम्॥

हकरे बनि मंज अनगगुराह चाव, ह्यथ क्या चाव तोरु ख्यथ क्या द्राव।
कायायि म्यानि मंज छु आश्चर्यवत वाव, रूप छुस क्युथ क्या छुस स्वभाव।
न्यरलीफ द्रास पतु क्या ख्योम क्या चोम, ओम् श्रीमत् नारायण नारायण ओम्॥

योर अथु वॅहरिथ तोरु आख वॅटिथुय, कोलि मंज फॅटिथुय छुय होख पान।
क्या लारि दन सोम्बरिथ पान चॅटिथुय, धर्म व्यवहार कर खॅटिथुय पौढ्य।
जन्मस यिथ करुनाव दर्मुच कॉम, ओम् श्रीमत् नारायण नारायण ओम्॥

बॅड्य बॅड्य कार कॅर्य कॅर्य क्या प्रोव, थ्यकुनोवुम छुम बोड खानदान।
यशु पुछि मानु पुछि दोह रावरोवुम, लूकन होवुम दिह अभिमान।
ह्यसुफिर मे मोह मस च्यथ पान व्यसुरयोम, ओम् श्रीमत् नारायण नारायण ओम्॥

मृतु विजि अज़ामल गंजरावतम, मॅशरावतम जन्मुक्य करतूत।
यमु कैकर बुधि मतु बुछनावतम, नारायण नाव पावनावतम याद।

युथ छु त्युथ चेतु 'कृष्ण' प्रेयमु द्वद ओम ज़ोम,
ओम् श्रीमत् नारायण नारायण ओम्॥



लीला 39

करसय सँन्य पोशन माल।

अज यियि लाल सोनये ।।

मयखानुके हा कलुवालु,	असि मोय ह्योत चोनये ।
प्यालु तु प्यालु माला माल,	अज यियि लालु सोनये ।।
तसुंदुय मोय तु तसुंदुय प्यालु,	तसुंदे वानु कॅनुनय आव ।
खुँबचि कुंज तस हवालु,	अज यियि लालु सोनये ।।
दूरैर ति लोब कोताह चालु,	मूरे नार छुम ललुवोन ।
शुरय पान कहि संभाल,	अज यियि लालु सोनये ।।
येमि लायि लोलु स्वदुरस छाल,	तमि खोर लालि दुरखशान ।
सुय रुद आद्य अंत बहाल,	अज यियि लालु सोनये ।।
तेजोमय युस नूरानु,	विज्जि विज्जि वुज्जनावन गोम ।
करुसय शिल दिल हवालु,	अज यियि लालु सोनये ।।
कॅह गॅय रिंद कॅह रिंदान,	कॅचव रिंदव ज़ोलुय पान ।
कॅह गॅय अचिथ च्यवान प्यालु,	अज यियि लालु सोनये ।।
दागु सुय ह्योतुथ कुनि गुलाल,	बागुच हिय सु छाव्यम ना ।
नावस तन तॅय रटनय नालु,	अज यियि लालु सोनये ।।
कॅचव कौड मुलक दाल,	कॅचन निश हावान पान ।
कॅह गॅयि बरु ज़न गुलाल,	अज यियि लालु सोनये ।।
वॅल्य मे तॅमिस दि लोलुक्य जामु,	अज यियि श्याम स्वंदर सोन ।
सुय यियि 'वासुदीवनि' साल,	अज यियि लालु सोनये ।।



लीला 40

कर यियि मे कुन, गिंदुन दिमस चंदन हार ।

आद्य शक्ति शिव जीयस नमस्कार ॥

ओमय आद्य ओमस अंदर पञ्चाकार,

ओमुय जगत दोरिथ कीवल निराकार ।

ओमुक निर्णय कुस वनि ब्योन ब्योन छुस व्यस्तार,

ओमस पौर्य ओमस हर म्वख नमस्कार ।

आद्य शक्ति शिव जीयस नमस्कार ॥०॥

ओमय छु सार ओमुच स्मरण मनस दार,

सहज स्वरूप आनन्द प्रावक मुक्ति द्वार ।

भक्ति देव प्रमान थावख बनि उद्धार,

भक्ति सुत्य लय कर भक्तयो लबख तार ।

आद्य शक्ति शिव जीयस नमस्कार ॥०॥

मोहुचि नैदरि अन्दर में गछ गिरिफ्तार,

बोधाई अन्दर नैदरि गछतो खबरदार ।

स्योद वोथ नैदरि यन्द्रेय क्रीडस निश रोज़ खबरदार,

दिल थव डंजे लंजि छुय बिहिथ जानावार ।

बोलुनावुन लोलु पनने सुय ओमकार,

आद्य शक्ति शिव जीयस नमस्कार ॥०॥

आनन्दमय बनख प्यालु चावनय मालामाल,

भावनय सोरुय स्व मनि सोहम साहाकार ।

त्रैग्वन उल्लंगित नेर्गुण छु पानय निराकार,

अनतन लये मनस सुत्यन पनुन यार ।

आद्य शक्ति शिव जीयस नमस्कार ॥०॥

पान पनुन येमि कोर सही बै संसार,
बही तम्य सँज सही सांपुन्य बु सरकार।
'वासुदेव' मेलव देवाद्यदीवस बा वेस्तार,
सार सही आद्य अन्तस छुय दरकार।
पादि प्रणाम नाद बिन्दस छु बारम्बार,
आद्य शक्ति शिव जीयस नमस्कार॥०॥



लीला 41

फुलय लँजिम सहजकिस संजीवनस,
समय वॉतिथ कुनि भावुन मनुष्य ज़नस।
सहज पूजा करि कूँछाह नारायणन॥
श्रेयान धर्म छुम मे पनुन निस्त्रैगुणय॥०॥

गव कल्यान स्वधर्म मरुन पर धर्म ज़य ज़ान भये।
पर गव यि शरीर बोज़ दीवन ति छुय नशुवुनुय,
यि करि शरीर रंबुवुन योद तौय पश्यवुनुय।
आत्म दर्मी द्वख ना हरि तोशुवुनुह॥
श्रेयान धर्म छुम मे पनुन निस्त्रैगुणय॥०॥

स्वधर्मी युस पॉन्य पानय पानस अर्चान,
अनेक रूपस भेद ना तस कीवलुय मोचान।
स्वधर्म वेध्या तस बिना कौंसि नोव्यचुनय॥
श्रेयान धर्म छुम मे पनुन निस्त्रैगुणय॥०॥

घंटायि शब्द ठिनि रोस्तुय छुय वज्रवुनुय,
सदा शिवस निशु नेरान सुय बोझवुनुय ।
बो तन मोरुय ओरु योरय सुय रोजवुनुय ।।
श्रेयान धर्म छुम मे पनुन निस्त्रैगुणय ।।० ।।

मौदुर मसय ब्रह्म यूगक चे गलि गले,
दीर्ग रूगय संसारुक तवय बले ।
ननिय सु ईश्वर, निश पानस संदेह चले ॥
श्रेयान धर्म छुम मे पनुन निस्त्रैगुणय ॥०॥

सुत्य सुत्य दीहु दीशस अमर छु तँय,
 सु जुव म्योनुय युस कीवल ब्रह्म छु तँय।
 वाक् ईश्वरीय रूप नाव तसुँद सु पर छु तँय॥
 श्रेयान धर्म छुम मै पनुन निस्रैगुणय॥०॥

व्यंसेस न कुने यी बु आंसुस तिय हो मोचुस,
 प्रजायि आंगन बालु पानय रुमा नॅचुस ।
 युथुय खॅचुस त्रेन पोरन त्युथुय वॅछुस ॥
 श्रेयान धर्म छुम मे पनुन निस्त्रैगुणय ॥०॥

सु मा ड्यूँठवन नाव गोत्र वर्नु रोस्तुय,
युस दजि न तौय होखि नतौय छेयनन रोस्तुय ।
सु शांत प्रकाश सिरिं ज़न द्राव लोसनु रोस्तुय ॥
श्रेयान धर्म छुम मे पनुन निस्त्रैगुणय ॥०॥

सॉरी भय त्रॉविथ युस दयस रटे,
तस दय दर्शन सिरिं ज़न दियि मोहनि गटे ।
दय ललि ठोठयोस सॉरिसुय मंज़ तस केंह न मटे ॥
श्रेयान धर्म छुम मे पनुन निस्त्रैगुणय ॥०॥

सु देवदत्तस पोश लागस नित्य नाशु रँसितिय,
अकालु पोशन छख उत्पत आकाशु खँसिथय ।
ज्ञानान तिम जँनि सुकृति जॉनिम गाश सँसितिय ॥
श्रेयान धर्म छुम मे पनुन निस्त्रैगुणय ॥० ॥

स्वछन्द नावय ओस पानय सुय बॉलिये,
युस कंदि ओसुम छायि रुज्जिथ केंह कॉलिये ।
युधिष्ठयर ज़न चक्रव्रत द्राय सु कॉलिये ॥
श्रेयान धर्म छुम मे पनुन निस्त्रैगुणय ॥० ॥

स्वरूपय ज़ोन भगवान संतव राज़ रेशव,
अनेकू रूपी रूप तस द्रायि अरूप सु गव ।
सु शांत प्रकाश सुलभातीत सुलब लयव ॥
श्रेयान धर्म छुम मे पनुन निस्त्रैगुणय ॥० ॥

ब्रह्माण्डस दैयि वँन्य मे दिचॉम आगुर कँते,
सहस्रु दलय फोलिथ आव सुयोग वते ।
सुदर्शनस विना केंह नु लोबुम तते ॥
श्रेयान धर्म छुम मे पनुन निस्त्रैगुणय ॥० ॥

स्वतः प्रकाश जानवुनि दैय स्वतः सेद्धय,
स्वराज्य करान स्वदीशस सु श्वद ब्वदुय ।
सुधीर रोजु बोजु बोजु सु धर्म विधय ॥
श्रेयान धर्म छुम मे पनुन निस्त्रैगुणय ॥० ॥

स्वमाला छम स्व मने नित्य जपवनिय,
सपुद सु वाक सरस्वती छय वनुवनिय ।
ननिय स्वज्ञात श्वद स्फाटिक शांत शोलुवनिय ॥
श्रेयान धर्म छुम मे पनुन निस्त्रैगुणय ॥० ॥

सुज्जन आसान मस च्यवान छु स्वतन्त्रुय,
 सु बोध मये बोजुवनुय छु स्व मन्त्रुय।
 स्व भक्ति बिना भू क्रैया छय नु स्वतन्त्रुय॥
 श्रेयान धर्म छुम मे पनुन निस्त्रैगुणय॥०॥

सुवौदी कम केंह न मन्त्र कुस बनान,
 सु आनन्दु गन नॅदियव येतिय अमृत फिरान।
 सु भोग तिम नु च्यन यिमय अदु नु मरान॥
 श्रेयान धर्म छुम मे पनुन निस्त्रैगुणय॥०॥

सु बाशि करान नाशि रोस्तुय छुम सुय जुवुय,
 जुवुय शिवुय जुव ब्रह्मा विष्णु जुवुय।
 स्वतः चेतन युस प्रज्ञायि कुनुय जुवुय॥
 श्रेयान धर्म छुम मे पनुन निस्त्रैगुणय॥०॥

गुपिथ कर्म नेत्य करान सु कर्म वानुय,
 परामर्श छुख स्वभाव छिय धैर्यवानुय।
 सो गथ सो वथ भाग्य हीनन ना यिवानुय॥
 श्रेयान धर्म छुम मे पनुन निस्त्रैगुणय॥०॥

सौजॉन्य किनिय नित्य सोगथ दिवान दये,
 दुर्भिक्ष नु कुने तति सुभिक्ष सु समये।
 सुधैर्य सुसंग आद्य अस्त यथ नु समये॥
 श्रेयान धर्म छुम मे पनुन निस्त्रैगुणय॥०॥

अव्यक्त मूर्ती दृष्टमान अव सु चेननुय,
 परम विधान सु स्मृत छम सुदर्मवानुय।
 सुवॉनोहव केवल आनन्द स्वरूप निर्नय॥
 श्रेयान धर्म छुम मे पनुन निस्त्रैगुणय॥०॥

सुदृढ करान बु जन्मान्तरनुय स्वकर्म,
जगत मेथ्या ब्रह्म सुत्य सेद्ध गव धर्म।
सुधर्म फल द्राव सर्व खलु इदं ब्रह्म॥
श्रेयान धर्म छुम म्य पनुन निस्त्रैगुनय॥०॥

बु तस निशे सु मेय निशे दूरैरु नु क्षन,
द्वय हव गॅजिम कस वनय लक्षणय।
सु यूग कला सु पूजा सु प्रदक्षनुय॥
श्रेयान धर्म छुम म्य पनुन निस्त्रैगुनय॥०॥

सु शिव वने कस यियि सु तेज मये,
सु वासना यस साधकस नित्य सु बोद मये।
सु तेज गाशस अविनाँशी वुछ हृदये॥
श्रेयान धर्म छुम म्य पनुन निस्त्रैगुनय॥०॥

सु बूल्य करान सुत्य ब्रायन सु ब्वदु ब्रोरुय,
चिन्तामन देह पारिजातक कुल देव द्रायु।
यि केंह मंगान सेद्ध गछान तथ केंह नु तौरुय॥
श्रेयान धर्म छुम म्य पनुन निस्त्रैगुनय॥०॥

छय लछ संख्या नाव तसुंदि अलक्षय सु दय,
सु भक्तिमये स्थूल सूक्ष्म हियुव सु दये।
तस केंह नु अँन्दी ज्ञानतु संदेह दपान तस दय॥
श्रेयान धर्म छुम म्य पनुन निस्त्रैगुनय॥०॥



सहज नित्य आत्म तत्त्व सहजय ऊर्ध्वगति ज्ञान,
सहज नाद सहजय बिन्द सहजय अव्यक्तुय ज्ञान।
सहजुय शिव सहजुय शक्ति सहजुय परम गति ज्ञान ॥ सहज ज्ञान ०

सहज शब्द ब्रह्मय गव, सहजय ज्ञान 'अ' शब्दुय,
सहजय सुत्य वैचारय सहजय पर प्रसादुय।
सहजुय थान अमृत छुय सहज भक्ति छुय अलबदय ॥ सहज ज्ञान ०

सहजवाद गव संवाद सहजबाष्य गव सतसंग,
सहज बोलि कूंछाह तोलि कूंछाह ज्ञानि सहज बंग।
सहजुय सार्यकुय मूलुय सहजुय सारि निशि असग ॥ सहज ज्ञान ०

सहज ब्रोंठ सहज पतु सहजय यथ समयस छुय,
सहजव स्वयं नाथुय छुय सहजुय अद ईश्वर कुस।
सहजय आद्य अंत रोस्तुय सहजुय स्वरूप अरूप युस ॥ सहज ज्ञान ०

सहज तारक मत्रुय सहजुय संत मार्गुय छुय,
सहजय गव वेदांतय सहजय वेद अपारुय।
सहजुय तत्त्व बोदानन्द सहजुय जानतो भर्गुय ॥ सहज ज्ञान ०

सहजय वति नु लबुनुय, वॉतिथ हनि हनि छुय,
सहजुय नित्य अमृत दय सहजुय मंज मनि छुय।
दयस गारि सहजाचार नित्य नारान वने छुय ॥ सहज ज्ञान ०

सहजुय सिरियि खोतु छुय नोन त्युथ छु गंभीरय,
गंभीर सान सहजुक बाव नेथ सोरवुन छुय वीरुय।
वीर ना यिरु प्रल्यन छिथ त्वोत मान कुस करि वीरुय,
सहजुचि तारन्नि तूलिथ तस तु मै भेद रोजिनव केहं॥ सहज ज्ञान०

या सुय यातो बुय ना केहं नतु बुय योत सुय नव केहं,
सहज बाग अनन्त नाग ह्ययि तति ज्ञाग सहजानन्द।
सहज वारि सहज पोश फोलि फलु द्राव सहजानन्द॥ सहज ज्ञान०



लीला 43

स्वकलि निष्कल द्रायिसो कले।
व्वथ मनु हा कले शब्द जप ॐ॥

हेश थव वासनायि दान रोजि सम, मन प्रान सुत्य भासि सरु पवलि पम।
मान रट पानस विघ्न हान चले, व्वथ मनु हा कले शब्द जप ॐ॥

कस चावि लोलुकिस प्यालस मस, सुय करि तय ओरु चावन यस।
लोलुके दैरियावु ग्वडु पान छले, व्वथ मनु हा कले शब्द जप ॐ॥

मन ब्वद सुत्य छुय खूर तँय हम, सोऽहं रजि सुत्य पवन नावि लम।
अहं त्रॉविथ सोऽहं फोले, व्वथ मनु हा कले शब्द जप ॐ॥

सोऽहं हेकि सुत्य परमानस, येति तति प्यतरुन छुय पानस।
हेश थव वासनायि युथ नु मॉल गले, व्वथ मनु हा कले शब्द ज़प ऊँ॥

प्रानचे त्रकरे शब्द परमान, सार रठ बोज़ु सुत्य पूर तोलान।
सत चिय साक्षी लेखु अमले, व्वथ मनु हा कले शब्द जप ऊँ॥

शब्द बूल कुकिले गूविन्द गू, पोशनूल छिय ज़पान कृष्ण गूपियो।
श्रावुन सूरिथ कस्तूर कले, व्वथ मनु हा कले शब्द जप ऊँ॥

स्वन खसि कॅहवचि तारुचि तोल, तोलि सुय रचि रचि येम्य अहं गोल।
ब्योन ब्योन म्वल छुय स्वनस सरतले, व्वथ मनु हा कले शब्द ज़प ऊँ॥

यावन बागस पुलया छम, नाद खस सादान तेज बिंदम।
सत्य लोक समादि सहज प्रज़ले, व्वथ मनु हा कले शब्द ज़प ऊँ॥

ही फोज्य ज़ारन आरन आरवल, मसवल गुलाब बेयि यंबुर्ज़ल।
बंबूर छारान छुय यंबुर्ज़ले, व्वथ मनु हा कले शब्द ज़प ऊँ॥

मनुकिस द्यानस सू हम खानस, सहज संदानस स्वरनुय ह्युव।
दम ह्यु सम रोज़ अदु पम प्वले, व्वथ मनु हा कले शब्द ज़प ऊँ॥

कन थाव क्याह यज़ान टल्द ज़ीर बम, चैनतो आकलो दर नफीस दम।
कलि कलि कल गनेयम वुज़ मे शेशकले, व्वथ मनु हा कले शब्द ज़प ऊँ॥

यिय ओस रोवमुत तिय पनने गरे, गोरन द्रौपनम अँतिथुय प्रार।
ओरुत प्रारान ओश कर मेय येले, व्वथ मनु हा कले शब्द ज़प ऊँ॥

‘परमानन्द’ त्राव फिकरु तु गम, चिन्तामनु रँत्तु सुत्य ज़पुन ॐ।
बुय बुय त्रॉविथ दुय मनु गले, व्वथ मनु हा कले शब्द ज़प ॐ॥



लीला 44

निराला वास दय वरतन त्रिकालु, कर्ता भर्ता बालु ब्रह्मचारो।
भक्ति भावु कोसम पोशन करय मालु, बालु गोपालु नन्द लालो हो॥

प्रथं भूमिकायि मंजं शून्या वलये, अंतिं थ्यत करतु चित्तं भगवानो।
बुद्धि संयोगं साक्षात्कारं बास्तम, बालं गोपालं नन्दं लालो हो॥

विश्वेश्वर विश्व आत्मन भगवान्, विश्व रूप किन्त्य छुख व्वलसानो।
विश्व आत्म अनुभव दितु दीनदयाल, बालु गोपाल नन्द लालो हो॥

शुद्ध प्रग्यायि हृदि सत् संयोग भान, मध्य मायि मध्य भूत प्रज्ञलानो।
तेजस्व बालुक तेज दीप्ति विशाल, बालु गोपाल नन्द लालो हो॥

बुद्ध लय तन्मय विश्रान्ति स्थान, चित्त गण द्योतवुनि चित्त भानो।
चित्त शक्तयानन्द भोगी प्रज्ञाकाल, बालु गोपाल नन्द लालो हो॥

पश्यन्ते यत-वत् चैय योगेश्वर, तत् वत् वुच्छिथ चित्त स्वप्रकाशो ।
बाह्यान्तर तेज निर्भर त्रिकाल, बालु गोपालु नन्द लालो हो ॥

द्वादशांत वासु वासी चेतन भान, स्व सुखस्थानु स्वख भूगानी ।
स्व परानन्द आनन्दय सर्वकाल, बालु गोपालु नन्द लालो हो ॥

सहस्र दलु प्यठ स्वास्त ज्योतिष्मान, अंडु पिंडु अखंड दीप्ति मानो ।
अप्रमेय अविच्छिन्न दिन दिक्काल, बालु गोपालु नन्द लालो हो ॥

परात्परु गाशरु हुंदि गाशरु, सर्वज्ञेश्वरु बोधु भानो ।
क्षेत्रान्तर्यामि क्षेत्रज्ञ क्षेत्र पाल, बालु गोपालु नन्द लालो हो ॥

सत् सत्व तत् तत्त्व अच्युत ब्रह्म तत्त्व, नित्योदित चित्त विवस्वानो ।
ओंकारु रूपु परिपूर्ण निर्देश काल, बालु गोपालु नन्द लालो हो ॥

साराति सारु सर्व आत्म सर्व आदार, देवादि देव गो दाम नाथो ।
हे दातु शक्तिपातु करतम् उपराल, बालु गोपालु नन्द लालो हो ॥

सुज्ञानु सर्वदा सर्वतो भास्तम, क्षनु क्षनु भास्तम साक्षात्कार ।
कृपा करतम भगवानु कृपाल, बालु गोपालु नन्द लालो हो ॥

पादार्बिद अमृतु तृप्तावतम, प्रावनावतं परम आनन्द थान ।
पादु कमलन वदंय नेत्रन हुंदि लाल, बालु गोपालु नन्द लालो हो ॥

दासन क्युत ह्योत छुख बडि स्वभावय, शुभ दर्शन वर दिवानो।
विदुरस हाकु मेचि प्यठ आमुत सालु, बालु गोपालु नन्द लालो हो॥

प्रारान प्रारान वोतुम यूत काल, अनुकूल भगवानु दयालो।
ब्रह्मार्पण बोजतम् प्रातःकाल, बालु गोपालु नन्द लालो हो॥

श्रीदर सुर ग्वरु बालु दामोदर, श्री कृष्णु वासुदेव श्री रामो।
स्वख म्वख संम्वख आस्तम अन्तुकाल, बालु गोपालु नन्द लालो हो॥

निराला चानि संयोग प्रावुयना, सुग्यानु विग्यानु अति वृद्धा।
दय गोविंद 'दासुय' बनु त्रिक काल, बालु गोपालु नन्द लालो हो॥



लीला 45

चेतन स्वप्रकाश सर्वु आत्म ज्ञानी, सत् चित् आनन्द गन परमाशक्त।
नित्य सार संवित ज्योत द्योत वानी, कृपा कर माँज्य भवौनी॥

नित्योदित चित्त रव चु बासौनी, विश्व आत्मा चोन ज्योति स्फार।
सर्वान्तर्यामि भावु आसुवौनी, कृपा कर माँज्य भवौनी॥

या द्वादश अर्कु तेजमान दीपिका, स्वप्रकाश गन सत् चित्त प्रतिभा।
सर्व तेजोमय श्री महाराज्ञी, कृपा कर माँज्य भवौनी॥

दुर्गा अव्यय कर्ता अक्रिय, विश्वोत्तीर्णा विश्वरूप विश्वमय।
स्वयंभो सर्वतः जय वाँणी, कृपा कर माँज्य भवाँनी॥

परा पशयन्ती वयँखुरी मध्यमा, चोरि पादु एकांग शुद्ध विद्या।
अनुभव मात्रा शिव मर्शिनो, कृपा कर माँज्य भवाँनी॥

सम शुद्ध चेतन निस्त्रैगुणी, स्वर ग्वरु देव देव चिन्मयी।
क्या करु न्यशब्द अस्त्वत बु चाँनी, कृपा कर माँज्य भवाँनी॥

शुद्ध बोध थावतम विध संज्ञानय, सोहं शब्दार्थ विज्ञानय।
पूरार्ण हता स्वरूप आसवाँनी, कृपा कर माँज्य भवाँनी॥

ब्रह्मार्पण एकांत थ्यत थावतम, अनुसंदावतं सत् चित्त ज्योत।
सुज्ञानु विज्ञानु सैद्ध परः राँनी, कृपा कर माँज्य भवाँनी॥

अनुग्रेह चोन बनि यस बाग्यवानस, सुय गछि संम्वख चित्त भानस।
गलि अदु अज्ञान मोह मद मानुय, कृपा कर माँज्य भवाँनी॥

अनुग्रेह किन्य असि अंधकार कासख, यान्य तान्य भासख सर्वतोमुख।
सर्व आत्मा पर ज्योत द्योन वाँनी, कृपा कर माँज्य भवाँनी॥

आदनु मंजिमय पर नाद सादन, अँन्य नादन हुंद छुम नु अबिलाश।
वरु चानि तरु करु परु भक्ति चाँनी, कृपा कर माँज्य भवाँनी॥

बिधुक द्वार चोन चाव भिक्षाये, शिव निर्वाणुक्य अभिप्राये।
दितु दान बौड दातु छख आसवौनी, कृपा कर मौज्य भवौनी॥

चानि शक्तिपात वातु ब्रह्म निर्वासन, परम-स्थानस करु निवास।
भक्तियन छय मुक्तिदा दया चौनी, कृपा कर मौज्य भवौनी॥

क्षनु क्षनु चरनामृत चोन चमु हा, शमहा चान्यन पादन तल।
शाप पाप शूक संताप कासवौनी, कृपा कर मौज्य भवौनी॥

संम्वख सुज्ञानु अनुभव थावतम, हावतम सुविचारु भवुसरु तार।
प्रारान आश्रित आशि छुस चौनी, वृपा कर मौज्य भवौनी॥

सूतक मृतक भय निवारतम, भवु सागरु मंजु बौठ मे खारतम।
ऑरत्यन ऑर्चर छख कासवौनी, कृपा कर मौज्य भवौनी॥

आनन्द मूर्ति अमृतेश्वरी, अमरावती सरस्वती।
द्वंद दूश कास्तम विद्यावासिनी, कृपा कर मौज्य भवौनी॥

हिंगुला ज्वाला मंगला कौली, पिंगला त्रिपुरी ह्रींकारी।
राज राजेश्वरी परः राजुरौनी, कृपा कर मौज्य भवौनी॥

कठिने भवुसरु मतु मंदुछावतम, प्रावनावतं परमु आनन्दु थान।
कृपा कटाक्षु तार दिवुवौनी, कृपा कर मौज्य भवौनी॥

लीला 46

श्री राज्ञी स्तोत्रम् ।।

स्मृतैर्वान्तर्गतं पुंसां
जयत्येषा महाराज्ञी
त्रिजगन्मोहिनी ईडये
नमोऽस्तुते महाराज्ञि
शेषाशेष मुखागण्य
सुरासुर नर सिद्ध
चराचर जगत्सृष्टि स्थिति
म्वतः कल्पलतेऽनल्प
ब्रह्माविष्णु महेशान
भक्तानां भीम संसार
निर्गुणे निष्क्रये नित्ये
राज्ञीस्तोत्रमिदं पुयं
असंशयमशेषेण

हरन्तीं सकलं मलम् ।
भक्तानां काम दायिनी ।।
मिहिरी भूत सद गुणे ।
पाहि मां शरणागतम् ।।
गुणे गुण गण प्रिये नमो ०
वन्दनीय पदाम्बुजे नमो ०
संहार कारिणी नमो ०
वाङ्मार्धुय जितामृते नमो ०
बन्दिते गिरिनन्दिनि नमो ०
पारावार प्रतारिणि नमो ०
सच्चिदानन्द रूपिणि नमो ०
त्रिसन्ध्यं प्रयतः पठेत् ।
वशयेदखिलं जगत् ।।



लीला 47

मे संतन हिश नु छय शांती न शम दम ।
चु छुख पानय बु कुस छुस कास्तम ब्रम ।।

द्या सागर वनन छिय लूक साँरी,
द्याये हुंदि समन्दर छिय चे जाँरी ।
द्या हय मेय करख अथ क्या गछिय कम ।।

चु छुख पानय बु कुस छुस कास्तम ब्रम ।। ० ।।

मे जन्मन हंदि महा अपराद हरतम,
दया करतम म्य मूर्खस लोल भरतम ।
प्रेयम दिम पूर त्युथ युथ दूर हैयिय यम ॥

चु छुख पानय बु कुस छुस कास्तम ब्रम ॥०॥
फस्योमुत छुस बु मंज संसारु जालस,
फक्त छम चॉन्य आशा अन्त कालस ।
कँडिथ निम जालु मंज बख्शुम परम शम ॥

चु छुख पानय बु कुस छुस कास्तम ब्रम ॥०॥
बु कोताह रोजु येति ऑखुर मरुन छुम,
कठिन संसारकिस सौदरस तरुन छुम ।
नितम मंज नावि प्रेयमुचि स्योद रँटिथ नम ॥

चु छुख पानय बु कुस छुस कास्तम ब्रम ॥०॥
व्वपाया कर म्य युथ मन रोजि नेशचल,
मलिन बुद्ध छम बनेमुच बनि नेर्मल ।
करुम अंतः करन शुद्ध प्रावु उपरम ॥

चु छुख पानय बु कुस छुस कास्तम ब्रम ॥०॥
बु छुस अंदर न्यबर छ्योट खोट क्रेया छम,
फकत बोठ खारु वन्ये चॉनिय दया छम ।
गंगा जल ह्युव बनावुम श्रूच उत्तम ॥

चु छुख पानय बु कुस छुस कास्तम ब्रम ॥०॥
शरीरस प्यठ नजर छम छुस बु अनजान,
यछन छुस मान मॉनि तथ मांसुक पान ।
मे जानुक सिर्यि मंज मोह रॉच बनतम ॥

चु छुख पानय बु कुस छुस कास्तम ब्रम ॥०॥

यशस ह्यथ छम वैशय भोगन हंजुय प्रय,
दया करतम दया करतम चु छुख दय।
पाखंडस काम क्रोदस नाश करतम॥

चु छुख पानय बु कुस छुस कास्तम ब्रम॥०॥
शरुचि शोरुह बने छम पाप प्यँच सुत्य,
कोहा हिश बँड छि खोचान अथ वुछिथ कुत्य।
च हावुस ज्योति रूप अथ वोथि जम जम॥

चु छुख पानय बु कुस छुस कास्तम ब्रम॥०॥
च्य छय द्रुय पननि कुनिरुचि म्य द्वयि कास,
च्य छय द्रुय पननि बजिरुच जु मु ज़ाँह बास।
च्यतस गनतम तु ज़न्मस ज़ाँह मु अनतम॥

चु छुख पानय बु कुस छुस कास्तम ब्रम॥०॥
कुनुय ऑसिथ च नाना रूप किन्य द्राख,
चै ह्यु ग्वनवान नैस्त्रैग्वन छु कुस ब्याख।
कुनिय तत पदु सुत्य शोज़रावतम उत्तम॥

चु छुख पानय बु कुस छुस कास्तम ब्रम॥०॥
पँतिमि समये यमस निशि मोकलावतम,
च पानस ह्युव बनावुम मोक्ष द्यावुम।
असँवनि म्वख फोलनावुम मे कोसम॥

चु छुख पानय बु कुस छुस कास्तम ब्रम॥०॥
छु सागर चानि कुन्यरुक सौन स्यठा ज़्यूठ,
अँनिथ दिम मोख्तु नतु खारुन गछियं क्रूठ।
बु कथ सुत्य लाग हम किथ पॉठय दिम दम॥

चु छुख पानय बु कुस छुस कास्तम ब्रम॥०॥

हवा ज़न बन बसंतुक अन चु मे बोश,
फोलन बुद्धि योगु बागस होशु किय पोश।
तिमन पोशन प्यठुय छुख शांत शबनम॥

चु छुख पानय बु कुस छुस कास्तम ब्रम॥०॥
बु बुय करनुक मु थावुम कांह ख्याला,
न बाष्य दिह दिहुच चाला तु डाला।
गल्यम आवागवन रोज्यम नु कांह गम॥

चु छुख पानय बु कुस छुस कास्तम ब्रम॥०॥
ज़गत किथ दरिहे कुस कार करिहे,
समय ओदीन कुस ज्यविहे तु मरिहे।
छु ठहराविथ अमिस चाने सतुक थम॥

चु छुख पानय बु कुस छुस कास्तम ब्रम॥०॥
अगम अपार छुख निर्गुण निराकार,
मे केँछा यार कर भवसागरस पार।
केरिथ सोरुय मे थाव लोब निरालभ॥

चु छुख पानय बु कुस छुस कास्तम ब्रम॥०॥
अविद्या कास्तम न्यथ बास्तम सत,
ज्ञानुच स्थित दितम सोय छम परमुगथ।
अचित थाविथ म्य पत मोचुरावतं ओम॥

चु छुख पानय बु कुस छुस कास्तम ब्रम॥०॥
चु सन्वख रोज़तमं अदु चाल स्वख द्वख,
खसि बोठ मोखु सत् सागर दियेम ग्रख।
रेटिथ निख होश दिहु मंज़ चेनि क्या चम॥

चु छुख पानय बु कुस छुस कास्तम ब्रम॥०॥

लीला 49

वैलिव पूजा करव नेष्कल,

कलु माला धरुसुय, हरु कलु माला धरुसुय ।

क्षय करि सान्यन पापन, नाश करि सान्यन शापन ॥

जय गंगा धरुसुय, हरुसुय शंकरसुय ॥०॥

ओम् शिवु शिवु शिवु शंभो ।

ओम् हरु हरु हरु महादेव ॥

क्षय करि सान्यन पापन, नाश करि सान्यन शापन ॥०॥

सुय छु अजर सुय छु अमर ध्यान पर परात्पर,

तस छि ज्ञानन यूगीशवर आश्चर्युक आश्चर ।

ज्ञान गाश अनि योग नेत्रन वुछनावि आश्चरसुय ॥

क्षय करि सान्यन पापन, नाश करि सान्यन शापन ॥०॥

त्यागु वैराग च्यत सौस्त थावि, करनावि ब्रह्म वैचार,

सतचे वति पकुनॉविथ ज्ञाननावि ब्रह्मय सार ।

आत्म बोदुक जल वुजनावि, ब्रह्म भवुसर सरसुय ॥

क्षय करि सान्यन पापन, नाश करि सान्यन शापन ॥०॥

ह्यथ गछि दिहु अभिमानस अज्ञानस गंडि नार,

अच्युतचे स्थिरतायि सुत्य वथ हावि ब्रह्म आकार ।

तमि ग्वनु ब्रह्मवित् सादन, पादन अँछ्य जरुसुय ॥

क्षय करि सान्यन पापन, नाश करि सान्यन शापन ॥०॥

संसार यश भ्रम मॉनिथ, मन किन्य थावि उदास,

यूग ज्ञानु ध्यान सौस थावि बस्ती मंज वनुवास ।

चिन्मात्र ओत म्वचरावि मंज क्षनु मात्रसुय ॥

क्षय करि सान्यन पापन, नाश करि सान्यन शापन ॥०॥

अंतकालुच ज्वाल कौसिथ चित्त थावुनावि नैष्कल,

चंदुन चंद्रम कौफूर ह्युव मौख सुय हावि शीतल ॥

सानि पालनुचि आज्ञा दियि अभयस तु वरुसुय ॥

क्षय करि सान्यन पापन, नाश करि सान्यन शापन ॥०॥

दर्मु ज़ोर दियि तोर मुचरावनावि श्रद्धायि बरुसुय,

ह्योर खारि चूरिमिस पोरस बसनावि शान्ती गरुसुय ॥

कर्म फलकुय बोर लौचरावि दिह ब्रम किस खरुसुय ॥

क्षय करि सान्यन पापन, नाश करि सान्यन शापन ॥०॥

सिर्यि ह्युव प्रत्यक्ष बासिथ नित्य सन्म्वख औसिथ,

सतचे वति पकनौविथ अज्ञानु गटु कौसिथ ॥

आत्म बोदुक दीप ज्वालि थावुनावि मंज मरुसुय ॥

क्षय करि सान्यन पापन, नाश करि सान्यन शापन ॥०॥

वनु कौचाह छय स्त्रियि, पुत्र, प्रिय अथ दपान मायाजाल,

यिथि ज्वालु मंज डालु दिथ कडि चटुनावि मोहु जंजाल ॥

अतुलास वलुनावि सन्यास ब्रॅच थावुनावि मंज दरुसुय ॥

क्षय करि सान्यन पापन, नाश करि सान्यन शापन ॥०॥

कर्म हीनस दोग्गथ हरि दरिद्रस करि नाश,

पालना सौन्य छस मटि, गटि मंजय अनि गाश ॥

आर यियनस तारि कृष्णस यथ भवसागरसुय ॥

क्षय करि सान्यन पापन, नाश करि सान्यन शापन ॥०॥



लीला 50

वाक्य

‘वयकुन्ठ वॉसी श्री टिकु काकजी’

क्या सन गोम तथ संवित स्वखस, बो वनय यौदवै पौज वनुखय॥
भ्रमरोवुख अम्य रतन तु माज़न, अमि रतुच तु माज़ुच मो भर प्रय॥१॥

भोग बौछरन छलु छांगुरि कोरुनख, लांगुर्य लोगुथ ऑसिथ राज़य॥
प्रकाशमान पान पानु निश खँटरोवुथ, पानु फाटुनोवुथ रत तु माज़य॥२॥

आयस कदर नाव ज़ोनुथ दानय, शीनु मान्य ज़न बानु व्यगलिथ गव॥
ब्वज़ुवान वन तु योद ब्वद क्या चॉनी, ज़ोनुथ नाव व्युत्थानय भैरव।३।

दिह छुय आयुकिस आँमिस पनस, अलोंद, करान छुख शुर्य बाशे॥
यि कोरूम तुयि कुरु मरिके म्यान्यर, कव, लोगुख वासनायि ज़ाल वालवाशे॥४॥

गुरु गुरु करान हरु हरु मोढुयो, मरु मरु कोरुथ अमर पानय॥
अस्थिर वैशय वासना ब्रथ दोरिथ, मूढ कोन रूजय स्मरन दानय॥५॥

पेंज कल त्रौवुथ पर कल प्रौवुथ, अँछ्य गाशरौविथ सपनुक अन्द॥
वेद्या सौविथ मोह वुज्जनाँविथ, द्रढ संकल्पन कॅरिथ व्वन्य सॅन्द॥६॥

मूढव बूज्य सतुचिय कथा ज्ञन, पामुरव ग्यवनुच कथा ज्ञन॥
रात दोह रावरोवुय तिमव वृथा, शोंगि शोंगि बीठये म्यँचि दथा ज्ञन॥७॥

स्यदखय स्येदिय सोरुय पानय, अथि यियि यि केंह छुख छंडान॥
 रावनय रावरुथ गाह ज़न माने, ज़ानु व्वलुसोवथो यि अज्ञान॥
 ज़ौर कवु बन्योख बोज़नुकि ब्रमय, ज़ाननुकि भ्रम कवु रॉवरुथ ज़ान॥८॥

ओं नमस्त्रिपुरसुन्दरी ।।

श्री शारिका लीला-लहरी

(पाँचम-तरंग)

लीला 51

प्रये चाने दयो नेरय ।

वु फेरय दरदु नयि हू हू ।।

ह्यतन सत्येन पनुन रहँबर,	गछख कोत रठ चु पननुय बर ।
न्यबर मो नेर चु अछ अंदर,	दिलुक दिलबर छु सोऽहंसो ।। प्रये०
चु अछ अन्दर पनुन वुछ ओल,	चु पानय छुख गरुक गरुवोल ।
ग्रटै फेरान महीन नेरान,	बु ज़ोर आब सोऽहंसो ।। प्रये०
छय गफलत गट गाशस ठोर,	तमिय गाशो देंरिथ छुय मोर ।
शबस खरसान दोहस वसान,	शबुय रोज़ान छु सोऽहंसो ।। प्रये०
छुखय रिंदान कतरस प्यठ,	छु कतरयव, कुलि देंरियाव च्यथ ।
छु देंरियाव दुरि अरफानय,	गुहान पानय छु सोऽहंसो ।। प्रये०
रबुय छुय सब सबुय छुय रब,	सपन रिंदान बाज़ानय ।
छु हॉसिल बा सफा वॉसिल,	छु हॉसिल आशकै हो हो ।। प्रये०
हुवल अवल हुवल आखिर,	हुवल ज़ाहिर हुवल बॉतिन ।
हुवेदा शाहि शाहनय,	वज़ान पानय छु सोऽहंसो ।। प्रये०
अथव पनन्यव ल्यूखुम नामय,	मबुंन्द रामय पनुन अवहाल ।
यि केंह वव्याम ती ज़ामय,	मे अरामय छु सोऽहंसो ।। प्रये०



लीला 52

रामन सिद्ध कॅरुय म्यान्य मनु कामन ।

दामन रटस न्यथ प्रबातन तु शामन ॥

महागणीशन ऋषि सिद्धि नाथन,

नादन म्यान्यन येलि थोवनम कन ।

प्रज़लोवनम तेलि गटि मंज़ सिरियि ह्युव शुद्ध मन ॥

दामन रटस न्येथ प्रबातन तु शामन ॥०॥

लूख सरयि मंज़ सरि गरदान ओसुम,

वृञ लूकन निश हर्षिदेव गोमुत ।

ओसुख भक्त म्वकुल लोगमुत व्वलामन ॥

दामन रटस न्येथ प्रबातन तु शामन ॥०॥

शिव शक्ति पोश फोलि ज़ीवन मुक्ति,

फल द्रास अबिन्न अर्थ रस नाशि रोस्तुय ।

कीवल हृदयस नेष्कल जामन ॥

दामन रटस नयेथ प्रबातन तु शामन ॥०॥

भक्ति भूमिकायि गुरु युक्ति बीज़ वोवुम,

वेद थलि मंज़ सांख्य सग सगरोवुम ।

सिदांत सोंतन तेलि कॅडिस बामन ॥

दामन रटस न्यथ प्रबातन तु शामन ॥०॥

शांती सीतायि मल गोल भूमिकायि,

हंसो सोहम् चरनन चर्यायि ।

न्यथ लोगमुत आमुत ठीकिथ लक्ष्मन ॥

दामन रटस न्यथ प्रबातन तु शामन ॥०॥

द्रौपदी कॉली पापु ज्ञाय खॉली,
कॅरमुच कुरूक्षेत्र शुद्ध यॅच कॉली।
क्रशुनन्य बहॉली यॅछ बलरामन॥
दामन रटस न्यथ प्रबातन तु शामन॥०॥

अर्जनस सुदर्शनु मुक्ती साँपन,
गीतायि न्यथ गावान गीत क्रशुनन्य।
स्वॅय कलु यॅछमुच नैष्कल सुदामन॥
दामन रटस न्यथ प्रबातन तु शामन॥०॥

राजु हंसु सुंद सायि प्यव मनु मथुरायि,
वसुदीवन ति योछ देवकी मातायि।
स्वॅय जाय मंजूर कॅर आरामन॥
दामन रटस न्यथ प्रबातन तु शामन॥०॥

व्यासन वास कोर शुकु सुंदि भागे,
बागवत ग्योव तम्य श्री कृष्णु रागे।
ज्ञागि कोनु जिज्ञास पय पैगामन॥
दामन रटस न्यथ प्रबातन तु शामन॥०॥

नारदन नारायणस यिय ओस मोंगमुत,
साम वीद कृष्णुन रासु मंज बूजमुत।
प्रय बॅरुनस अक्रेय 'हलधर रामन'॥
दामन रटस न्यथ प्रबातन तु शामन॥०॥



लीला 53

लुयि दारि त्रोपरिथ सपद मावरयो ।
हरु जीवु परयो सोऽहंसो ॥

मन सरु तन नावु यछ पज बरयो, प्रानु चूर हाविय गटि मंज गाश ।
इन्द्रेय शोमरिथ आनन्द बरयो, हरु जीवु परयो सोऽहंसो ॥

गारस अचिथुय वनवास बरयो, अथि च़ेय यिययो सोऽहंसो ।
सासा मँलिथ हय हंसो परयो, हरु जीवु परयो सोऽहंसो ॥

गोकुल गँछि हय तवुकल करयो, अथि च़ेय यिययो गाशो हे ।
शम सो वॉतिथ हम सो परयो, हरु जीवु परयो सोऽहंसो ॥

ओमके रसु सुत्य द्यन तु रात बरयो, चुय गोस बुय तय बुय गोस चुय ।
वर्शन तमिके दर्शन बु करयो, हरु जीवु परयो सोऽहंसो ॥

झूठ संसारस दोह तार बरयो, ताशोक छुम मे चोन माशोको ।
आशक लॉगिथ च़ेय पतु मरयो, हरु जीवु परयो सोऽहंसो ॥

कँहनस क्याह तान्य हा बु क्या करयो, रॉविथ अथि यिख 'लसु शाहो' ।
हर ग्वन बूज़िथ सतु नाव सोरयो, हरु जीवु परयो सोऽहंसो ॥



लीला 54

अपॉर्य यपॉर्य च्वपॉर्य पानस ।

बु पॉर्य लगस नाये लोलो ॥

शाह फेरि पानय शाह नतु कॅम्य खार्य, ब्याज़ुच गयेस त्राये लोलो ।
ज़ीनिथ छु बापॉर्य हॉरिथ गव ज़ार्य, बु पॉर्य लगस नाये लोलो ॥

सुलब तिमनुय यिमव तिम गार्य, नतु छा अंदन न्याये लोलो ।
दयि लॉन्य वनिमुच न ज़ि मँज़िम यॉर्य, बु पॉर्य लगस नाये लोलो ॥

सु दपि पानय मा खसनम बार्य, बु दपु गॅयि लायि लाये लोलो ।
रूद क्या मूद क्या न्वकसान कॅम्य चॉर्य, बु पॉर्य लगस नाये लोलो ॥

क्रालन ज़ि थुर्य मा गॅर्यमुति मा खॉर्य, यिम ख्येलि कुत्य द्राये लोलो ।
पुज्य मा रॅछ्य च्वपानि या ताय चमार्य, बु पॉर्य लगस नाये लोलो ॥

वाति मा दादस सु साद मकॉर्य, दायि अकि च़लिहेम वाये लोलो ।
दोपनम चु बलख च़ालखय बेमॉर्य, बु पॉर्य लगस नाये लोलो ॥

मॅरिन कूँछा बलन यिम सॉर्य, मो थाव वोंदस ग्राये लोलो ।
'परमानन्द' ह्यथ छु सारुय तयार्य, बु पॉर्य लगस नाये लोलो ॥



लीला 55

बेद दृष्टि सौन्य हार ।

पुनरि कुनरुचि द्रय चै छय ।।

सत्मुख अवतार दार,
भव सागरस कर में पार,
चारिरस मंज पांच दोह,
युथ न अस्थिर ज्ञान सार,
नशसुय मंज बुद्ध नैशित्थ,
कर नावुम सत् वेचार,
ध्यान शम् दम् धर्म दान,
कर दया केंछा मेय यार,
मूर्ख बोझ सुत्य रात दोह,
शोरसुय ज्ञन गंडतु नार,
यियतनय व्वन्य म्योन आर,
अनुग्रहकिय लदतु द्वार,
आसि योदवै गाटु खार,
दिम ज्ञानुक गाटुजार,
छुस ब मदुक खानुदार,
करुनाव नेष्कामु कार,
छुस ऋणन हुंद कर्जदार,
लोचरावम कर्म बार,

मोह ब्रमुक दैत्य मार ।
 पुननि कुनरुचि द्रुय चै छय ॥
 यिन तु गछनु दितुमय छोह ।
 पुननि कुनरुचि द्रुय चै छय ॥
 युन गछुन गछियं मशिथ ।
 पुननि कुनरुचि द्रुय चै छय ॥
 तप ज़प ह्यथ यूग ज्ञान ।
 पुननि कुनरुचि द्रुय चै छय ॥
 छिम समेमुत्य पापु कोह ।
 पुननि कुनरुचि द्रुय चै छय ॥
 वुछतु म्योनुय ठगु कार ।
 पुननि कुनरुचि द्रुय चै छय ॥
 कुनोन यियस नु हार ।
 पुननि कुनरुचि द्रुय चै छय ॥
 सौर्य छिम गर्जक्य मे यार ।
 पुननि कुनरुचि द्रुय चै छय ॥
 मतु पावतं पतु लार ।
 पुननि कुनरुचि द्रुय चै छय ॥

नाव छुय संसारु सार,	भवसरस दिम म्य तार ।
पतु नितम शूबिदार,	पनुनि कुनरुचि द्रुय चै छय ।।
त्राँविथ गोम लोकचार,	यावुन ओस अंदकार ।
रछ बुडस छुस नाबकार,	पनुनि कुनरुचि द्रुय चै छय ।।
प्यव मे कर्मुक कुल छँनिथ,	चोलुम च्यतु बुलबुल बुछिथ ।
हाव नोन यूगुक बहार,	पनुनि कुनरुचि द्रुय चै छय ।।
खोट छु म्योनय व्यवहार,	त्रावनस अथ छुम नु वार ।
थव मे नैर्मल नैर्विकार,	पनुनि कुनरुचि द्रुय चै छय ।।
कृष्ण करनाव सत वैचार,	थौद छु चोनय मोक्ष द्वार ।
जन नबस कुन रेह मे खार,	पनुनि कुनरुचि द्रुय चै छय ।।



लीला 56

संकट कट अथ रठ दयालय ।

च़ट सोन माया ज़ाल । ।

वौलमुत छुम अमर अकालय,	ब्रमु कालु सर्पन नाल।
म्बकलाव चलनम कालुनि ज़ालय,	च़ठ सोन माया ज़ाल।।
तापु रोस तर फोजि संगर मालय,	खसुनस छुम बोड बाल।
नेशब्बद वृद्ध छुस दिमु कमु छालय,	च़ठ सोन माया ज़ाल।।
शक्ति पात सुत्य बिक्षुकस कृपालय,	दातु बन छुस कंगाल।
ज़ीठिस मँज़िलस वातु कमि हालय,	च़ठ सोन माया ज़ाल।।
अख अँछिनाठा करतु श्यामु लालय,	अशि सुत्य बैरिथुय छि लाल।
नॉल्य छुनहोय भक्ति भाव मुक्त मालय,	च़ठ सोन माया ज़ाल।।

लीला 57

अज सौन्य व्यनती सत् ग्वर सादय।

कुनिय नादय बोज़॥

रातस गंजैर्यम नबुचे तारय, कृष्णु चंद्रु यित प्रारय कूत।
श्यामु रूप सुबह फोल यिन डलि वादय, कुनिय नादय बोज़॥

विग्यानु रव चूरिमि पद्म पादय, चित्त बंबूर सोन व्यूर ह्यत द्राव।
गीत ग्यवि चानि सत्संग संवादय, कुनिय नादय बोज़॥

मायातीतु अंत रोस्त अनादय, कुस अखा चॉनिस अंतस वोत।
हे अगम अपारु आद्यकि आदय, कुनिय नादय बोज़॥

मंज चानि माया सागर उत्पत्तु, छिय गछान ब्रह्मांड बुद-बुद वतु।
अवतार कारन देव अगाधय, कुनिय नादय बोज़॥

च्यत अबलक चोल कोत पकु प्यादय, स्यजि वेंति वेंवछि क्यथ रोन पकुनाव।
छुस पथर प्योमुत करुम इस्तादय, कुनिय नादय बोज़॥

उन्मत भूता छुय जगत गोमुत, तथ मंज प्योमुत छुस बु अनजान।
स्व व्यचारस वातु चानि प्रसादय, कुनिय नादय बोज़॥

पानय सोरुय छुख उपदावान, कलु गिलुनावान बुति छुस कांह।
पौत ह्यतु यिथि भ्रम के अपराधय, कुनिय नादय बोज़॥

मेगवर्णं रल्लतु व्यवहारुच त्रटि मंज, गृहस्थ गटि मंज नोन हाव गाश।
अमृत चाव प्रेयमु शब्द अहलाधय, वुगनिय नादय बोज्ज।।

म्यानि भक्ति भावनायि हुंदि प्रह्लादय, सर्व आत्म भाव सम दृष्ट प्राव।
सुख दुख सम ज्ञान मंज कम ज्ञ्यादय, कुनिय नादय बोझ॥

बुद्धि योग होश गछि ज़ीवु भाव मशनुय, पशनुय अदु चलि दोन आलमन।
यिथि मशनुकि नतु यादुकि यादय, कुनिय नादय बोज़॥

अनुग्रह चानि सुत्य भोग ब्रोंठ यियतन, 'कृष्णस' प्ययतन भोगनि तिम।
 एक रस ह्यस दिस तालुक्य स्वादय, कुनिय नादय बोझ॥



लीला 58

छुख मोक्ष दाता पानु चुय, केवल सतुक व्यचार दिम।
यिय गछि आसुन तिय मे दिम, योगुक तु ज्ञानुक सार दिम॥

सन्मुख यितम सोरुय नितम, द्युतमुत यि छुथ फीरिथ ह्यतम।
भक्ती दितम भक्ती दितम, भक्ती ह्दुय दरबार दिम॥

मस्ती होशस सुत्य मंगय,
भक्ती कुनय जामय रंगय,
मत्तु नचुनावतम दिथ बंगय ।
सुय रंगनुक व्यसतार दिम ।।

मूहकिस जिनिस दजुन स्वभाव, चय ज्ञान रूपी अग्न हाव ।
भक्ती हुंजय रेह प्रजुलाव, अज्ञान शोरस नार दिम ।।

ममतायि लंका जालतम, भावुक विभीशन पालतम ।
श्री राम मुह मद गालतम, यथ भवुसरस मे तार दिम ॥

शक्ती तु मुक्ती शूभि ज्ञेय, मन क्याजि तथ प्यठ लूभि मे ।
भक्ती दितम भक्ती दितम, भक्ती मे बारम्बार दिम ॥

छुख बेद रोस्त शिव कृष्ण राम, आसन कोरथ प्यठ परम दाम ।
प्रारन छुसय ज्ञेय निशि यिनस, जल्दी मे व्वन्य आंकार दिम ॥

मिथ्या पदार्थ क्याह मंगय, तमि भोगि व्वन्य आसय तंगय ।
शाँत गछ अदु सुत्य सतसगंगय, यिछि भक्ती हुंद आचार दिम ॥

वाँसा गॅयेम मिथ्या वनन, क्रय करन रोस छा कैह बनन ।
छुस लूब फल पेहनस अनन, व्यन्य ग्रटचिय अनुवार दिम ॥

करनावु तारस चुय स्वरिथ, तारुम मे तारस थफ कैरिथ ।
पारस बनावुम शस्त्ररस, नारस कैरिथ गुलुजार दिम ॥

छुय क्या मे चारुन छोट क्रुहुन, छुम मंजु प्रथ भूगस चुहुन ।
छुम अरसरव रोस्तुय बिहुन, शेमरिथ मे येंद्रिय द्वार दिम ॥

काया छे म्याँनी द्वारिका, चुय छुख कृष्ण परमात्मा ।
मंगन सुदामा छुस भिक्षा, सर्व ऐश्वरी यकबार दिम ॥



लीला 60

वाक्य

(प्राण स्मरणीय स्व० श्री टिककाक जी)

इन्द्रिय द्वार ज्ञानुन जॉनिथ सुज्ञान, विज्ञान मोनुथ प्रकृथ लय॥
जॉनी ज्ञान परज्ञान परमात्मय, तव ज्ञानु सपनक देव तन्मय॥१॥

वनखय केंह वन छोपि हुंदि मुखय, बोजखय केंह, बोज त्रौपरिथ कन॥
यछखय पूर्ण हृदय स्वखय, कर्म कर केंह बॅनिथ निश्चल मन॥२॥

केंचव वोनय वुछुन केंछाह, वुछवुन्यव केंचव केंछाह न॥
साक्षी चैतन परमार्थ बोधस, कारन कुनि केंह रेछाह न॥३॥

केंचव मोनुय केंह क्या वुछुनुय, वुछवन्यव वुछुन केंचव मोन॥
केंह केंह केंचव अनुसंधोनय, केंचव बह्य जॉन्य जॉन्य पर जोन॥४॥

युसुय बाह्य स्फारस प्रावे, अन्तर्मुख सुय उलसावे॥
सन्वख भावय सुय शिव मुख हावे, एकाकी शख्ती दौयि म्वख छय॥५॥

पोज पॅजुराव पोज पजि निशु अनुभाव, पॅजि यार्यव पज्युक रछ भाव॥
पचनुय पालुन अपुज गालुन, अपुज भ्रम पोज ब्रह्म स्वभाव॥६॥

पञ्चव कनव यिमव ब्रूय पोज, पजरुक निर्णय पोज तत्क्षन॥
क्षण क्षण सत अमि किन्य नित्य स्यजरुक, रजनी दिनय शोमरिथ मन॥७॥

पेजिस प्यठ यस यछ पछ आसिय, पजि पुछि रावरि न्यन्दर तु नेह॥
पोज बोजन रसु मस चैयि खोसिय, पजि बिना भासि नु तस कुनि केह॥८॥

भय निशि रछि रव जन गाह छटे, छटे मजंय डेंयठे गाश॥
भैरव भक्तयन रछि मंज त्रेटे, छटि गटि प्रख्यावि स्वप्रकाश॥९॥



लीला 61

जाख नंदु गोरिनि अकु नंदनय ।

आख जगि कासुनि मोह अंधकार ॥

यादव क्वलुके क्वलु दीपकॅय, लोलु चानि शोलवनु आव संसार ।
वल्लु सोन अज छय पोश पूज्ये, आख जगि कासुनि मोह अंधकार ॥
लोलुक्य मंजुले लोलि लोलि करहय, म्वल्य हेमहत छिम न म्वखु तु द्वार ।
मुक्त गछुहा चानि शुभ दर्शनय, आख जगि कासुनि मोह अंधकार ॥
ज्योन चोन जगि मंज सिरियि उदये, नतु जन जगि मंज प्रान आदार ।
लगुहाय नावस रघु नंदनय, आख जगि कासुनि मोह अंधकार ॥
साक्षात्कार चोनुय अवतारय, चारु म्योन भवसरु लगिहेम तार ।
'परमानन्दने' कृष्ण गंदरय, आख जगि कासुनि मोह अंधकार ॥



लीला 62

कस क्या छु जेनुन येमि संसोरी ।

सॉरी गॅयि हॉरूय हॉरिये ।।

कोत गँयि बब तु माँज बाँय बंद तु यॉरी, अख अँकिस तिम नु काँसि प्रॉरिये।
ताँर लँजिनु तस यस येलि वाँच वॉरी, साँरी गँयि हाँरय हाँरिये।।

येमि देहु पुछि कॅर म्य जाँन निसाँरी, बारन प्यठ खॉर्य बॉरिये।
कुनि विज्जि दज्ज पत चेंन्तायि नाँरी, साँरी गॅयि हॉर्य हॉरिये॥

केचन गुर्य हंस्य रथु सवॉरी, केह न्यथुनैन्य तु ननुवॉरिये।
बुछयें बुछयें बुछयें यिम काल शाहमॉरी, सॉरी गॅयि हॉर्य हॉरिये॥

नाम रूप जंगलस कर्म कुल्य बॉरी, विज़ि विज़ि गॅयि उजॉरिये।
उत्पन्न ब्योन ब्योन उत्पात सॉरी, सॉरी गॅयि हॉर्य हॉरिये।।

वासनायि ब्योल बैयि नवि नोव खारी, बोवि बोवि बारम्बारिये।
वॅव्य वॅव्य लोनून हरद त हॉरी, सॉरी गॅयि हॉर्य हॉरिये।।

जगत अरहटस देह तोलु वॉरी, कर्म रज्जुनय चॉर्य चॉरिये।
छरि लट लट छख पोन्न्य सॉर्य सॉरी, सॉरी गॅयि हॉर्य हॉरिये॥

मनुष्य मोर प्रॉविथ देव हितुकाँरी, यथ मंजु सर्व आधिकारिये,
गछि न रावरुन छु दुर्लब तु दुशवाँरी, साँरी गँयि हॉर्य हॉरिये॥

छ्यनु गोमुत पान परमु सुखु धाँरी, मटि ह्यथ कर्म दुख भारिये।
मोह भ्रमु राजु आँसिथ बेचाँरी, साँरी गँयि हॉर्य हॉरिये॥

बयि कँच मौकलन येमि अंदकाँरी, सत् सिरियिकि चमत्कारिये।
चलनस न्याय बलनस बेमाँरी, साँरी गँयि हॉर्य हॉरिये॥

योद काँसि मुचरन बरन्यन ताँरी, अनुग्रह अनुभव दाँरिये।
चारनस तु खारनस लगि विचाँरी, साँरी गँयि हॉर्य हॉरिये॥

भक्ति श्रवनन बोझि कन दाँर्य दाँरी, प्रेम नेत्रव ओश ताँर्य ताँरिये।
साधन ग्वरन लँग्य पादन पाँरी, साँरी गँयि हॉर्य हॉरिये॥

वनुनस तत्व उपदेश उपकाँरी, करनस पारँ पाँरिये।
बे इख्तियार योद बनि बा इख्तियाँरी, साँरी गँयि हॉर्य हॉरिये॥

‘लक्ष्मण’ परमु आनन्द च्वापाँरी, साँक्षी छु साक्षात् कारिये।
पानय पानस करि उद्धाँरी, साँरी गँयि हॉर्य हॉरिये॥



लीला 63

काँसि यम बय चोन प्रेयम तु लोलो ।

ज्योन मरुन तु युन गछुन छु भ्रम तु लोलो ॥

नेत्य नियम युस जि करनस लागि भक्ति चॉन्य,

मनु त्वरगस हैकि रँटिथ वगि भक्ति चॉन्य ।

पय सहजुक दियि रगि रगि भक्ती चॉन्य ॥

अनुभव भोवि अनुग्रेह अगम तु लोलो ॥

ज्योन मरुन तु युन गछुन छु भ्रम तु लोलो ॥०॥

पतु लारनस अष्ट स्यज स्योद वुछख नु ज़ांह,

असि सारिनय सु गोमुत प्रोद वुछख नु ज़ांह ।

तस विन युस छु सारिनय थोद स्योद वुछख नु ज़ांह ॥

शान्त एकांत प्रावि शम दम तु लोलो ॥

ज्योन मरुन तु युन गछुन छु भ्रम तु लोलो ॥०॥

कँह ति रोज्यस नु ज़ानुन नँ अज़ानुन तस,

स्वाद अस्वाद निशि केंछा न स्योन न नून तस ।

कँह खटनस लायख तु नोन वनुन तस ॥

स्वख द्वख क्या अर्थ्य दोपुख सम तु लोलो ॥

ज्योन मरुन तु युन गछुन छु भ्रम तु लोलो ॥०॥

दिज़ि देहस नज़ि पज़ि अमृत फल,

दिस प्रथख तय प्रथमय दिस मृत फल ।

कान नेरि क्या निर्णय कानय फल ॥

मोक्त फॅलिसुय तौर्यज्यस नु त्रम तु लोलो ॥

ज्योन मरुन तु युन गछुन छु भ्रम तु लोलो ॥०॥

गाल हन हन कालुन त्रास मँशराव,
 ज़ाल मँर मँर सोर वसुवास मँशराव ।
 वर्ण आश्रम कृत तु सन्यास मँशराव ॥
 बोध पनुनुय छु सूद सूहं तु लोलो ॥
 ज्योन मरुन तु युन गछुन छु भ्रम तु लोलो ॥० ॥
 वेद पुरान शास्त्र यँच पँरय पँरय,
 कर्म कँरयज्यनु अभिमान सच कँरय कँरय ।
 मशन युस बुज बूज्य बूज्य यँच सौर्य सौर्य ॥
 तौर छेनु तस तार तारि ओम तु लोलो ॥
 ज्योन मरुन तु युन गछुन छु भ्रम तु लोलो ॥० ॥

येलि तेलिय अँन्दरिम लोलुक स्नेह,
 तेलि मेलिय पानस ह्यु लुक स्नेह ।
 खेलि अन्तर बाहिर बुक बुक स्नेह ॥
 छुन परवाय गेलि आलम तु लोलो ॥
 ज्योन मरुन तु युन गछुन छु भ्रम तु लोलो ॥० ॥
 कथु करुनस तु मरुनस छुन हिशर,
 मानि बोजुनस परुनस छुन हिशर ।
 दयान स्वरुनस तु शरुनस छुन हिशर ॥
 चमि तस युस बनि छेय चमि तु लोलो ॥
 ज्योन मरुन तु युन गछुन छु भ्रम तु लोलो ॥० ॥

‘परमानन्द’ परम आनन्द प्राँविथ,
 प्राणि नोव नोव सांग नोव जंद प्राँविथ ।
 नावि तरि अथु छोन्यँरुक चंद प्राँविथ ॥
 रुजिज्यनु कुनि नजि दिजि तम तु लोलो ॥
 ज्योन मरुन तु युन गछुन छु भ्रम तु लोलो ॥० ॥

लीला 64

हे निरंजन कष्ट भंजन भक्त रंजन हे दयाल ।
 ज्ञानकुय लाग अँछन अंजन अज्ञानकुय पोह मे गाल ॥
 भवसरय फोटमुतुय छुस मोह मायायि वोल मे नाल ।
 छुस नु ज्ञानान बोठ खुसिथ व्वन्य अथुरोट करतम दयाल ॥
 सत असत विचार छुम न काम यन्दुल्य छिम पतय ।
 असतुचि हांकल मे चटतम हावतं सतचिय वथुय ॥
 काम कूदन लूभ मूहन छुस बु कोरमुत ज़ेरबार ।
 भवसागर दुःखु गुरु मंज अथुरोट करतम दयाल ॥
 दीनु वत्सल रछ पघन तल आनन्दुक अमृत मे चाव ।
 यव किन्य शांती मे बनिहे वैरु भावस गछि अभाव ॥



लीला 65

जन्मस यिथ येति कैह छुनु लारुन ।
 धारनायि धारुन गोविंद गो ॥

अल फाल अथि ह्यथ खेत संभालुन,	नित्य नियम स्मरणि वायुन ह्यु ।
धैर्यच यँट फोरि दतु फुटरावुन,	धारनायि दारुन गोविंद गो ॥
युस करि स्वमनु दारुन तु पारुन,	ती छुस लारुन संसारस ।
तवु खोत रुत छुय पर उपकारुन,	धारनायि दारुन गोविंद गो ॥
धनु द्वार अथे दिथ मँशरावुन,	कर्मचि वति प्यठ दर्मस द्यू ।
येति नो प्रोनुय फोट छुय लारुन,	धारनायि दारुन गोविंद गो ॥

दांद हुर नैदिरे सुलि वुजुनावुन, कल करुनावुन सू हम सू।
'ललद्यद' गुरु ह्यथ स्वरूप वुछुनावुन, धारनायि दारुन गोविंद गो॥



लीला 66

ललुवान सिरि हक जेरि जेरि हेरि ब्वन, छम वजान ज़ीरु बम तार।
ह्यसके मयखानु मस येलि बु चोवनस, भोवनम सीरि असरार॥
आलव तोरय गोख दॅर्याव दामु चोख, शोकन कोरुख मिलुचार।
सतवुय आकाश सतुवय पाताल, तल प्यठ दिथ कुनुय ठान॥
गाह गटु गाह गाश गाह प्रकाश नूरान, यकसान सोरि सामान।
रंगु रंगु बेरंग सूरत स्व मूरत, नॅन्य द्रायि दरुबाजार॥
गगुनुय पवुनुय लागुनुय बागुनुय, सथ नयि बेयि नव द्वार।
सुय हज़ार दास्तान बोलान नयि नयि, म्वलुवान ह्यथ खॅरीदार॥
पनुनुय ह्योन घोन पनुनुय बाजार, पानय ग्राख तु सोदागार।
हर्दु सोंतु कुनिरस वोंत कुनि लोबमस नु, दर्दु नयि फेरि शेहजार॥
सथ पर्दु चॅट्यथुय हूर द्रायि वनुवान, पोशन करिख तूमार।
ग्रख लॅज सोदरस दरवाज़ु खुलु गॅयि, अनुग्रेह द्युतुक अंबार॥
कंदपोरि ज़ूनि डबि शेश तु रव सॉविथ, नॉविथ अँद्रमि तोंदर प्रान।
गटि मंज़ 'भास्कर' सास भासुनॉविथ, सुय प्रावि शांत आकार॥



लीला 67

सुन्दरो स्वनु संदल गरय ।
हो हो करय श्यामु सुन्दरय ॥

गोपिय प्रारान गोकुलय,
खेलव तु मेलव अमरय,
वेरि चानि फेरान निर्मलय ।
हो हो करय श्यामु स्वन्दरय ॥

जसोधा वुछतोन भाग्यवान,
भलभद्र तु बैयि कृष्णु गंदरय,
टोठैयि यस यिम जु सन्तान ।
हो हो करय श्यामु स्वन्दरय ॥

अँतुरे पलंग पौरावयो,
अंजलि दशन मोक्तु हो जरय,
पॉटिय करुछ वथुरावयो ।
हो हो करय श्यामु स्वन्दरय ॥

गलि गलि द्वद बु चावथो,
बादाम कंद चंदु हो बरय,
फलि फलि नाबद ख्यावथो ।
हो हो करय श्यामु स्वन्दरय ॥

आसान छुख कैलास कोह,
हरमुख कैय गंगाधरय,
बासान छुख येति रात तु दोह ।
हो हो करय श्यामु स्वन्दरय ॥

नॉल्य मालु खॉल्य कनुवॉल्य,
शीतल स्वभाव पीतांबरय,
रंगु रंगु जाम ज़रुकारय ।
हो हो करय श्यामु स्वन्दरय ॥



लीला 68

करुम मे हे प्रभू मंगल । वरुम चरनारिन्दन तल ॥
 शरण आसय बु दयि नावस, चु टोठ्योख शरनय भावस ।
 गँडिथ छुस भक्ती हुंद अंजल, वरुम चरनारिन्दन तल ॥
 वुजान छुम चानि प्रेयमुक स्नेह, करुम अनुभव मे नोन अनुग्रेह ।
 गछ्यम युथ वासना नैर्मल, वरुम चरनारिन्दन तल ॥
 दि मे शक्ति पातकुय प्रसाद, बुछान छुस कोनु चॉनिय पाद ।
 तवय छुम चित गोमुत चंचल, वरुम चरनारिन्दन तल ॥
 छु चोनुय आसनुय संमुख, छ्यनन द्वख प्रावु नेभर्य सुख ।
 मे स्वय भक्ती गँयम स्वफल, वरुम चरनारिन्दन तल ॥
 छोचर छुम ओसमुत कर्मुक, यि ब्राहमन जन्म छुम धर्मुक ।
 तुलन प्रारब्ध छुस अनजल, वरुम चरनारिन्दन तल ॥
 बु छुस पुनरु आवृती कालन, फसोवमुत वासना जालन ।
 मे कास अविद्यायि हुंज गांगल, वरुम चरनारिन्दन तल ॥
 गछ्यम सत्ज्ञान त्युथ उपदुन, यियेमु युथ दृष्टि मंज दोन कुन ।
 छु सू हम नाव युथ केवल, वरुम चरनारिन्दन तल ॥
 मे रोजुन गछि नु रज तय तम, बनन तत सत गोछुम उत्तम ।
 छुसय स्वभाव किन्य शीतल, वरुम चरनारिन्दन तल ॥
 दया हुंज दृष्टि कुन केवल, करुम अंतर बाहिर निर्मल ।
 डलस मंज युथ जलस कंवल, वरुम चरनारिन्दन तल ॥
 दितम वैचार अग्नुक बल, दजन कामादिककव्य जंगल ।
 वुछन स्वप्रकाशचिय वुजमाल, वरुम चरनारिन्दन तल ॥
 हे केशव, केशव अर्पणय, सदा नैर्मल सुदर्शनय ।
 मे फौलुनाव द्वादशांत मंडल, वरुम चरनारिन्दन तल ॥

लीला 69

भगवान् तमि कालु कर मे अनुग्रह, येमि कालु प्राण अंत आसि मे ।
चानि अनुग्रह रोस ईश्वर, कर्म न्याय कुस कासि मे ।।

सार्य त्रौविथ रोट मे दामन चोन कामन सिद्ध मे कर,
 भाय बंध संतान नारी यिम छि अस्थिर छुख चु स्थिर।
 नाव चोन लयि लछ करोरुय दिम पनुन भक्ति भाव मे॥

बालु भावु किन्य ग्युंद मे हारन ग्रावु व्वन्य बु कस करय,
 वक्त सख्ती छमनु कांह छुस तारि गोमुत शशदरय।
 छुम मे तकसीर पानसुय चॉन्य नाम सुमर्ण कर न मे॥

कर्म फल किन्य ल्वकुचारस रंगु रंगु भूगिम वेशाद,
यावनस मतुवालु साँपनुस कालु भय रूदुम नु याद।
बुजरस मंज अंत कालुक छुम स्यठाह वसुवास मे॥
राज होंजाह जालु लोगनस कठिनिय कर्मय फलन,
जांह कॅरम न रामु सुमर्ण साधु सेवन हरि बजन।
लाल अथि यिथ रावरोवुम सुय खोतुम अपराद मे॥

अंतःकरणन जन्म जन्मन हुंद मे सार्योमुत छु मल,
आदि दैविक आदि बौतिक आद्यात्मिक कर्म फल।
कर दया पुननिय प्रभो, वैचारु मन शुजरावतु मे॥
यीरु गोस भवसागरस मंज धैर्य भाव रूदम नु कैह,
गोपाल चॉनिय छम मे आशा पान म्योन मटि छुय हा चैय।
म्योन रुत कृत छुय चे रौशन थफ कॅरिथ बोठ खार मे॥

अंत समयस टाठि छि खोचान अख अँकिस पथ कुन चलान,
पानुवन्य अख अँकिस वनान वुछतु वुनि छुस शाह खसान।
वुछतु ब्रम बौज्यगार यि संसार स्रेह तिमन रोजान नु कैह।।

हे प्रभो, बोज तु मे ज़ौरी सर्वु ख्वौरी कास्तम,
वक्ति पोरी दस्तगीरी कर प्रबो, चॉन्य आश छम।

छुस पथर प्योमुत मे थर छम करतु गमु मंजु शाद मे।।
निरुअर्थ आत्मा कोरुम हाय व्वन्य बु कोताह छुस पशान,
पतु नार छुम ब्रौठ छंब आमुत तु चामुत छुस गशन।
कर दया पनुनिय प्रबो, छम चॉन्य वाराह आश मे।।

छुख क्या दया सागर करतम शरण बो आस च़ेय,
विष्णापर्ण करतु म्यौन्यन सौर्यनुय पापन चु क्षय।
अंत कालस हाव मे दर्शन सर्वु संकट कास मे।।



लीला 70

भक्ति वत्सल मोनुख म्यौन्य मनुनुय।

शक्ति नाथु गंडयो मनुनुय माल।।

बूज्य बूज्य श्रवनुय तु कौर्य कौर्य मनुनुय, निदि द्यासन ज्ञान द्वीप प्रजलाव।
साक्षात्कार छुख शिव रूप ननुनुय, शक्ति नाथु गंडयो मनुनुय माल।।

आदिकार द्युतमुत छुय सत जननुय, मंजु छिय अंद ह्यथ माया ज़ाल।
निर्गुण लगयो यिथुनुय गुणनुय, शक्ति नाथु गंडयो मनुनुय माल।।

भीषण यिम मुख चैय कुन अननुय, तिमनुय आय मंगि काल यँचुकाल ।
तिहुँजि अँछनाटि मंज कल्पांत बननुय, शक्ति नाथु गंडयो मननुय माल ॥

चित्त आकाश हाव न्यथ मुख पनुनुय, छारनस लोगमुत छुस बु पाताल ।
ओन छुस ख्वनुवट ख्वड छुस खनुनुय, शक्ति नाथु गंडयो मननुय माल ॥

युथ छुख तु त्युथ छुख क्युथ छुख ननुनुय, सुय ज्ञानि यस बनि युथ ह्युय हाल ।
वोन दिथ छु नोन वुछ्य वुछ्य ओन बननुय, शक्ति नाथु गंडयो मननुय माल ॥

देह अभिमानुक कुल हेयि छनुनुय, तीव्र वैरागुक सूराह मल ।
शिव रूपु ती बनि यिय पँह्य पनुनुय, शक्ति नाथु गंडयो मननुय माल ॥

लोलु आलव ओश प्योर कननुय, चान्यन गछि ना, तर छिम लाल ।
सुय म्वखतु बनिहस यथ छि म्वखतु वननुय, शक्ति नाथु गंडयो मननुय माल ॥

पजि भावु पान प्रमान नाव पनुनुय, शाह पूर वरताव अथि ह्यथ माल ।
मंज बाजारस वान लोद निर्धननुय, शक्ति नाथु गंडयो मननुय माल ॥

हैलि हैलि लावि लावि मावि मावि गोनिनुय, कुनिरुकि खलु फलु वँछ मोक्त हाल ।
गाटस गाटु प्यव हुरिरस छु छ्वनुनुय, शक्ति नाथु गंडयो मननुय माल ॥

नियमुचेन नौर्यजन यमुक्यन यननुय, सम दृष्ट जल प्यूर माला माल ।
निष्काम कर्मू बूमि कल्पवृक्ष बननुय, शक्ति नाथु गंडयो मननुय माल ॥

यूग अग्न बिन छुस ज्ञानु अन्न रनुनय, योगेश्वर छुय मूर्ख सुंद साल।
अन यछा करतम अनुग्रेह पनुनुय, शक्ति नाथु गंडयो मनुनुय माल॥

दय धन प्राप्त प्रथ काँसि बननुय, बानु रौस्त कर्महीन छुस कंगाल।
बडि भगवान लदतम बानु पनुनुय, शक्ति नाथु गंडयो मनुनुय माल॥

गंड गंड वुनि छम आम्यन पनुनुय, वर दिम इन्द्र चन्द्र छुख द्याल।
दोगनाव उल्लंघित छुख त्रेयन गुणनय, शक्ति नाथु गंडयो मनुनुय माल॥

शक्तिपात सुत्य भक्ति भाव न्यथ ननुनुय, भक्त कर मीना भाव हीमाल।
ताह खोल वर दिनुक्यन वर्दननुय, शक्ति नाथु गंडयो मनुनुय माल॥

थप कैर मनस जित्त आनन्द गनुनुय, तप गव सिद्ध अथि म्वठ जप माल।
मस्त कोरनस यिथिय प्रेयम मस चनुनुय, शक्ति नाथु गंडयो मनुनुय माल॥

मीनायि हीमाल पर्वत वनुनुय, चक्रेश्वर छुय त्रिजगत पाल।
सार्य दीव चक्रस फीर्य प्रदख्यनुनुय, शक्ति नाथु गंडयो मनुनुय माल॥

‘कृष्णस’ हरमुख मुख हाव पनुनुय, थपि खारतन प्यठ सूहम बाल।
फीर्य फीर्य नीर्य नीर्य नेरनुय नयिनुय, शक्ति नाथु गंडयो मनुनुय माल॥



लीला 71

गुकुल हृदय म्योन तति चोन गूर्य वानु ।
च्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो ॥

वृच्च म्यानि गोपियि च़ेय पतु लारान, बन्सरी नादु वादु मतानो ।
नॅशरिथ ह्यस तु होश, मॅशरिथ पर तु पान, च़्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो ॥

अथुवास च़ेय सुत्य रास आसु खेलान, व्यास नारद ति तति आसानो ।
दासु भावु राधा कृष्ण कृष्ण ज़पान, च़्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो ॥

दीवियि तु दीवता सीव च़ेय करान, भवसरु तवु तार लबानो ।
ग्यवान रिवान ज़्यव छ़खनु लोसान, च़्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो ॥

असवुनि कोसम मुख चानि फ़वलान, कोस्तुब नजि आसि शैहलानों ।
कौस्तुब त्रैटि तु मालु आसुहोय पौरान, च़्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो ॥

मायायि सुत्यन चु शायि शायि आसान, कायायि मंज भिन्न नु रोज़ानो ।
सिर्यिकि आसनु छाया छय भासान, च़्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो ॥

आकाशु मुखु छ़ुख आकाश भासान, तत सत प्रकाश आसानो ।
देवन हुंदि देव प्राणियन हुंदि प्रानु, च़्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो ॥

युस युथ स्वरिय तस त्युथ छ़ुख हावान, मुख हाव मेति श्री नारायणो ।
प्रारनुचि फ़ुरसत छमन रूजमन्न दानु, च़्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो ॥

युस यी येछि तौय तिथुय छुय प्रावान, कर्म फल दातु चैय वखनानो।
ह्योन द्ययोन पनुनुय लूक लूकन बहान, च्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो॥

क्षमा मूर्खस गाटल्य छि करान, गाट छुख नु तमि सुत्य प्यवानो।
पाठ पूजायि कनि मूर्खस यी जान, च्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो॥

तगिहेम तु जगि मंज आसहा थ्यकान, वनु कस काँसि छुनु व्यपानो।
कुनरचि कथ छय सनिरस श्रपान, च्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो॥

सिरियि चन्द्रमु रोस जग छा प्रजुलान, भगवानु रोस प्रान अप्रमानो।
लगुहस नित्य नियमु रोजिहेम सनिदान, च्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो॥

दास छिय अँस्य चॉन्य कोनु छुख मानान, लॉगिजिनु पनुन्यन बेगानो।
शरुम छय ना छिय शरन यिवान, च्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो॥

वननुच जाय छमनु वनुन कवु ज्ञानु, सननु चियि कथ छय ब्याख आसानो।
बनि यस यि पानस सु वेंनिथ नु ज्ञानान, च्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो॥

बाकि बाकि वदुनस ति वाख छिनु फोरान, साक्ष छेनु अन हित आसानो।
चाक गॉम जिगरस आख छिम नु बलान, च्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो॥

छुसनु डेंशान बो दीशु दीशु छारान, प्रारान छुसस छुम नु यिवानो।
पँद्य लूस्यमुत्य वँद्य वँद्य चँड्य भरान, च्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो॥

अंत छुनु भगवत मायायि आसान, दयायि तति कुत्य छारानो ।
छौरिथ तु गौरिथ लंबिथ तु रावान, च्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो ॥

गिंदनस रंगु रंगु तंगु छिनु यिवान, मंगु हाय बुति श्री नाराणो ।
हंगु तौय मंगु रोजतम संतुष्टान, च्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो ॥

हे कृष्ण पाप सॉन्य चुय छुख डेंशान, शाप कास असि अँस्य छि नादानो ।
क्षमा कर यवु पायस छि प्यवान, च्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो ॥

भगवत मायायि कांह छुनु ज्ञानान, तस त्युथ छु युस युथ छु मानानो ।
मानु अवमान रोस्त चुति मान बुति मान, च्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो ॥

युस नु ज़ाव कौसि तौय कांह छुसनु ज्यवान, ज़ीव आनुमौनी यस छि ज़पानो ।
ज्ञानि सु सोरुय तु ज्ञानि तस कांछा नु, च्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो ॥

ब्रह्मा ति छुन चोर वेद ह्यथ पोशान, तोतनस यूत तस पज्ञानो ।
शेषनाग सासि ज़ेवि सुति कोल गछान, च्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो ॥

युस ज़ि यूत मंगि तस सुय त्यूत प्रावान, दय नज़ि मनि कुनि आसानो ।
बुय च़ेय अर्पन तु चुय म्योन आसान, च्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो ॥

धनु द्वार पतव त्रॉविथ छि गछान, भाग्यवान तिम यिमन नु आसानो ।
सन्तोश वृत्त दिम छिम तिम नव निदान, च्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो ॥

सन्तोश वृथ दिम छिम नव निदान, तृप्त कर म्य सत स्वरूप ज्ञानो ।
यथावत युथ बु आसुह्य वुछान, च्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो ॥

दयायि सुत्य ओस भगवान वनान, आँतिस बौडिस तारु तारानो।
करुना करनावि अपोर तारान, च्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो॥

यस कांह नु तसु रौस्त ज़गि मंज़ आसान, पानु वननस तु पानु बोज़ानो ।
स्वरूप छु करवुन पानय आसान, च्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो ॥

अमृतमय वर्षायि सुत्य वनान, वॅनि यिनु के मुख चवानो।
 अँस्य अँस्य ति सुय सुय ती आसान, च्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो॥

‘परमानन्द’ परम आनन्द प्रावान, सूरमोत हनि हनि आसानो।
राधा माता तु बब कृष्ण भगवान, च्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो॥



लीला 72

शुभ मुख हाव मैति अमृत चावतम ।

सत् गुरु हावतम गटि मंज गाश ।।

ग्वडु सत् गुरु सुंद ध्यान स्वरुनावतम, दमु दमु अद चैय कुन न्यमुहा।
रात दिन अख क्षन छ्यन मत थावतम, सत् गुरु हावतम गटि मंज गाश।।

जन्मस यिथ कर्मु खुर संभालतम, मतु दिशिरावतम सादन मंज ।
मनचे कलि येंद्रेय चूर मत पावतम, सत् गुरु हावतम गटि मंज गाश ।।

दह शोमरॉविथ मद हौस पावतम, काहन हावतम कुनिय वथ।
सू हम शब्द निशि ब्योन मत थावतम, सत् गुरु हावतम गटि मंज गाश।।

शिशरम नागु सरु तन नावनावतम, मतु वुछ तु म्याँन्यन क्वकर्मन कुन ।
मोहनि सैंघि मेति अपोर तारतम, सत् गुरु हावतम गटि मंज गाश ।।

क्षनु क्षनु पनुनुय दान दारनावतम, स्वरुनावतम ती यी पजिहे।
कामदेव श्याम स्वंदर लट मत दयावतम, सत्गुरु हावतम गटि मंज गाश।।

विश्वभर पन्नुय शुभ मुख हावतम, रोजत तु भावहॉय पन्नुय हाल।
मॅशरोवमूत नाव चैतस पावतम, सत् गुरु हावतम गटि मंज गाश।।

वनुमाल दौरिथ दर्शन हावतम, हावतम पनुनुय प्रकाश रूप।
दौह गोम लूसिथ मत प्रारनावतम, सत्गुरु हावतम गटि मंज गाश।।



लीला 73

शिव नाथस प्यठ सपञ्जक सँतिये।

श्री पारवतिये भविनय जय ।।

पूजायि पोश लागय लवु हँतिये, अँकिन गामि आसवुन्य छख शिवा।
रक्त बीज मॉरिथ छख पानु तँतिये, श्री पारवँतिये भविनय जय॥

पोश सोंबरॉविम व्वजुल्य नील्य छँतिये, पूजा करुहय इष्ट दीविये।
ज़ार पार वार बोज़ छिय आर कँतिये, श्री पारवँतिये भँविनय जय॥

अमरनाथ कैलासुक्य सूर मँतिये, वॅरनख तु वॅरनख अर्दु शरीर।
नित्य छख आसुवन्य तस सुत्य सँतिये, श्री पारवँतिये भँविनय जय॥

अष्ट स्यज्ज सुत्य छय ब्रूठय तय पेंतिये, शिव शक्ति रूपु छख सर्व व्यापक।
'कृष्णस' टोठ छख बोझान येतिये, श्री पारवेंतिये भँविनय जय।।



लीला 74

प्रेयमु पोश लाग शेरि तसंजे ।

वेरि करवाँय रोवये ।।

होश बुलबुल प्रान पोशनुल,
प्रारवुन रोज़ खबरि तसंजे,
भाव भम्बूर द्राव गोशास,
करिनु गूँ गूँ असंजि वेरे,

ध्यान कुल्य चाव फोलनम ।
वेरि करवाँय रोवये ॥
पोशु बागस चाव मंज ।
वेरि करवाँय रोवये ॥

पाय म्योन च़ेय रौस कांह करि न माता,

उपाय रस्त्यन चय छख त्राता ।

कास्तम अंधकार दास गँजरावतम ।।

अनुग्रेह करतम मॉज्य, अनुग्रेह करतम ॥०॥

विलुङ्गार मॉज्य बोङ्ग चुय 'नीलकंठस',

शील हर चय छख आशा चॉन्य छस।

भक्ति भाव पनुनुय मैति पुशरावतम ।।

अनुग्रेह करतम मॉज्य, अनुग्रेह करतम ॥०॥



लीला 76

गन्योमुत ह्युम मनस चोन भाव, जगत माता मे दर्शुन हाव ।

मैं आमुत लोल बानन छाव, जगत माता मैं दर्शुन हाव ।।

जगत माता च टोठान छख, भगत संताननय बेशक ।

ह्यवान युस लोल सत्य चोन नाव, जगत माता मे दर्शुन हाव ।।

मै वोल् शानव प्यठुय बोरुय, मै पशुरोव पान च़ेय सोरुय।

मैं केवल चीन छुम चिक चाव, जगत माता मैं दर्शुन हाव ।।

बे छुस पजि किन्य स्यठा नादान, करान छुस पाप छुस अनजान ।

करुम माफ छुय च़े माता नाव, ज़गत माता मे दर्शुन हाव ।।

प्रेयम नगरस अंदर चामुत, बु चाने डेडि तल आमुत।

प्रेयम अमृत पनुन दोद चाव, ज़गत माता मे दर्शुन हाव ।।

तैमिस क्या गम् यैमिस यावर, च आसख ताज दिथ बर सर।

शत्रु सुंद पोरि कति तस दाव, जगत माता मे दर्शुन हाव ।।

वदान छुस चॉन्य घनेयम कल, दैलिस तल माज्य ह्येतम जल जल।
 मे सतुचे प्रेम नैदिरे साव, जगत माता मे दर्शुन हाव।।
 वनान छुस वीलु तय ज़ॉरी, थोकुस यूत काल प्रॉर्य प्रॉरी।
 मे लोकचार गव बुजर व्वन्य आव, जगत माता मे दर्शुन हाव।।
 जगत माता मे संत्वष्ट रोज़, वनान ज़ॉरी छुसय च़ेय बोज़।
 पुनन्य दयगथ दयालु हाव, जगत माता मे दर्शुन हाव।।
 बु छुस हियि गोंद च़े कित्य सारान, प्रेम सान डेडि तल प्रारान।
 चु प्रेमकि भावु हियि गोंद छाव, जगत माता मे दर्शुन हाव।।
 छु 'बागवान' च़ेय परन प्योमुत, गँडिथ गुल्य च़ेय शरन गोमुत।
 छु स्मुराण चोन हर दम नाव, जगत माता मे दर्शुन हाव।।



लीला 77

द्रौपदी विलाप । जय राधा कृष्ण ।।

श्लोक:- हा कृष्ण मनसा वॉसी कौसी यादव नन्दन ।
इमां अवस्थां संप्राप्तम अनाथम किं न रक्षसि ।।

व्वलो श्यामु लालो बु कोताह यि च़ालय ।

सभाये अंदर छिम कडान जामु नालय ।।

लॅजिस व्वपरन मंज़ वॅजिस कॅम्य बु शापन ।

गॅजिस शर्मि दावय लॅजिस गिल ब्रु जालय ।।

मै वुन्यक्यन करान छुम नु कांछा हेमायत ।

यि क्या ओस दयन ल्यूखमुत में क्रपालय ।।

चै रोस्तुय रछ्यम कुस अबल छस ब नॉरी ।

चु रछतम तु वुछतम छसय कमि हालय ।।

पेयिय मा नेंदर चैय सदा छख नु बोझान ।

गँयिय कोत दया वुन्यक्यनसु हे दयालय ॥

चु छुख दीन बंधो में मँशराव दीनस ।

हषीकेशु अशने हरान छसया चालय ॥

मे व्वन्य रूजुमुन्न छम नु काँसि हुंज आशा ।

तमन्ना मे टाठि छुम रटहथ बु नालय ॥

सबासद बन्येमत्य छि मोनुक्य चित्र ज़न ।

दया छख नु वुन्यक्यन यिवान हे दयालय ॥

दया सागरो कर दया 'नीलकंठस' ।

चु दिस पानु दर्शन यिस अंत कालय ॥



लीला 78

ओरुत प्रारान छुस बर तलय,

बलय दर्शनु सुत्य ।

गनेमन्न माँज्य छम चाँन्य कलय,

बलय दर्शनु सुत्य ॥

संसारन मे ग्युंदनम छलय,

मिलनोवनस मेचि सुत्य ।

अज्ञानन बु कोरनस नलय,

बलय दर्शनु सुत्य ॥

मायायि कोरनम मन चंचलय,

मस्त गोस लूभस सुत्य ।

मोहन आवरुस रोटनस तलय,

बलय दर्शनु सुत्य ॥

पापन हुन्छ बारैय छि अल अलय,

चाँरिथ छुम रजि सुत्य ।

माँजिलस किथु वातु छुस नेबलय,

बलय दर्शनु सुत्य ॥

लीला 79

ओस कस रूजिथ अंदरी वॉर,
कम्य निय प्रॉटिथ म्यॉन्य पनु पहॉर ।

मुरलीदर सुंद छुमा यी खॉर ॥

कम्य निय प्रॉटिथ म्यॉन्य पनु पहॉर ॥०॥

थोकमुत सुदामा गर येलि आव,

नेत्रव त्रोवुन अशि देंरियाव ।

येति कुस राजा रोजान गॉर ॥

कम्य निय प्रॉटिथ म्यॉन्य पनु पहॉर ॥०॥

कति छुम गरुबार योत कोत आस,

फाकय वॉलिंजि गोम तलवास ।

गॉमुन्न कोत म्यॉन्य तुलसी वॉर ॥

कम्य निय प्रॉटिथ म्यॉन्य पनु पहॉर ॥०॥

कॅति गॅयि पॉदु यिम गुल तु गुलज़ार,

आय कॅति योतनस म्वख्तु पवंवार ।

रंगु मंदोर्यन लॅज ना तॉर ॥

कम्य निय प्रॉटिथ म्यॉन्य पनु पहॉर ॥०॥

आय कर योत यिम दास दॉसी,

शुर्य म्यॉन्य गयमा वन वॉसी ।

मायि हॅन्न भार्या द्रायि ना सॉर ॥

कम्य निय प्रॉटिथ म्यॉन्य पनु पहॉर ॥०॥

कोत गँयि मॉसूम स्वंदर पोश,
 लोल आम वुछहख रोवुम होश।
 मूरान गुल्य ओस प्राटान दॉर॥
 कैमि निय प्रॉटिथ म्यॉन्य पनु पहाँर॥०॥

ओरुत सुदामा गव परेशान,
 व्यखचय माया ओस डेंशान।
 द्रायस सुशीला बुथि वनुहाँर॥
 कैमि निय प्रॉटिथ म्यॉन्य पनु पहाँर॥०॥



लीला 80

मेवु कनि म्वख्तु वोथ चंदन बागस।
 नागस प्यठ लोग हंसु दरबार।
 ज़लु कनि अमृत नौन द्राव नागस॥
 बागस मंज़ चाव संत अटुहार॥०॥
 ब्वद क्या वाति अथ रागस तु त्यागस,
 वरणि आव शक्ती त्रिभवन सार।
 तस रोस क्या छु ती बु पूज़ि लागस॥
 नागस प्यठ लोग हंसु दरबार॥०॥

त्युथ दशहार कर तिथुसुय प्रयॉगस,
 येथ देह येंद्रिय छि देह अवतार।
 कैहिम द्वादशांतस पूज़ि लागस॥
 नागस प्यठ लोग हंसु दरबार॥०॥

नामु रूप कल्पित ज्ञोन ह्यथ रागस,
अस्ति भाती प्रिये रूप पतु द्राव सार ।
शर्मन्दगी चञ्ज्य मदु वॉरागस ॥
नागस प्यठ लौग हंस दरबार ॥०॥

प्रेयम् कर्म फलनुय यम् नियम द्रागस,
 प्रावुनावि अनुग्रेहुक्य अम्बार ।
 तृप्तिरि पम्पोश फोलि ललु त्रागस ।।
 नागस प्यठ लोग हंस दरबार ।।० ।।

होश पोश फोलि उद्योग पोश बागस,
दासु भावु किन्य आस खँदमतगार ।
'कृष्ण' सेवा कर आत्म रूप आगस ॥
नागस प्यठ लोग हंस दरबार ॥०॥



लीला 81

प्राव कैवल्य हा केवलो, योग चाने बनि आज्ञादी।
भोग सुखा हा निष्कलो, यॅलि चलनम पापुन्य लाँदी।।

चोन दूरर ह्यकु कवु ज़रिथ, कॅमि बलय ह्यकु च़ेय निश यिथ ।
छुमन करार गम चानि गलो, योग चाने बनि आज्ञादी ।।

गर्भु नयन मंजु फीर्य फीर्य, बुछ मे लोकचार यावुन तपौरी।
बोड बॅन्य बॅन्य कम जाम वलो, योग चाने बनि आजौदी॥

पय अजताम लोभुम नु चोनुय, धर्म हीनस मे ओस कर्म लोनुय।
नठ छम वति निशि मा डलो, योग चाने बनि आजॉदी।।

मन दर्पण छुम मॉलु गोमुत, मोहकुय मदिरा छुम मे चोमुत।
ज्ञानु गंग जल मल कलु छलो, योग चाने बनि आजॉदी।।

नारायण कस गछ शरण, छोटन किथु पॉठय जन्म मरन।
हे शरनागत वत्सलो! योग चाने बनि आजॉदी।।

येंच कोल चानि वते द्रासय, बुजरुकुय प्यँयनय पासय।
बुजरस त्रॉविथ व्वन्य मु चलो, योग चाने बनि आजॉदी।।

मन काफूर अनु चानि वेरे, रत्न ज्योति फिरवय शेरे।
गाल मल 'ठॉकुरस' निर्मलो, योग चाने बनि आजॉदी।।

✽

लीला 82

(गजल)

श्रीमती अरजी माल

दोरि दुनिया सोरि ऑखुर, यार छांडुन पननुय।
आब हर जा जेरि जमीन, नेरि तस नोन यॅमि खोनुय।।
नूर डेंशुन छु नु आसान, सूर मलुन ह्युव पानसुय।
रहबरस कुन पान गालुन, वथ सु हाविय तस कुनुय।।

✽

लीला 83

(गज़ल)

ज्ञानखय कर जान फिदाँयी ।

यारु वफाँयी कँह छय नो ॥

अछ अन्दर लोलु बागस,
तति गंडनै ख्वलति शाँही,

लाग आशक बुलबुलो ।
यारु वफाँयी कँह छय नो ॥

योदवै करख बादशाँही,
तोत छु वातुन तनहाँई,

तल ज़मीनस जाय छयो ।
यारु वफाँयी कँह छय नो ॥

पाक तारुचि येलि तोलन,
नरि जंग अँछ दिन गवाँही,

पाक छु पानै क्या हुलय ।
यारु वफाँयी कँह छय नो ॥

नमरूदन दम दिचाँई,
खून तोरु प्यव बर हवाई,

कान तँम्य लोय आस्मान ।
यारु वफाँयी कँह छय नो ॥

कारि बद छय रोय सियाँही,
बुछतु तहुँजय बारगाँही,

बार गोब छुय कोत तुलख ।
यारु वफाँयी कँह छय नो ॥

उस्मानो मंग पनाँही,
तति अरशस थरु चाँई,

तति नबियन ज़लज़लो ।
यारु वफाँयी कँह छय नो ॥



लीला 84

वृद्धि गथ चान्य दैवागथ, ज्ञेय विन दयि नो स्वरय लोलो ।

मे अंदर कर पनुन मन्दर, बु चेंय पूजा करय लोलो ।।

ब चाने वेरि सोंबरावय, अँछव किन्य रंगु रूपुक रस।

कनव किन्य शब्द साजुक मस, अँनिथ खास्यन बरय लोलो ।।

મે કુન વુછ વુછિ અસાન છુખ, દૂરિ રૂઝિથ આસ્માનન મંજી ।

गुपित छुख दास्तानन मंज़, बु दूर्यर नो ज़रय लोलो ।।

फिज़ा त्रॉविथ मे खँनिमुत्य ज़िस्य, ज़मीनस तल तु पूरन्य छिम।

स्यठा देवार लूरन्य छिम, त्रै रोस्तुय क्या करय लोलो ।।

बु छुस पोंपुर चे दीपस पथ, चँटिथ यिम जाम करहय गथ ।

दिहमनय जामु चटनुच वृथ, क्योमा ह्युव मा मरय लोलो ।।

मे निम पम्पोशि पादन तल, तिमन हुंद बोंबरा सूजिथ।

कंड्यन प्यठ छुस मरे रुजिथ, ब्रु चाने आसरय लोलो ।।

जमीनस जन्मकिस वविमति अशकुव्य दुर्दानु केह भविमति ।

अँछन मंज छिम रँछिय थँविमुत्य, तिमय खावे जरय लोलो ।।

यिम्न जोयन अन्दर यौदवय छु चाने सँहजु धर्मुक ज़ल।

बठ्यन हुंद छुख सम्मोमुत मल मै चावुम आगरय लोलो॥

पनुन मे तीजुकुय आगुर यिम्न ज़चन अन्दर भासुम ।

कुन्यर भाँविथ दुयी कासुम, गटे हुंदि गाशरय लोलो ।।

लीला 86

स्मुरण पनन्य दिन्नयनम,
 रँछरुन तोगुम नु रोवुम,
 पतुकालि छुम नु द्युतमुत,
 अँनि सारि क्या लबख व्वन्य,
 वॉलिंजि मंज थवुन गोछ,
 राह कस छु कोर मै पानस,
 हावुन छु रावरावुन,
 थावान छि छावु बापथ,
 यनु सुय निशान रोवुम,
 न्युन ह्यौन न कैह ति फेरान,
 उत्तरः (जवाब)

व्यसरुन पुनुन वनस क्या,
 बुथ मा सम्यम दिमस किथ,
 यछ पछ मु हार ब्याखा,
 तस छा कॅमी निशानन,
 डोलान कोहन वनन मंज़,
 ज़ोतान छि तारकन मंज़,
 व्यसरुथि डॅलिथ पथर प्यथ,
 पोत फेरनुक पकान छा,
 मानव ज़ि अँसि ह्यमव पोत,
 पैवंद यि आदनुक छा,

प्रेयमुक निशानु व्यसिये ।
ओसुम नु बानु व्यसिये ।।
सोन म्वख्तु दान व्यसिये ।
तिम म्वख्तु दान व्यसिये ।।
हावुन थोवुम अथस प्यठ ।
नुकसान पान व्यसिये ।।
चावुक समर छु खासये ।
बानन ति ठान, व्यसिये ।।
तनु मँच गँयस बु फलुवा ।
छस वान वान व्यसिये ।।

वननस ति वार मा छुम ।
गछ कोत शबान व्यसिये ।।
ह्यथ यूर्य वाति कांछाह ।
बॅर्य बॅर्य खज़ानु व्यसिये ।।
शोलान छि गुलशनन मंज़ ।
कॅात्याह निशानु व्यसिये ।।
बुथ क्या दिमव तॅमिस निश ।
युथ ह्युव बहानु व्यसिये ।।
छोर्या तसुंद मुहब्बत ।
शुर्य कारखान व्यसिये ।।



प्रछुगॉर येलि लगि बर दिथ ख्यनस, इसबाथ स्वय गॅयि चूर।
थरि थरि मा हरदु थॅर ज़न हॅरिव, ओदुर्य तॅरिव अपोर॥

पॅज़ि पान होव रेशि रॅसत्यन ऋषण, पशन ति भरुख प्रय।
अथ रेशि धर्मस प्यठ तोहि ति दॅरिव, सम दृष्टि तॅरिव अपोर॥

रुत्य भाव थॉविव रुतिय बॅनिव, रुतिय कॅरिव कार।
यी येति कॅरिव तिय तति स्वरिव, सत्कर्मु तॅरिव अपोर॥

अपारि बदलय विद्या छय पुरन्य, यूगच छय तति बोल चाल।
पॅरिवय येति श्री गीता पॅरिव, यूगय तॅरिव अपोर॥

अपारि ब्रह्मय छु छारान तु गारान, यॅच छुस ज़ि तुहुंद लोल।
येति क्या छु प्रावुन ज़ि वियोग जॅरिव, पज़ि प्रेयमु तॅरिव अपोर॥

वाव तस क्या करि तारक मंत्र, यस आसि दय सुंद नाव।
पानय छु करुनावि चिन्ता मु भॅरिव, डॅरिव मु तॅरिव अपोर॥



लीला 88

यारु सुंदे दादि दोदमुत दिल बहारस क्या करे।
वाव योदवय सोंतु कालुक आसि नारस क्या करे॥

काँसि प्रारान दारि प्यठ युस, वाँसि हारे दारि ओश।
आबशारुक तस हवस क्या, शालमॉरस क्या करे॥
काँसि पलजुन काँसि हुंद ज़ेवर, बनून यस योछ नु लानि।
स्वनु बनाँवितन संगि पारस, तस बिचारस क्या करे॥
होशि डॅजमुच्च जोशि वॅछमुच्च, पोशि गहनस तोशि क्या।
रोशि यस च़ोल ओश त्रॉविथ, गोश्वारस क्या करे॥
कालिदासस तालि कॅन्य, पत कालि वोनमुत गाटुल्यव।
तालि यनु युस लोग ज़ालस, गाटुजारस क्या करे॥
लोलु मस ज़ॉल्यम तु गाल्यम, यस बुडिथ मोलूम गव।
भीम नशके त्राविहे मस चोन, खुमारस क्या करे॥
रंग हॉविथ भ्रम दिवान ओस, कॅहवचन खोट म्योन स्वन।
अमि कोडुम अंदर्युम ख्वचर नोन, लोलु नारस क्या करे॥
डालि निम क्या बालयारस, औरु तु शुद्ध पाथ्यम नु दिल।
छेयनि मॅतिस यथ दागदारस, नाबुकारस क्या करे॥
ब्रोंठ छिय च़ोर कूठ मंज़िल, गाँफिलो बस कर मु च़ेर।
यस मॅतिस मागस जिगर, शेहल्यव नु हारस क्या करे॥



लीला 89

कोरनम यि टाँठय त् क्य़ाह वनस ।

थोवनम न बाक्य केंह ति मारनस ।।

स्वयं रुम छम मनकिस आईनस।

यि कोर न काँसि ति दुश्मनस ॥

सौरुम सु लाल रवँख मनस ।

जलाव लोग कज़लि वनस ।।

फोरुम सु नार खॅरमनस ।

लोगुस न केंह ति ज्येठनस ।।

दिलस ह्योतुन त जिगर तत्यव ।

शोर गव ज़ि नार हा ।।



लीला 90

धर्मक धैर कोर खँत्य हॉरवनसुय,

रंगु रंगु पोशन कॅरय अंबार ।

मादलि तुलसियि आरुवलि व्यनसुय ।।

नारायणसुय छु जय जय कार ॥०॥

गरि द्राय भावनायि सुत्य दर्शनसुय,

चाय पर्वत राजनुय दरबार ।

आय चक्रेश्वरसुय प्रदक्षणसुय ।।

नारायणसुय ह्यु जय जय कार ॥०॥

सुमेरु पर्वत कोह खँत्य स्वनसुय,
सिद्ध पीठ सार्यवय प्रोव अधिकार ।
नाश गव दारिद्रसु अँकिस क्षनसुय ॥
नारायणसुय छु जय जय कार ॥० ॥

जय जय छु गोकुलस तु बिंद्राबनसुय,
जय जय छु नोन द्राव कृष्ण अवतार ।
जय जय छु गूपियन तु गोवर्धनसुय ॥
नारायणसुय छु जय जय कार ॥० ॥

जय जय छु वसुदेवनिस च्यड ह्यनसुय,
जय जय छु देवकियि येम्य चोल बार ।
जय जय छु द्वख अंद वंद रोजनसुय ॥
नारायणसुय छु जय जय कार ॥० ॥

जय जय छु भलभद्रस तु अर्जनसुय,
भक्ती मंज यिम द्राय सरदार ।
जय जय छु तथ विश्वरूप दर्शनसुय ॥
नारायणसुय छु जय जय कार ॥० ॥

जय जय छु दशरथ राजनिस गुणसुय,
माजि कौशल्यायि बारम्बार ।
जय जय छु अजोद्यायि रामजुव ज्यनसुय ॥
नारायणसुय छु जय जय कार ॥० ॥

जय जयु छु राम चन्सद्रस तु लक्ष्मणसुय,
सीता मातायि जय जय कार ।
जय जय छु भरतस तु शत्रुगनसुय ॥
नारायणसुय छु जय जय कार ॥० ॥

जय जय छु वावु लोकपाल नन्दनसुय,
येमि द्युत लचि सुत्य लंकायि नार ।
जय जय छु सुग्रीवस विभीशनसुय ॥
नारायणसुय छु जय जय कार ॥० ॥

मन म्योन पतु लारि मदुसूदनसुय,
कामु क्रोध कंसस दिवनावि मार ।
हेश कति हारि मारि मोह रावनसुय ॥
नारायणसुय छु जय जय कार ॥० ॥

कोह आव ब्रोंठ दोह वोत प्यठ खनसुय,
तार दियि करि पंचालस पार ।
सत् चित् स्थित थावि शवद च्यतु मनसुय ॥
नारायणसुय छु जय जय कार ॥० ॥

वनुवन सोन गव मंज त्रिभुवनसुय,
थवनुय तस प्यव ग्यवनुय सार ।
मानुवन छु भक्त राजस तु नेर्दनसुय ॥
नारायणसुय छु जय जय कार ॥० ॥

हीतु अकि मायातीत निर्गुणसुय,
महामायायि सुत्य वैवाहकार ।
श्वेत पीतवर्ण स्वरून टोठ, रात दिनसुय ॥
नारायणसुय छु जय जय कार ॥० ॥

वनुवन यि केंछाह ओस पत वनसुय,
ती वातुनोव गूपियव गुपकार ।
वारु आव शंकराचार व्वलसनसुय ॥
नारायणसुय छु जय जय कार ॥० ॥

अनुग्रह चोन मंज अन्नसुय दनसुय,
वाँसि तान्य पोशुनाव होश व्यवहार।
'कृष्णस' तोशि मंज पोश वर्णसुय॥
नारायनसुय छु जय जय कार॥०॥



लीला 91

कमल चर्ण रटोय शर्ण चैय आये,
प्रेयम भरव तु ध्याना सौरव करव नमः शिवाय।
स्तुता परन परन शरन चैय आय॥

प्रेयम भरव तु ध्याना सौरव करव नमः शिवाय॥०॥

चुय छुख भक्तन वर्ण शर्ण चै आये,
चुय छुख द्वखन हर्ण शर्ण चै आये।
चैय मोक्ष दातस मूक्षय मंगव॥

प्रेयम भरव तु ध्याना सौरव करव नमः शिवाय॥०॥

बडयव योगव सुत्य सतसंगव,
व्वतम पदव तु स्वन्दर भंगव।
अधर्मियन सुती जंगव॥

प्रेयम भरव तु ध्याना सौरव करव नमः शिवाय॥०॥

संसारु समन्दरस तरव,
अज ताम तिय वोन महा ज़नव।
तम्युक निर्णय अर्येय क्या वनव॥

प्रेयम भरव तु ध्याना सौरव करव नमः शिवाय॥०॥

‘कृष्णन’ सत सौर तु सत बूज कनव,
मोकलाव रॅट्य मायि पनन्यव गरव ।

प्रेयम भरव तु ध्याना सौरव करव नमः शिवाय ॥०॥



लीला 92

सन्यास बे परवायि मस्तानय, पॉरय हो लगय म्यानि जानानय।

पॉरय हो लगय म्यानि जानानय ।।

कावन अथि छुख शैछ सोजानय, पौज बोज छुमनु डंजि रोजान दिल।
रोजखय तु बोजख लोलु अफसानय, ज्यूठ नो वनय म्यानि जानानय॥

पॉरय हो लगय म्यानि जानानय ।।

लूख क्याजि कन तलके दुर्दानय, ओरुक योर म्योन वननय हाल।
ब्याख मा छु बेय सुंद दौद ज्ञानानय, पान हो वनय म्यानि जानानय॥

पॉरूय हो लगय म्यानि जानानय ।।

मोहन चेति छिया मन मोहानय, चानि खौतु स्वंदरा ति उपद्वव कांह।
चु ति छुख ना विलुजार बोझानय, आर यियनय म्यानि जानानय॥

पॉर्य हो लगय म्यानि जानानय ।।

अँन्दरिमि राग अँगु धून्य प्रज़लानय, लूकु त्याग छुय न्यबुर मोलमुत सूर।
ओबुर तलु यि वुज़मल छि ट्रेठ यिवानय । सूर ग्वसानि म्यानि जानानय ।।

पॉर्य हो लगय म्यानि जानानय ।।

यम्बरजल चेशमन रुद अरमानय, शबनमु रौस्त कुनि वुछहोख मा ज़ांह।
सोम्बलस कस छि तिम पाद पूजानय। पूज हो करय म्यानि जानानय।

पॉर्य हो लगय म्यानि जानानय ।।

दूर रूजिथ दोलु लोयुथ कानय, छिह लॅगिथ बैयि ब्यूठ ज़खमन क्रोर ।
येति योरु स्योद कर तीरिमिजगानय, सीनु दारयो म्यानि जानानय ॥

पौर्य हो लगय म्यानि जानानय ॥

गरि गरि सोरहक देव सुंद ध्यानय, तोति क्याज़ि रटुहख ग्वफ तु गार ।
मन म्योन करहख खल्वत खानय, चूरि हो थवथ म्यानि जानानय ॥

पौर्य हो लगय म्यानि जानानय ॥

रंग रूप प्रथ अंगु छुख खोबानय, दिवता स्वभावस वातिहिय नु कांह ।
हंगु मंगु नय आसख रोशानय, आशतोश हा म्यानि जानानय ॥

पौर्य हो लगय म्यानि जानानय ॥

यूत नय चु आसहक शेर नोमरानय, कद चोन ओस खास स्वर्गुच थर ।
पोत छायि शूभिहिय सर्वि बोस्तानय, अभिमानु रस्ति म्यानि जानानय ॥

पौर्य हो लगय म्यानि जानानय ॥

शानन प्यठ केश छुय परेशानय, तालि प्यठ गँडिथ जटु सर्पाकार ।
कालु बोम्बुरगण ज़न छु नॉपानय, अबरु मोय म्यानि जानानय ॥

पौर्य हो लगय म्यानि जानानय ॥

क्वंगु तेहजव छु बोड प्रोवमुत शानय, कारतिक मास पूर्ण चंद्रस मंज़ ।
न्यथ डेंशवुन सु खालु केंह बाग्यवानय, पूर्ण चंद्रम म्यानि जानानय ॥

पौर्य हो लगय म्यानि जानानय ॥

जाविलि वोज़लि वुठ कुनि-कुनि आनय, असनचि त्रायि येलि कुमलान छिय ।
दौन पोश बर्गन छि मद छावानय, वुठ कुमलाव म्यानि जानानय ॥

पौर्य हो लगय म्यानि जानानय ॥

मॉसूम अथ खोर माज़ि रुस्त पानय, परम राग रंग कति प्रज़लान छिय ।
नम चॉन्य छा अकीक किन मिरजानय, आदनय सुंदर म्यानि जानानय ॥

पौर्य हो लगय म्यानि जानानय ॥

यथ हुस्नस न जेवरुक एहसान खॉलिस सोनस मूल मायि तु क्या।
युथ रूप छा भूषणस ओरुजमानय, साद शाहजाद म्यानि जानानय॥

पॉर्य हो लगय म्यानि जानानय॥

यिम चॉन्य खतुखाल याद पावानय, दूरिरुक दोद ताम मॅशरान छुस।
दोद बलि येलि वैद्य आसि वातानय, दौदिस वात म्यानि जानानय॥

पॉर्य हो लगय म्यानि जानानय॥

स्व. मास्टर ज़िन्दु कौल



लीला 93

दान मनसॉविथ अथु धारनोवथस,
यॅच कोरुथम अवमान मदनो,

अथ पतु निथ मॅचुरोवथस।
यि छा सा जान॥

रसु रसु कॅमि ताम वति पकनोवथस,
अनजान सरिगरदान मारुमति,

कुन ज़ोन वत् पिथठ त्रोवथस।
यि छा सा जान॥

मन वारि म्यॉन्य आश पोश रुवनॉविथ, सग दिथ वारु फोलुनॉविथ।
पानय कोरथस फान मस्ताना,

यि छा सा जान॥



दिल फवलि दर्शनु चाने, सूरमति सर्फु ग्वसाने ।
 दिमयो गोड अँशि वाने, सूरमति सर्फु ग्वसाने ॥
 शिव छुख कॉलास वॉसी, शक्ती छय चॉन्य दॉसी ।
 तति छय वसान शीनु शाने, सूरमति सर्फु ग्वसाने ॥
 जटि छुय चॅन्द्रम लूभान, हटि छुय वासुक शूभान ।
 गौरी शंकर साने, सूरमति सर्फु ग्वसाने ॥
 मृग शाला छुख वॅलिथुय, पानस भस्मा मॅलिथुय ।
 खुर कास असि ड्यकु लाने, सूरमति सर्फु ग्वसाने ॥
 जटि छुख गंगा त्रावान, पापव निशि म्वकुलावान ।
 यमराजु भय चोन माने, सूरमति सर्फु ग्वसाने ॥
 छुय त्रिशूल कालु संहॉरी, पानु छुख कल्याण कॉरी ।
 चानि कूदु जग मा फाने, सूरमति सर्फु ग्वसाने ॥
 नन्दकीश्वर चोन वाहन, पूर्ण कर मनिकामन ।
 कुस नु चोन महिमा ज्ञाने, सूरमति सर्फु ग्वसाने ॥
 रुद्रगण छिय चॉन्य संगी, सॉरिय चरसी तु बंगी ।
 कामदेव दोद च़खि चाने, सूरमति सर्फु ग्वसाने ॥
 आरुत्य छिय असि छारान, कोनु छुख भवुसरु तारान ।
 प्रारान तन मा प्राने, सूरमति सर्फु ग्वसाने ॥
 भोलानाथ सोन संकट, आवागमनुक चुय च़ठ ।
 यितु गछ़ रोज़ि बे माने, सूरमति सर्फु ग्वसाने ॥



लीला 95

ओम परवुन हंस ताजदार ।

कमि वनकुय जानावार ।।

जालु लगी ना सुय अनुखा,	मालु गँडहस छुम तमन्ना ।
नालु रटहन सुय बालुयार,	कमि वनकुय जानावार ।।
कोछु बु दिमयो हा कावो,	गछतु वनतस दियि दर्शुन ।
वछि वॉलिजि भावस असरार,	कमि वनकुय जानावार ।।
पोशु नूलव पोरुय हम सू,	कुकिलु बोलान गोविंद गो ।
हर मुख छा किन हरद्वार,	कमि वनकुय जानावार ।।
प्यठ गोशन रँटनम जाय,	कॉल्य पोशन पैयि मा हाय ।
व्वन्दु हंदुर्यस तु रोशि चलि यार,	कमि वनकुय जानावार ।।
खत बु लेखस हटि के रतु,	जॉविलि खतु सुति शूभिदार ।
यियि नत छुस बु दावादार,	कमि वनकुय जानावार ।।
बॉलि अनतने दूरि मा कॉल्य,	कॉल्य जिगरस गॅयिमय परगॉल्य ।
नॉल्य जामु तस छिय ज़रुकार्य,	कमि वनकुय जानावार ।।
हमसु पखुवुय पतु लारोस,	प्रारि प्रारोस डंडक वन ।
दोह दुरु लगी सोरि ल्वकचार,	कमि वनकुय जानावार ।।
दर्द सोजुक संतूर साज़,	सासि परद ग्यवि कोस्तूर राग ।
बुति ती ती वनान क्वलुतार,	कमि वनकुय जानावार ।।
‘भास्कर’ चैनतु सासन मंज़,	रुमु रुमु खास छु भासॉनी ।

ललुवुन छुम सु सीरि असरार,

कमि वनकुय जानावार ।।



लीला 96

ब्यल तौय मादल व्यनु ग्वलाब पम्पोश दस्तौय ।

पूजायि लागस परमु शिवस तु शिवनाथसतौय ॥

जटा मुकँटा प्यठ गंगा वसान छस तौय,

दीवि तु दिवता विष्णु ब्रह्मा छिस दस्तबस्तौय ।

भक्ती भावुक जय जयकार आँसिन तस तौय ॥

पूजायि लागस परमु शिवस तु शिवनाथसतौय ॥

दया सागरु लोल वुजयायि कोरनस मस्तौय,

हा पोश मते होश डॅलिमुत्य थव ध्यान ह्वस तौय ।

असार संसार छलुरावान सोर रोज़ि कस तौय ॥

पूजायि लागस परमु शिवस तु शिवनाथसतौय ॥

पम्पोश पादव सुत्य यितम अस्तौय अस्तौय,

चरणन बु वंदय जुव जान ह्वथ वॉलिंग वस तौय ।

रागु चानि सुत्यन पोन्व वुज्यम नागरादस तौय ॥

पूजायि लागस परमु शिवस तु शिवनाथसतौय ॥

पॉर्य पॉर्य लगोय ना शिव शंकर शिव नावस तौय,

दर्शन चान्युक छुम यॅन्न लोल सुत्य हवस तौय ।

टोठतम सदाशिव जगत ईश्वर छुस बेकस तौय ॥

पूजायि लागस परमु शिवस तु शिवनाथसतौय ॥

अमर नाथस नीलकंठस कलु वंदस तौय,

व्यचार सुत्यन 'कृष्णस' प्यठ आर यियिनस तौय ।

येछि पछि सुत्यन गछि अर्पन शिव भावस तौय ॥

पूजायि लागस परमु शिवस तु शिव नाथस तौय ॥

लीला 97

शरीर ज़ोलुम अम्य मदनवारन।

बे आरस आर नो छुये॥

प्रान ज़ोलुम पवनुकि नारन, शशि कलि हुंद में नार छुये।

समाह कोरम में ओंकारन, बे आरस आर नो छुये॥

लयि लोसम में तोसु चारन, रुम चौर्यमस में मोयि मोये।

दमु किय पन ज़न छस खारन, बे आरस आर नो छुये॥

बडि मनसरु यार छुस बु गारान, माह ईश्वर अथ मंज छुये।

काम क्रूध लोभ मोह छस बु थारन, बे आरस आर नो छुये॥

बुछतु मारु कुत्य कॅर्य अहंकारन, नार गोंडनक हा मोयि मोये।

फान कोरनस अनफासुकि नारन, बे आरस आर नो छुये॥

बदन ज़ोलनम अम्य मदनवारन, हये व्यसि यार यियम नाये।

व्यचार मनसरु गारहोन व्यचारन, बे आरस आर नो छुये॥

शास्त्र बल छुसया गारन, नॉल्य 'रहिमस' शास्त्र छिये।

ताज बरसर शास्त्र दीन दारन, बे आरस आर नो छुये॥



लीला 98

सतज्ञन बन मन कर कैलासुय ।

बस्तियि मंज वनवासुय रोज ॥

चित्त किन्य भस्म मल वल अतलासुय, साधू प्रकृच सन्यासुय रोज ।

ओम शिव शंभू कर अभ्यासुय, बस्तियि मंज वनवासुय रोज ॥

विषय त्यागुक धर माग मासुय, सत्संगुकुय उपवासुय कर ।

आत्म तीर्थ मन नाव मोह मस कासुय, बस्तियि मंज वनवासुय रोज ॥

पान प्रज्ञाविथ पानय मु आसुय, सर्व संकल्पन ग्रासुय कर ।

तलु प्यठु त्रविथ त्राव तलुवासुय, बस्तियि मंज वनवासुय रोज ॥

महामाया ह्यथ रछवुन दासुय, शिवनाथ हृदयावासुय छुय ।

तोति तस नाव द्राव साधु सन्यासुय, बस्तियि मंज वनवासुय रोज ॥

श्री कृष्ण महाराजन ख्यूल रासुय, गोपियि शुराह सासुय ह्यथ ।

बालु ब्रह्मचोरी तोति नाव द्रासुय, बस्तियि मंज वनवासुय रोज ॥

‘कृष्ण’ अंदरिमि त्यागु मल सूर सासुय, न्यबरिमि राग व्वलासुय कर ।

शुकदेवस गव यिय वॅनिथ व्यासुय ॥

बस्तियि मंज वनवासुय रोज ॥०॥



लीला 100

भ्रम छु संसार शम तु ज़ीवो, दम मु कर कांह खॉलिये।
करतु शम दम सौरतु सोऽहं, आसि गछनुय कौलिये॥

यिछ छय शूभान ओबरसुय मंज, वुजमला हाय त्युथ छु आय।
आयि गयि कृत्य काल हारन, शीन ज़न तिम गॅलिये॥

बौज्यगर सुंजय यि बौज्याह, सोर संसार ज़ानतन।
मोय च़े चोमुत मोहकुय छुय, छय च़े कॅमिचिय चॉलिये॥

रूदि ना येति राज़ तौय रक, रूदि ना येति शूरवीर।
अथ मूरान ख्यत अफसोस, कोत गॅयि धनु वौलिये॥

‘नीलकंठो’ बन शरण सत् गुरु, च़रणन मनु किन्य।
युन तु गछनुय तस छु माया, दाम यस गव नौलिये॥



लीला 101

इतना तो कर ले स्वामी,
गोविंद नाम लेकर,

जब प्राण तन से निकले।
फिर प्राण तन से निकलें।।

श्री गंगा जी का तट हो,
और सांवरा निकट हो,

या जमुना जी का वट हो
मेरे०

श्री बिंदराबन का स्थल हो,
विष्णु चरण का जल हो,

मेरे मुख में तुलसी दल हो।
मेरे०

सांवरा सन्मुख खड़ा हो,
तिरछा चरन धरा हो,

बंसी का स्वर भरा हो।
मेरे०

सिर सोहना मुकट हो,
यह ही ध्यान मेरे घट हो,

मुखड़े पै काली लट हो।
मेरे०

निकलें जो प्राण मुख से,
बच जाऊँ घोर दुख से,

तेरा नाम बोलू सुख से।
मेरे०

मुझ दास की इस अरज़ी,
आगे है तेरी मरज़ी,

को मानना न फरज़ी।
मेरे०



लीला 102

ध्यान का वायदा करके सजन तूने।

ध्यान लगाना छोड़ दिया॥

सीस तले पग ऊपर थे, जब माँ के पेट में लेट रहा।

तब ईश्वर से इकरार किया, तूने भूल के वह सब तोड़ दिया॥

ध्यान लगाना छोड़ दिया॥०॥

देख लुभाय गया जग की, रचना सब सुन्दर साज बनी।

उस सृजनहार की सार नहीं, तूने भोगन में मन जोड़ दिया॥

ध्यान लगाना छोड़ दिया॥०॥

गर काजन बीच फसाय रहा, दिन रात न मौत की याद रही।

उमरा सब बीतत जाय चली, तूने क्यों प्रभु से मुख मोड़ दिया॥

ध्यान लगाना छोड़ दिया॥०॥

बार ही बार फिरा जग भीतर, जीवन बनी सब जूनन में।

ब्रह्मानन्द भजा भगवत नहीं, भव सागर में सिर फोड़ दिया॥

ध्यान लगाना छोड़ दिया॥०॥



लीला 103

कीर्तन-दीवी चरुण चॉनिय भक्त सौरन छिय ।
यिमोय शरण करोय नमो नमस्ते ॥

संकट हरण कवच चॉनिय परन छिय,
कमल चरुण चॉनिय भखुत्यन वरन छिय ।
प्रेयम भरन यथ भव सरस तरन छिय ॥

यिमोय शरण करोय नमो नमस्ते ॥०॥

येति पूर्य त्रावख तथ जायि नेत्र जरन छिय,
मंगल रूपी ध्यानस चॉनिस सौरन छिय ।
कृष्णस सुत्य ह्यथ स्तुता चॉनी परन छिय ॥

यिमोय शरण करोय नमो नमस्ते ॥०॥



लीला 104

त्रिजगत नाथ परमु आनन्दय ।
सत् चित् रूप च़ेय पान वंदय ॥

कुस वेंनिथ हेंकि महिमा चोनुय, कॅम्य चोनुय प्रभाव ज़ोनुय ।
हे निरञ्जन हे निर्द्वन्दै, सत् चित् रूप च़ेय पान वंदय ॥

चानि आसुर हरी हरय, हे सत्य रूप च़ेय पथ बु मरय ।

छुस बु लज्जित स्यठा शरमंदय, सत् चित् रूप च़ेय पान वंदय ॥

कुस चैय ह्युव बनि परम् मित्र, बंध बांधव सौरिय छि शत्रुय ।

निर्मलु निष्कलु गोविंदय, सत् चित् रूप ज्ञेय पान वंदय ।।

भवसरस लोभुम नु तारुय, गोलुम च़ेय पथ ल्वकुचारुय ।

म्वकुलावतम मोहुनि फंदय, सत् चित् रूप चैय पान वंदय ।।

ऋषि बालुक छुस छम नु चाहत, मनसुय मै गछ्यम धन संपत ।

छम मे चाह ज्ञाननुच ज्ञान इंदय, सत् चित् रूप चैय पान वंदय ।।

संपदा आपदा ज्ञानु रॅस्तिस, आपदा संपदा ज्ञान सॅस्तिस।

ज्ञानु हीनस वखनान अंदय, सत् चित् रूप चैय पान वंदय ।।

रचना जगतुच स्वपनु माया, सत वननिय पुनी छय छाया ।

ज्ञानु निश मत थवतम मे अंदय, सत् चित् रूप ज्ञेय पान वंदय ।।

‘ठाकुरस’ चाँन्य अभेद भक्ती, येलि बन्यस स्वय गँयि मुक्ती ।

नतु क्या करि खॉली चंदय, सत् चित् रूप च़ेय पान वंदय ।।



लीला 105

गाँफिल म बन पायस प्यतो।

तस जानि जानस वोन दितो ।।

दौर च़ेय पनुन मोर ज़ोनुथय, रज़ि गोय सरुफ पोज़ मोनथुय।

सत् संग गंगि अमृत च्यतो, तस जानि जानस वोन दितो ।।

दिल साफ थावतो आईनय, मल गालतस तुलतस चु खय।

छोट्य पॉठ्य ल्थ मटि चय ह्यतो, तस जानि जानस वोन दितो ।।

दिलनुय सहल कोर मुश्किलय, ब्रोंठ्योख तु ज़ेठ्योख मंज़िलय।

स्यजि वति पकनस प्यठ यितो, तस जानि जानस वोन दितो ।।

सर्व मंगल परम सुख दिम, हर्ष दिम कल्याण दिम।

अंत कालस मंज ख्यालस, सत् स्वरूपक ध्यान दिम॥

बाग दिम बंगाल दिम, हमाम दिम डालान दिम।

रायि रोस्तुय यिम बनन तिम, जायि ऑलीशान दिम॥

जीवतुक भ्रम चलनु बापथ, पवनसुय ह्यु पान दिम।

ध्यान 'कृष्णस' योग ह्यथ दिम, भोग अमि येमि सान दिम॥



लीला 107

बनुन आज़ाद ज़ि यक न्यरनय, करुन गछि पानि पानस जय।

कैरिथ भक्ती चे मुक्ती छय, करुन गछि पानि पानस जय॥

बु हर सो बुछ तसुंदुय रूप, विवेक्यु नोम प्रज़ुलाव दूप।

तैमिस रोस बुछ छय मा कांह शय, करुन गछि पानि पानस जय॥

च्यतुय नोम शीशु युस छुय चोन, विद्वानव ज्ञान वानव ज़ोन।

करुम निर्मल तु कासुम खय, करुन गछि पानि पानस जय॥

चित्तुक गुर वारु पकनावुन, दैछिनि खोवुर्य मु बुछिनावुन।

व्यचारक्य कोचु त्रावुस हय, करुन गछि पानि पानस जय॥

सिलाह सामान युद्ध वेश गंड, दिवान गछु सर्वु वेशयन दंड।

सो गैयि निष्काः कर्मचि क्रय, करुन गछि पानि पानस जय॥

लीला 108

देहकिस द्वारस लुयि त्रोंपरावुन्य, मोह निशि चित छुय प्रावुन हो।
वावस मंज्र बाग चोंग संदारुन, सत् व्यचारुन सोऽहं सो॥

मनचय प्रथवी गाश हयतु सारुन, शशिकलि प्रबात फोलुवुन ह्यु।
द्वादशांत मंज चित सिर्य गछि खारुन, सत् व्यचारुन सोऽहं सो॥

ग्वरु शब्द निरोध किन्य हॉगिणि हारुन, येछि वोंदु पछि सिंधि सावुन ह्वु ।
पुक्तकार म्वखतु समंदर गछि खारुन, सत् व्यचारुन सोऽहं सो ।।

प्रानस तु पवनस मन मिलुनावुन, द्यान धारनायि किन्य दारन ह्यु।
तमि यूग ज्योति रूप ब्रह्म वैस्तारुन, सत् व्यचारुन सोऽहं सो॥

जाग्रत त्रैविध्यं स्वप्नं प्रखटावुन, सुशप्तिं मञ्जं सुखं प्रावुन ह्यु।
तुर्यायि सत्यं चित्तं लयि संदारुन, सत् व्यचारुन सोऽहं सो॥

पद्यव रौस्त मद होस विस्तारु तारुन, शमशेरि धारि प्यठ लारुन ह्यु।
पख उपजॉविथ वुफि गछि तारुन, सत् व्यचारुन सोऽहं सो॥

दम ह्यथ दमनस मन सोनुर गारुन, देह मायायि त्राम कारुन ह्यु।
ज्ञान सोन चित कहवचि गच्छि खारुन, सत् व्यचारुन सोऽहं सो॥

‘चन्द्रो’ अन्दरी वाव ह्यत तारुन, ओबरु तल सिर्य प्रकटावुन ह्यु।
अंदकार चॅलिथ गटि गाश ह्यख सारुन, सत् व्यचारुन सोऽहं सो॥

लीला 109

जार्फय पोशस छु लक्ष्मी अंग तौय ।

स्वन सुंद रंग तौय पूजायि लाग ॥

सत्य देव लक्ष्मी नारायण तौय,

सर्व देव ह्यथ कासिय दुर्गत ।

पोश पूज करतस अन्न धन मंग तौय ॥

स्वन सुंद रंग तौय पूजायि लाग ॥०॥

मादुलि हियि, पम्पोशन डेर कर,

तुलसी छौव्य छौव्य शेरतस पान ।

स्वदंर ड्यकसुय द्योक लाग क्वंग तौय ॥

स्वन सुंद रंग तौय पूजायि लाग ॥०॥

सुय दियि मोक्ष, आय अन्न, धनु द्यार,

धारणा दान, ज्ञान योग व्यचार ।

वसनस नाव खसनस क्युत प्रंग तौय ॥

स्वन सुंद रंग तौय पूजायि लाग ॥०॥

सत्पुरुषन निश ह्येछ करुन भक्ती भाव,

: तिहुंदन पादन तल पान त्राव ।

पान थव दुस भावु तिम बर हंगु तौय ॥

स्वन सुंद रंग तौय पूजायि लाग ॥०॥

साध छुय पूजनीय तसुंदुय मन छु सेर,

मुशका ह्यत चरणु कमलन नेर ।

ऑल मान राधा कृष्ण ज्ञान र्वंग तौय ॥

स्वन सुंद रंग तौय पूजायि लाग ॥०॥

यूत ज्ञानख त्यूत पूजि मंज लीन बन,
भक्ती भावस मंज आदीन बन।
सुय छुय रुत साथ स्वय रुच जंग तौय ॥
स्वन सुंद रंग तौय पूजायि लाग ॥०॥

स्वय दया मंगतस भक्ती भावस सान,
योस कौसिय रूग देह अभिमान।
व्यवहारन छुख ओनमुत तंग तौय ॥
स्वन सुंद रंग तौय पूजायि लाग ॥०॥

ज्ञान कुलिसुय छिय शम दम लंग तौय,
शांती मूल मोक्ष त्यहुरुय छुस।
ख्यतु भक्ती भाव रस बैर्यथुय टंग तौय ॥
स्वन सुंद रंग तौय पूजायि लाग ॥०॥

ब्रह्मांड पान ज्ञान वारु सौरस नेर,
सार्यनय तीर्थ यात्रायन फेर।
जोर मुचराव चित तोरगस डंग तौय ॥
स्वन सुंद रंग तौय पूजायि लाग ॥०॥

अज्ञान गटि मंज प्रजलाव दीपय,
शंकर 'कृष्ण' एक रूपय छुय।
यी वनान साद संत कैरिथ सत् संग तौय ॥
स्वन सुंद रंग तौय पूजायि लाग ॥०॥



लीला 110

श्री परमानन्द जियनि 'शिवलग्न', मंजु वेंह श्लोक।
रस पूर्ण परम सदा शिवह, सत् चित्त आनन्द विज्ञान रवह॥

दीन चानि नव निध अष्ट सिद्ध, ज़ीवन हुंदि करुणा निदह।
गलि गलि अमृत यिमव चैवह, सत् चित्त आनन्द विज्ञान रवह॥

क्वब्बजि भजना चॉन्य करह, गागारि मंजु यितम सागरह।
ज्यव दिम तिछ युथ चॉनी गीत ग्यवह, सत् चित्त आनन्द विज्ञान रवह॥

छ्यन्यमुच स्व आशव पाशव सान, आशो मटि छुय पान दपान।
हे शिव, थँवमय मे आशव, सत् चित्त आनन्द विज्ञान रवह॥

पानस पानय छु मेलनुय, गिंदुना छु गिंदुन तु गेलनुय।
स्वनु नेरि नारु मंजु गलि ज़वह, सत् चित्त आनन्द विज्ञान रवह॥

देह दृष्ट गलि ज़लि अभिमान, अदु बनि सत् स्वरूप ज्ञान।
कृष्णस युथ ज़ि मेलि उद्ववह, सत् चित्त आनन्द विज्ञान रवह॥

युस येछि सुय सुय तस येछे, गछि यस सुय सुय तस गछे।
येछि पछि तँमिसुय प्रारवह, सत् चित्त आनन्द विज्ञान रवह॥

लोलय छु ओर योर म्वलवुनुय, लोलय छु ओरु योरु ललुवुनय।
लोलु सुत्य सुय लोल ललुवह, सत् चित्त आनन्द विज्ञान रवह॥

कैह छुन लोल रोस आसुवुन, लोलुय छु सॉर व्याध कासवुन।
लोलके गाशु गटु कासवह, सत् चित्त आनन्द विज्ञान रवह॥

लोल बोज़ ब्योल व्वन्य बोवनय, लोलुय छु चोदाह भवनय।
शोलुवुन छु सोरुय लोलुवह, सत् चित्त आनन्द विज्ञान रवह॥

लोलु सुत्य व्वलसनु आयि ज़ग, लोलु सुत्य छम भॅरिथ पय तॉय रग।
लोलु परमानन्द प्राववह, सत् चित्त आनन्द विज्ञान रवह॥

‘परमानन्द’ बोज़ दयगथ, वोथ त्राव सॉर्य मथ मो चु मत।
कथ बोज़ नतु क्या यि क्रव क्रवह, सत् चित्त आनन्द विज्ञान रवह॥



लीला 111

यस छु हटि वासुक, तस छु जाटि पोन्थ।
ग्वसॉन्थ हॉय ग्वसॉन्थ हॉय, ग्वसॉन्थ हॉय ग्वसॉन्थ हॉय॥

युस देव सर्व देवन हुंद छु आद, सुय वरि पाप हरि करि प्रसाद,
यस देवस छि पम्पोश हिव्य पाद, हर म्वख बरु तल लायोस नाद।
पादव तैलि छुस पकान सेदि वोन्थ, ग्वसॉन्थ हॉय ग्वसॉन्थ हॉय॥

युस थ्यकुनुय छु देवियन तु देवन, तस देवस छि सर्वु देव सेवन,
आत्म रूप आसुवन छु मंज ज़ीवन, प्रान धॉरियन क्युत छु संज़ीवन।
सुय नंगु नोन चोन दियि गंगु वोन्थ, ग्वसॉन्थ हॉय ग्वसॉन्थ हॉय॥

पूर्णांयि सोस्ता छु नूर भँरिथुय, ब्रह्मांडन पालना वँगरिथुय,
स्वखु म्बख सुत्य छुय द्वख हँरिथुय, वर अभय सुत्यन छुय वँरिथुय।
येमि सुत्य पानस न्युव सौंदिवोन्य, ग्वसॉन्य हॉय ग्वसॉन्य हॉय॥

जन्मन हुंज व्याँज जालुवुन छुय, ज्यनु मरनुक्य गुण गालुवुन छुय ।
माजि मॉल्य सुंदि खेतु पालुवुन छुय, सानि कर्म भुतराँच वालुवुन छुय ।।
आत्मु बोधुक रूद शांतियि शोन्य, ग्वसाँन्य हाँय ग्वसाँन्य हाँय ।।

प्रेम मस चावि मॅशरावि हनु हनु, सत भावु न्यथ थावि नेष्कल मन,
मोक्ष द्यावि करुनावि आनन्द गन, संम्वख नॅन्य हावि ज़ोतन तन।
'कृष्णस' प्यठ त्रावि शांतियि शोन्य, ग्वसॉन्य हॉय ग्वसॉन्य हॉय॥



लीला 112

श्री निराकारय त्रिभुवन सारय, प्रारय पनुने यारय बल।
भस्मा धारय छम चॉन्य लादन, साधन प्यमयो पादन तल॥

लमुयो जामन रटुयो दामन, शिवनाथ छम चॉन्य मनिकामन।
त्रिजगत्पालय यितु सानि सालय, चावतम प्यालय अमृतजल॥

त्रिभुवन सारो हनि मंज छुख, मायायि सुत्य छुख नु यिवान द्रेंठ।
सत् चित् आनन्द गोविंद केवल, जाय चॉन्य हृदयुक पम्पोश डल॥

मनुकिस बागस फुलया द्राये, रछवुनि लछुनावि अँछ पोश छाव।
शोकु चानि प्रेयमुक बुलबुल छु नालान, बोलान लोल नय दिदरि तु जल॥

हे कृष्ण वासना शुद्ध थव स्योद थव, बुद्ध थव सतसुय कुन सन्निदान।
सतसुय कन थव सतसुय मन थव, सतुकिस कुलिस वसि आनन्द फल॥



लीला 113

कर सना ह्योयि जन्म यथ हृदयस अंदर श्री कृष्ण देव।
कर सना यियि माति असि पोज रुत स्वंदर श्री कृष्ण देव॥
कर सना गट कूठरे अनि गाश वुजमुत स्व प्रकाश।
बांदि वानुचि बेडि फुटरिथ खोलि बर श्री कृष्ण देव॥
वैर लोभ तु द्वेष तौय अन्याय रूपी दानुवन।
चक्र सुत्थी अभिमानचे फुटरावि थर श्री कृष्ण देव॥
जोर ज़र रस्यत्यँन दरिद्रन, दलितन करि यावरी।
दैदिमुत्यन शेहलावि दिथ शीतल नज़र श्री कृष्ण देव॥
अर्जनस दिथ आज्ञा वद दिल मु बन थोद वोथ चु लड।
कासि ना अँसि दीनता, पस्ती हचर श्री कृष्ण देव॥
कृष्ण पूजा क्या छय ? पालुन तँमि सुंदुय थोद कर्म योग।
धर्मचे वति हुंद बनावुन रहबर श्री कृष्ण देव॥

नेर्यस प्रकाशु थॅनिये, आत्म देव ग्यव रछुनये, दारि बर बंद करुनये, दोगुन गछि ओगुनये, प्रजुनाव पान पनुनुये, चित्त प्रकाश ह्ययि व्वलसुनये, फल निश कुल कति भ्योनये, सुय फोल ह्यवान फोलनये, कति रोजुन तु मरुनये कुस दारि कस होरुनये, यच्छा कुल गालुनुये, भक्तिस हाल भावुनये,	देह गुरसस मंज नॅनिये। हॉविथ शुभ दर्शनुये।। यि रत्न ह्ययि चमकुनये। हॉविथ शुभ दर्शनुये।। अदु कति जगत भ्योनये। हॉविथ शुभ दर्शनुये।। फलिसुय मंज सु आसुवुनये। हॉविथ शुभ दर्शनुये।। दुय गलि पतु रोजि कुनये। हॉविथ शुभ दर्शनुये।। तैलि क्याह नोन वनुनये। हॉविथ शुभ दर्शनुये।।
--	--



लीला 115

परिपूर्ण छु नूर भोरमुतये ।

सूरमोतये आंगन चाव । ।

शांत निर्मल ब्रोंत कासुवुनये,
 शिव शम्भु अलख बोलवुनये,
 नंगु भस्मा अंगन मोलमुतये,
 ड्यकि चंद्रम टिकु शोलवुनये,
 अलख बूज़िथ तिमु गूर्य भाये,
 धनु द्वारव भोरनस फोतुये,
 ग्यव द्वद थन्न्य आरूदमुतये,
 ह्यथ जसदा करान ब्रोंठ पौतये.

बासवुनये सास रव ज़न।
 सूरमोतये आंगन चाव॥
 हटि भुजग जैटि छस गंङ्गा।
 सूरमोतये आंगन चाव॥
 जसुदायि सान करान विनती।
 सूरमोतये आंगन चाव॥
 कंदु नाबद सुगन्द सान।
 सुरमोतये आंगन चाव॥

ईक्ष्णु किन्त्य कौरुख वारु सम्वाद, दर्शनु ऑस्य हर्शानी ।
 ती वोनुख यी जगुतस ह्योतये, सूरमोतये आंगन चाव ॥
 शशि लूसिथ रवु खोतमुतये, प्रवु तारकन हुंजु चमकान ।
 शिव नारान कुनुय गोमुतये, सूरमोतये आंगन चाव ॥
 नोन वोन पानु येलि हरुनय, बरुनय तौर्य मुन्नरु आय ।
 नेबरु अँदरु ईकु बोसमुतये, सूरमोतये आंगन चाव ॥
 वोन्दु इन्दु रव मन फोलमुतये, मँद्यानुच संद बासान ।
 सुबु शामन मेल कोरमुतये, सूरमोतये आंगन चाव ॥
 वीदु वॉनी ईकु बाव होवुख, बोवुख कस यि सीरि इसरार
 शामु प्रभात अर्घ म्यूलमुतये, सूरमोतये आंगन चाव ॥
 दीव आकॉश्य पोश वरशॉनी, अछु रछु मचु नचुनस गॅय ।
 द्राव शम्भू सु आकाश खोतये, सूरमोतये आंगन चाव ॥
 कर्मु भूमि दर्मुक सोथ दियुन, परम पावन मर्यादा ।
 बोर जगुतस तुलनि आमुतये, सूरमोतये आंगन चाव ॥
 द्वष्ट द्वर्जन नष्ट करुनावुन्य, बरुनावुन्य सृष्ट आनन्द ।
 ईशु चुय छुख ज्येष्ट मोनमुतये, सूरमोतये आंगन चाव ॥
 रक्षा करुन्य स्यदन तु सादन, वीद विरूधिन वद करुवुन ।
 शुद्ध धर्मु राजु अंदु गोमुतये, सूरमोतये आंगन चाव ॥
 नाद लोयुम तँती लोलु होतये, रासुक भास यान्य वनि आम ।

‘सास भास्कर’ ज़न पूर्य खतिये,

सूरमोतये आंगन चाव ॥



लीला 116

वन्दयो मुन्य ब पादन ।

छारथो राम राधन । ।

विचार नॉग्य वति लारय,
 ब्रह्म सरु किन्य दिमय कन,
 अँछन हुंद गाश म्योनुय,
 कॉल्य राव्यम हिये तन,
 कशु तीर लोयथम मे,
 अशि फेरेयव हर्यम तन,
 महालिशि किन्य यिमयो,
 हंसु द्वारु गँछिथ रटय वन,
 चु रूदहस कथ शाये,
 गंगु बल युन छु आदन,
 गोसु नो कैह मे चोनुय,
 चारु नो लॉन्य वादन,
 चज़ि गोख मे निश दूर,
 वुज़ि पोन्थ नागु रादन,
 नाव तन त्राव कीनुह,
 हाव मुख थाव लादन,
 बॅरनि बल युथ नु रावय,
 आलव दिज़्यम मे नादन,
 नेत्रन मंज़ रटय पाद,
 मरयो वुनि छु आदन,
 नुनरुकि तारु प्रारय।
 छारथो रामु रादन।।
 खुश यिवुन नुंदबोनुय।
 छारथो रामु रादन।।
 लशि छम नॉरुन्य रेह।
 छारथो रामु राधन।।
 हरम्बख वॅन्य दिमयो।
 छारथो रामु रादन।।
 क्रेंक नॅदियि वोठ बु लाये।
 छारथो रामु रादन।।
 दयन येलि बानु ज़ोनुय।
 छारथो रामु राधन।।
 यिज़ि तेलि येलि गछ्यम सूर।
 छारथो रामु राधन।।
 भाव सीर दोद मे सीनय।
 छारथो रामु रादन।।
 रामु रामु क्रख त्रावय।
 छारथो रामु रादन।।
 बुथि शेरि किन्य दिमय नाद।
 छारथो राम रादन।।

नारान नागु प्रारय,	वांगत जाय छारय।
प्रारय सुत्य सादन,	छारथो राम रादन॥
सिर्यस छु गाश चोनुय,	तस छु 'प्रकाश' चोनुय।
स्वय छय यूग सादन,	छारथो राम रादन॥



लीला 117

सिरियि वुज़ुनोवुम चंद्रम सोवुम,
तारकन द्योवुम शून्य मंज़ु थान।
गाशु सुत्य गाशुक गाश प्रज़ुनोवुम॥
सुबह रूप होवुम श्यामु लालन॥०॥

दिन तु रात पौंदु गॅयि सिरियि प्रक्रम सुत्य,
चन्द्रमन प्यालु बैर्य शबनम सुत्य।
तमि प्यालु श्याम लाल दामा चोवुम॥
सुबह रूप होवुम श्यामु लालन॥०॥

मन गुलि आफताब ज़न फोलुनोवुम,
सिरियि गँज़रोवुम परमात्मा ।
तथ कुन मुख हॉविथ सुख प्रोवुम ॥
सुबह रूप होवुम श्यामु लालन ॥० ॥
आत्मतीर्थ मार्तण्ड मंज़ तन नॉवम,
पितृ लोकस द्यावुम तृप्ती ।
तमि कर्म त्रेन हुंद ऋण म्वकुलोवुम ॥
सुबह रूप होवुम श्यामु लालन ॥० ॥

निर्वासनकुय आसन प्रोवुम,

तति बेहनोवुम प्रत्यक्ष देव ।

निर्मल पम्पोश डल फोलनोवम ॥

सुबह रूप होवुम श्यामु लालन ॥०॥

श्री 'कृष्णस' सुत्य दोह गुजरोवुम,

शामन होवुम तम्ये श्यामु रूप ।

सुब्हस सुत्यन शाम मिलुनोवुम ॥



लीला 118

अँरिनि रंग गोम श्रावन हिये ।

कर यिये दर्शुन दिये ॥

श्यामु स्वंदरन पामन लॉजिस, आमु तावन कोताह गॉजिस ।
नामु पैगाम तस कुस निये, कर यिये दर्शुन दिये ॥

कंद नाबद आरुदमुतुय, फंद कॅरिथ चोलुम कोतुय ।
खंद कॅर्यनम लूकन थिये, कर यिये दर्शुन दिये ॥

सुलि वॅथिवो संगरमालन, लालु छारोन कोहन तु बालन ।
प्रारान छस बु तहुंजि जिये, कर यिये दर्शुन दिये ॥



लीला 119

मुझे राम से कोई मिला दे,
राह से कोई लगादे,
बिन लाठी का निकला अँधा।
मुझे राम से कोई मिला दे॥

कोई कहे वह बसे अवद में, कोई कहे वृंदावन में।
कोई कहे तीरथ मन्दिर में, कोई कहे मिलते बन में ॥

देख सकूँ में उनको मन में, ऐसी जोत जगादे।
मुझे राम से कोई मिला दे।।



लीला 120

स्मरणि चानि पाप सॉरी हॉरी ।
हॉरी पर्वतचि हॉरिये ॥

संकट कट छख हे मुकट धौरी, तीजु चानि प्रज़लन आव संसार ।
सिंह आसन च़ेय छय सवौरी, हौरी पबर्तुच हौरिये ।।

गौरी नावस लगेय पॉर्य पॉरी, चाव प्रेयमु दोद चडुवॉरिये ।
जॉन्यनख अभिनवगुप्त आचॉरी, हॉरी पबर्तुचि हॉरिये ।।

नैट्य लछुल्य आकाशन ग्रटन तॉरी, नोन नीरिथ वोन महिमा चोन।
परम शक्त मॉनिख शंकराचॉरी, हारय पर्वतुचि हॉरिये ॥

अज्ञपा गायत्री जपहोथ अंदरी, श्री सुंदरी योगु न्यंदरे मंज।
मनु प्रान ध्यान ज्ञान व्यचोरी, हारी पर्वतचि हारिये॥

परमात्मा रूप छख जगतुच साक्षी, जितेन्द्रिय इंद्राक्षी छख ।
 प्रान शक्ती सृत्य छख पानु व्यवहॉरी, हॉरी पर्वतचि हॉरिये ।।

पानु छख यूगी पानु ज्ञानी, वानी रूप भवॉनी छख।
ब्वज स्रुत्य ह्यस रटनुचि वेस्ताँरी, हॉरी पर्वतचि हॉरिये।।

चामर लागु होय पोश च़ॉरी, चण्डी चुय छख चेतन स्वरूप।
चित शक्त छख चैनवन्य च्वपॉरी, हॉरी पर्वतचि हॉरिये॥

मोह ज़ाल मंजु नेरनुक उपाया, कर राजु हंसुन साया त्राव ।
हंस नाद सत्य तार येमि हंस द्वॉरी, हॉरी पर्वतचि हॉरिये ॥

हीमाल पर्वतन्च राज़ कुमौरी, च़रनन लगेय पौर्य पौरये ।

‘कृष्णस’ भक्ति बोज़ कन दार्य दौरी।

हॉरी पर्वतचि हॉरिये ॥०॥



लीला 122

पानय मे पान हॉविथ, आशायि दारनॉविथ।

तनहा चोलुख मे त्रॉविथ, कस म्यानि जोगि रायो ।।

बुछनोवथस मनुक मल, स्वन म्योन द्राव सरतल।

बुछमख नु वारु कोरथम, चस म्यानि जोगि रायो ।।

हृदयवृद्धि च तिमिच्छ्व, मुचरिथ ब सीन हावय ।

चुय वन चें रोस बावय, कस म्यानि जोगि रायो ।।

यवु किन्य बेसोम छे कोमल, हृदयस कठोर वाँणी ।

ग्रावन दिमव येतिय छ्यन, बस म्यानि जोगि रायो ।।

लोबमख तु व्वन्य मु रावुम, बालन कोहन मु छावुम ।

सत्संग प्यालु चावुम, मस म्यानि जोगि रायो ।।

भगवान सोन बूज़िन असि आश चॉन्य रूज़िन ।

हथ वाँसि माजि मॉलिस, लस म्यानि जोगि रायो ।।

नित्य इष्ट देव संधन पम्पोश पादुनय तल ।

बंबुर बैनिथ चवान गछ, रस म्यानि जोगि रायो ।।

पजि प्रेयमके प्रभावय भूगान सुख त सावय ।

निरोग राज्ञ योगस, खस म्यानि जोगि रायो ।।

दय सुंद प्रसाद सतज्जन, भक्त्यन छि बाँगरावान ।

प्रेयमुक चवान त चावान, मस म्यानि जोगि रायो ।।

बु ति चॉन्य दौसिया छस जेय मूल माला अर्पन ।

युथ ह्रुख च इष्ट दीवस, तस म्यानि जोगि रायो ।।

व्वपकार म्यानि बापथ, थोद यूग पीठ त्रॉविथ।

असि निशि ति कयूँच काला, बस म्यानि जोगि रायो ।।

लीला 124

हतो जीवो तसंजं थव कल।

चु प्रावख सर्वदा मंगल ।।

खबर मा छय बु कवु जायोस, करनि क्याह योर बुय आयोस।
स्व मेहनथ कर लबख रुत फल, चु प्रावख सर्वदा मंगल।।
मँ रावर क्षन तु दिन तस विन, स्वरुन हरदम चु जीनिथ मन।
प्रेयम ज़लु चुय मनुक मल छल, चु प्रावख सर्वदा मंगल।।
सतन सुत्यन चु सत साँपन, चु सत आँसिथ असत मो बन।
अचल आँसिथ मँ बन चंचल, चु प्रावख सर्वदा मंगल।।
कँरिथ तय, वोथ, चु थानन फेर, रँटिथ दम दम कँरिथ चुय नेर।
वज़िय ज्योति वुज़ी शशिकल, चु प्रावख सर्वदा मंगल।।
यिमन अंदर नज़र थाँविथ, पनुन तीज़ा दियम हाँविथ।
सिरिय चन्द्रम अग्न वुज़मल, चु प्रावख सर्वदा मंगल।।
नॉज़ित हठ वठ चु येंद्रिय ज़ाल, यि कामु कूध लोभ तु मोह मद गाल।
उदासीन रोज़ तु भूग अन्न ज़ल, चु प्रावख सर्वदा मंगल।।
गछुन युन योस गँछिय च़ेय हान, तम्युक कारन चु ज़ान अज्ञान।
व्य़ार कर बनि सु मुशिकल हल, चु प्रावख सर्वदा मंगल।।
चु भूतन करतु विसर्जन, स्व आत्मच ज़ान आवाहन।
ज्यन मरनुच च़लिय गांगल, चु प्रावख सर्वदा मंगल।।
चु मेत्रस अथि पनुन ज़र थाव, समुद्रस वस तु वस्वास त्राव।
चु लाल खारख तु लाग डूंगल, चु प्रावख सर्वदा मंगल।।
हंस आँसिथ चु मो बन काव, हंस बन द्वद्ध तु पोन्थ अंज़राव।
स्व स्मृत अन सिरन मो डल, चु प्रावख सर्वदा मंगल।।

अँदर्य किन्य सारिकुय कर त्याग, न्यबुर्य किन्य सारिकुय थव राग।
 वैराग तनि रागु जामु वल, च़ु प्रावख सर्वदा मंगल॥
 च़ु 'नीलकंठ' कर सन्यास, नदी उपाध पानस कास।
 च़ु सुत्यन तथ समुद्रस रल, च़ु प्रावख सर्वदा मंगल॥



लीला 125

मनि मंज़ ललुवथ कन्हया लालो।

भय हर बालु गोपालो वे॥

भय मंज़ कडतम दयि अकालो, रक्षपालु हा वृन्पालो वे।
 प्रेयमु रसु भरतम मनुकुय प्यालो, भय हर बालु गोपालो वे॥
 गूपियन सुत्यन मारवुनि छालो, द्वख हरु भक्त रक्षपालो वे।
 जन्म गम कास्तम कंसुनि कालो, भय हर बालु गोपालो वे॥
 दूर्यर चोनुय कोताह च़ालो, वलनय आस जन्मु ज़ालो वे।
 घानु दुकारि तथ बनि परनालो, भय हर बालु गोपालो वे॥
 खटतम मतु पान रटथो नालो, आस्तम च़ु नॉली नालो वे।
 लूस्मुत प्रारु व्वन्य कोताह कालो, भय हर बालु गोपालो वे॥
 हारान वुछतु छुस अशने च़ालो, लालो, छँत्य गयम वालो वे।
 बालि आम बुजर तॉय कँह्य संभालो, भय हर बालु गोपालो वे॥
 दोह आम सोरान छँत्य गयम वालो, पलि कँह ति पोवुम नु मालो वे।
 अथ छोन तु न्यथुनोन छुस बे हालो, भय हर बालु गोपालो वे॥
 येलि बनि संयोग आसि कुस कालो, दुय रोज़ि नु कुनि कालो वे।
 गुरु शब्द एकुत बनि नन्दलालो, भय हर बालु गोपालो वे॥
 नय छुख आकाश नय पातालो, नय छुख जंगल तु बालो वे।

वनि छुखनु यिवान आसिथ नॉली नालो, बय हर बालु गोपालो वे॥
मनसरु कुय बन राजु निरालो, 'नीलकंठनि' छुय सालो वे॥
रछतम संकटु येमि कलि कालो, बय हर बालु गोपालो वे॥



लीला 126

नाद बिन्दु परमानन्द नन्द लालय।
गोकुलानन्द गोविन्दु गोपालय॥

मधु कैटब मारवुनि हा दौद चूरय, मन मंजलिस मंज करय गूर गूरय।
गोपीनाथु बालु त्रिजगत पालय, गोकुलानन्द गोविन्दु गोपालय॥

यादव कुल के माधव रामय, हे निर्मल निष्कलु निष्कामय।
गूर्य बालकन सुत्य मारवुनि छालय, गोकुलानन्द गोविन्दु गोपालय॥

राधा-कृष्ण च़ेय नादा लायय, श्रीधर प्रेयमु स्वरु मुरली वायय।
रोज़ रामु बोज़ साम वेदुचि तालय, गोकुलानन्द गोविन्दु गोपालय॥

हृदयस मंज बसुवुनि नित्य लसवुनि, असुवुनि आसुवुनि गरुडस खसवुनि।
नालुमति रटहत मो दिम डालय, गोकुलानन्द गोविन्दु गोपालय॥

पंकज तनि वैजयन्ती माला, तरजु अकि नाल्य तॉय मौज दुवाला।
संत छिय वॅलिथ बसंत दुशालय, गोकुलानन्द गोविन्दु गोपालय॥

केशवु शिवु रूपु नारायणय, वोन दिथ नोन गोख बिंद्राबनय।
चोन ह्योत चोन प्रेयम मस प्यालु पालय, गोकुलानन्द गोविन्दु गोपालय॥

विदुर जियनुय गरु येलि च़ाखुय, भावनायि सुत्य ख्योथ सिवमुत हाखुय।
कति गोख तति कोरवन हुंदि सालय, गोकुलानन्द गोविन्दु गोपालय॥

द्रोपदियि अकि कृष्णु नाव सुत्य शामय, पौंदु गॅयि तस ति कुत्य वस्र तु जामय।
यीत्य कॅडिस दुर्योधननुय नालय, गोकुलानन्द गोविन्दु गोपालय॥

चानि मायायि सुत्य मंज़ द्वारिकाये, मथुरायि हुंज़ु हिशि लरि तय जाये।
पौंदु गॅयि अकि दमु मंज़ कमि हालय, गोकुलानन्द गोविन्दु गोपालय॥

अजामल द्राव बौड भाग्यवानय, नैचविस नाव तस ओस नारायणय।
मृत्यु विज़ि फूर तस श्री अकालय, गोकुलानन्द गोविन्दु गोपालय॥

श्री भगवानु छुख पानु प्रथ शाये, कुस वोत कुस वाति चानि मायाये।
मोकलाव असि येमि मोहुनि ज़ालय, गोकुलानन्द गोविन्दु गोपालय॥

‘कृष्णनस’ शिव रूपु दर्शुनि दितु चुय, सुय चुय, चुय सुय केवल छुख नु चुय।
श्यामु प्रभात रूपु हावतस कालय, गोकुलानन्द गोविन्दु गोपालय॥



लथ लॉयिथ संसारस ।

पतु लारस लँतिये ।।

हंस नादुकिस जानुवारस, नॉल्य जाम छिस छँतिये।

बुधि तौर्यम हंस द्वारस, पतु लारस लँतिये ।।

सूर कोर तँमि अंदकारस, युस वोर सूर मँतिये।

ब्रुति धारनायि ध्यान धारस, पत लारस लॅतिये ।।

अथ तेज रूप आकारस फेर ब्रूथ्य तौय पँतिये।

पौपुर ज़न गथ मारस, पतु लारस लँतिये ।।

लोलु फंक्किस अंबारस, रह मे दिन्न सूर मँतिये।

श्रेह मे छुम व्वन्य कति प्रारस, पत्तु लारस लॅतिये ।।

आरुवल मंज लोल नारय, दँजमच प्रेयम सतिये ।

शैहजारस मंज छय आरस, पतु लारस लँतिये ।।

नित्य लग्ना सत व्यचारस, सत भासुनाव सँतिये।

स्वर फिरत च्यत सेतारस, पतु लारस लँतिये ।।

वंदुन छुम पान यारस, अंदुन छुम येतिये।

चन्द्रुन गोम देव दारस, पत लारस लॅतिये ।।

ग्रज वेंछ सोंद्रय नारस, येति आँसिथ छु तँतिये ।

वन वनसय कन दारस, पतु लारस लॅतिये ।।

छाल मॉर्य मॉर्य ल्वकचारस कॅर्य मे पोशन फोतिये।

शेरि लागस जटा धारस, पत लारस लॅतिये ।।

‘कृष्णन’ दोप बाल यारस, करुहस नालु मँतिये।

मेलि शेस्तर त संगि पारस, पतु लारस लॅतिये ।।

लीला 128

चाल छम अशिने कोताह बु चालु लाल ।

बाल गोपाल म्यौन्य पालना कर ।।

गिंदनस आमुत पायस न प्योमुत,

न्याय अंजराव नत रावय बो ।

त्राँविथ मे कर म डाल बाल विशाल लाल ।।

बाल गोपाल म्यॉन्य पालना कर ॥०॥

कृष्ण, चॉन्य द्रुय छम दायय बोज़ख,

लायय नु म्वख्तु मालि पुछि मो खोच ।

अख रटथ नालु लालु बेयि गंडय लोलु माल ।।

बालु गोपाल म्यॉन्य पालना कर ॥०॥

देवता यीत्य आँस्य अंदि पखि बोज़नस,

सीव कॅरनस तस भगवानस ।

संतूर वायनस भैरव वेताल ताल ।।

बालु गोपाल म्यॉन्य पालना कर ॥०॥

पुशुरुन छु म्वरुत मालि माल कव छचथ,

म्वख्तु हार पुछि बे म्वख्तु हारन छस ।

वात्यख नु पुननिय वनुतम छि नालु लालु ।।

बालु गोपालु म्यौन्य पालना कर ॥०॥

ह्योर बोन लोभमख नु लूख मा ह्यडनम,

छुख बालुक तु छुय नु हर्ष शूक कैंह ।

कृष्ण यिम वनान छिय वनुनय कतालु लालु ।।

बालु गोपाल म्यौन्य पालना कर ॥०॥

मनस ब्रह्मणस वैनिस मंज नु आखो,

ज़नार्दन सु न वॅनिस मंज़ ।

काल ओस पोझ तु मै मारन अकाल लाल ।।

बालु गोपालु म्यॉन्य पालना कर ॥०॥

म्वख्तु मालि पुछि प्वख्तु प्रान गव ब्रह्मणस,

सख्त गोस पानस ज़ि वापस चाव ।

यियि नय अदु बुछान पानु ज़ाल लाल ।।

बालु गोपालु म्यौन्य पालना कर ॥०॥

ऑरिस बुरिस रोग प्योस वॉतिथ,

चॅरिस गाटस खुर क्याह आस।

राजु हंस ज़ाल लोग चलनस न ज़ाल लाल ।।

बालु गोपाल म्यॉन्य पालना कर ॥०॥

संसार भ्रम छुय बाँज्या त बाजा,

सूरमुत बाज़ कस फीरिथ आव ।

शश, पंज, चहार, सेह बेयि दुखाल लाल ।।

बाल गोपाल म्यॉन्य पालना कर ॥०॥

‘परमानन्द’ म्वख्त हारु कथि कन थाव,

सँन्य सँन्य येति क्याह छि सोन डेंशान ।

मुक्त गच्छि युस करि म्वखास मालु लालु । ।

बाल गोपाल म्यौन्य पालना कर ॥०॥

‘परमानन्द’ चन्द छोन वुछान पानस,

नत कति ओस तति म्वख्तस म्वल ।

प्रावि मुक्त त्रावि युस धन द्वार माल लालु ।।

बाल गोपाल म्यौन्य पालना कर ॥०॥

लीला 129

भगवान् कृष्णुन म्बखतु ववुन

गोकुल हृदय म्योन तति चोन गूर्यवान् ।
चित् विमर्श दीप्तिमान् भगवानो ॥

मोक्त मालि रोस ताम कृष्णस डेंशान,
लारन तु नालु मति रटानो ।
म्बख डयूठनस तौय मुक्त ऑस गछान ॥
चित् विमर्श दीप्तिमान् भगवानो ॥०॥

शाह छुसन फोरन तु तोरै छुस प्रछान,
मौज्य मोक्त ब्योल छा ववानो ।
म्यति वोव ब्योल खल कोनु छख सोंबरानु ॥
चित् विमर्श दीप्तिमान् भगवानो ॥०॥

हाव बो कुत्य लछ कुल्लैय खसानु,
बागस छि सासु बेंद्य बागवानो ।
तसली गोस छुम कृष्ण मँचरावान ॥
चित् विमर्श दीप्तिमान् भगवानो ॥०॥

मोख्तस तु म्यँचि छुन बालुक ज्ञानानु,
मे चै क्याह छि यँच फिकिर आसानो ।
मौचि क्याह पथकुन यि यस आसि मोचान ॥
चित् विमर्श दीप्तिमान् भगवानो ॥०॥

कृष्णाय ह्यकि स्यकि मोख्त आसि करान,

यछ पछ कोन छव आसानो ।

रूदमुत संशय रूद मोख्त वालान ॥

चित् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो ॥०॥

जसुधायि मोहु माया ह्यस डालान,

म्वख्तु क्याह जि त्युथ म्वख्तु आसानो ।

युथ छुन म्वख्तु मंज राजु द्वारस ति मेलान ॥

चित् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो ॥०॥

अंबनॉविथ छुसनु तमन्ना नेरान,

रंबवनि मालि बालि छुम तंबलावानु ।

छकुरिथ मालु बालि छुम तरसावान ॥

चित् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो ॥०॥

ह्यथ क्या गछि वॅन्य सु प्रोहत वनानु,

हीत छुमन रीत क्याह कव ज्ञानो ।

बॅनिथ क्याह आम वनिथ कव ज्ञानु ॥

चित् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो ॥०॥

कॅरनम नु पछ म्वख्तु छुन आसानु,

पछ क्याह छय श्री नाराणो ।

म्यचि मुर ऑस दिथ यॅच आस भरान ॥

चित् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो ॥०॥

जसुदायि ह्यस होश नजि रूदमुत दानु,

म्वख्तु दानु पुछि दान मनसानो ।

मोख्तसर जि मायायि कांह छुन ज्ञानान ॥

चित् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो ॥०॥

जगतस मोह अंदकार आव वलान ।

બ્વદ છઠ્ઠન સિદ્ધી છિન પ્રાવાનો ।

ऋद्ध सिद्ध तस यस संतोष आसान ।।

चित् विमर्श दीप्तिमान् भगवानो ॥०॥

गरज़मंद लूक ऑस्य गॉमृत्य देवानु,

कृष्णानि कथि पछ छिय करानो ।

नेरि मा वीरि टंग द्यव नेरि अरमान ।।

चित् विमर्श दीप्तिमान् भगवानो ॥०॥

पक्कन कृष्णस पतु पतु लारानु,

जंगलस मंज बाग डेंशानो ।

म्वख्त कुल्य बर्य बर्य तु म्वख्त फल नेरान ।।

चित् विमर्श दीप्तिमान् भगवानो ॥०॥

बर्रैय बर्रैय छि मोख्त लंग पथर नमान,

मुफ्त जन सु म्वरुत डार मेलानो ।

मथुरायि बूजमुत म्वख्तु द्युन गुर्यन दान ।।

चित् विमर्श दीप्तिमान् भगवानो ॥०॥

आश्चर्य मायायि आयायि वुछान,

कारण तु ऋषि मुनियन सानो ।

अन्य ज्ञान छि तिम ति तति असि हिव्य गछान ।।

चित् विमर्श दीप्तिमान् भगवानो ॥०॥

सोमबरोव लूकव म्वख्तु अंबर खान,

नन्द गोप म्वख्तु ओस बाँगरानो ।

पंच त्रय भागुनि फोति फोति मेनान ।।

चित् विमर्श दीप्तिमान भगवानो ॥०॥

पुरोहित सूजमुत गणेषु त्रक सोंबरानु,
दक्षिन यि पूरि पूरि रिंजवानो ।

पछ छयनु लूकन यिवान तु निवान ॥

चित् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो ॥०॥

गरु आख बॅर्य बॅर्य वुनि छुख नु रोचानु,
म्वख्तय छि लूख तृप्त गछानो ।

भगवान छु चोपॉर्य म्वख्तय छकान ॥

चित् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो ॥०॥

घरु आव पुरोहित ह्यत सोरि सामानु,
धर्म तु धान यॅच छु करानो ।

गूर्य कामधीनन म्वख्तु मालु पॉरान ॥

चित् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो ॥०॥

सासु बोझु म्वख्तु मालु तमि मालि खोतु जान,
रत्नव जॅर्य जॅर्य छि वुरानो ।

सोन्यन छि बोग ह्यथ सु प्रोहत सोजानु ॥

चित् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो ॥०॥

तव पत गोकुलुक्य जग होम करानु,
देवता कृष्णस छि पूजानो ।

यछा बूजन ब्राह्मणन ति ख्यावान ॥

चित् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो ॥०॥

नचनस तु गिंदनस गूर्य भायि तोषान,
शूर्यन रटनस नु पोशानो ।

कृष्णस तु राधा मातायि वनवानु ॥

चित् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो ॥०॥

पुरोहित सु सूजमुत म्वख्तु दक्षिणायि सान,

ग्यवान तु येंच गव रिवानो ।

धनु श्रवनस छुन म्योन ह्युव खज़ान ॥

चित् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो ॥०॥

बृश भानस वति कुन अँछि लोसान,

ब्राह्मणस छु ताम दूरि डेंशानो ।

राज्य ज़न प्रॉविथ बाज ह्यत यिवानु ॥

चित् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो ॥०॥

भरान छु म्वख्तु सोनु स्वर्गी सामान,

सासु बँदय लूख ह्यथ छि पकानो ।

बार, बारु डेंशान तु बारु बारु वनान ॥

चित् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो ॥०॥

कोरमुत सु तदबीर घरि छुख रोज़ानु,

भगवत मायायि डेंशानो ।

वुछनस नु वननस नु बोज़नस नु यिवानु ॥

चित् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो ॥०॥

वनि क्याह कांछा वनि छा यिवानु,

ब्राह्मणस ति छिनु प्रज़नावानो ।

सुशीलायि ज़न तु सुदाम वातानु ॥

चित् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो ॥०॥

डीशिथ म्वख्तु माल रत्नव तु सोन सान,

म्वख्तु माल पननिय छय मंदछानो ।

पनु पहाँर पननिय छु सुदाम छारानु ॥

चित् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो ॥०॥

डीशि डीशि सोर देश असन तु गिंदानु,

राधा मातायि तुतानो ।

डयक बॅड कोस यिछ प्रज़ि मंज़ आसानु ॥

चि़त् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो ॥०॥

संपता नचनस तु वचन वनानु,

हर्शस गोमुत सु बृक्ष भानो ।

शरण कृष्णस छय राधा गछान ॥

चि़त् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो ॥०॥

ब्राह्मण अभ्यागत तु ऋषण सोंबरावानु,

पज़नु खोत ऑस्य धनु खर्चानो ।

रज़ि तौय प्रज़ि मंज़ आश्चर्य ज्ञानान ॥

चि़त् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो ॥०॥

जग, होम ज़प तप ऋषि मुनी पूजानु,

तुतान दोशवनि तु वनवानो ।

देव कन्यकन मनि प्रकाश प्यवानु ॥

चि़त् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो ॥०॥

देवियि तु देवता धारणायि धारानु,

राधा कृष्ण कृष्ण ज़पानो ।

राज्य लक्ष्मी मॉज्य कोछि कोछि क्यथ ह्यवान ॥

चि़त् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो ॥०॥

व्यसु तौय दासु यिम खास खास आसानु,

तिमनुय सतुय गरि गिन्दानो ।

गरि गरि करिहे मनि कृष्णुन दानु ॥

चि़त् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो ॥०॥

यी मनि फोरान तु ती आस सौरानु,

प्रेम सुत्य वॉणियि वनानो ।

ब्ययि ब्ययि वॅन्य वॅन्य तु ब्ययि ब्ययि वनान ॥

चि़त् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो ॥०॥

‘परमानन्द’ तति पादन प्यवानु,

सादन सुय फल मंगानो ।

टूठिनस राधा सहित कृष्णु भगवानु ॥

चि़त् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो ॥०॥



लीला 130

मदु कैटब मारुवनि युद्ध वेश धारवनि ।

श्वद शांत दोध चूर गूर गूर करयो ॥

शहर शहर, गाम गाम, राम राम परयो ।

दक्षन उत्तर पछमु पूर, गूर गूर करयो ॥

छिय बसंत रंग जामु, यिनु चानि फोजेम शामु ।

लंजि-लंजि मूर मूर, गूर गूर करयो ॥

कर हषीकेशु राग द्वेषकिस शीशस ।

खंजि-खंजि चूर चूर, गूर गूर करयो ॥

बंबूर गीता छय गोपियि ग्यवान ।

स्वर्गु मंडलुचि हूर, गूर गूर करयो ॥

सिर्यि दर्शन दितु मोह गटु येति नितु ।

यितु नूरुकि नूर, गूर गूर करयो ॥

होश अँलिशि पोशुकिस गोशस प्यठ बेह।

श्यामु रंग बंबूर, गूर गूर करयो॥

तुलसी छावय हियि तन नावय।

फँलिलु मशुक काफूर, गूर गूर करयो॥

मनुनकि तेलन निदि ध्यासन टोठ।

श्रवनकि कनु दूर, गूर गूर करयो॥

राजु योगु मंज बोज, सॉन्य ताजु ताजु स्वर।

प्रेयमु साजु संतूर, गूर गूर करयो॥

दिहु अभिमानुक कुल ह्यि छेनुय।

तीव्र वॉराग सूर, गूर गूर करयो॥

हे हरिहर, पाप हर 'कृष्णस' कर।

अनुग्रेह पूरि पूरि, गूर गूर करयो॥



लीला 131

मंज पोशु बागन प्यठ नागरादन।

फेरुनि द्राहम सादन सुत्य॥

कन थावतम प्रेम बॅरत्यन नादन।

आदन बाजि छम लादन चॉन्य॥

पूर्यर करतम थॅविमत्यन वादन।

फेरुनि द्राहम सादन सुत्य॥



लीला 132

शिव शंकर भव भय हर,
गुरु लगयो पादि कमलन,
हु लगयो चरनन।
सत् गुरु लगयो चरितन॥

चरनन तल वार वरतम,
शरनुय चैय आस,
कर शंकर कर रटहम,
मर मर छुम ज्यनु मरनुक,
पादि कमलन तल मै पालतम,
हनि हनि चुय शिव वुछहथ,
गुरु लगयो पादि कमलन,
वरदा छुख शरनन।
कासतु मल मै अंतःकर्णन॥
कर अर हर मरनन।
अमरेश्वर भगवानु॥
पालवुन छुख कालहन।
द्येव दुय गॅलि हन हन॥
सत् गुरु लगयो चरितन॥०॥

दुय अदुय दय मै गछतम,
दीन दयाल कन मै थावतम,
ज़र ज़र छुम जुज़रनकुय,
हनुनावन हनुनावतम,
देह पुष्ट मन तुष्ट थावतम,
पानय ईश्वर पानय तोशतम,
गुरु लगयो पादि कमलन,
करु दयि दयि निशि द्यन।
दीनु वचनन तु वदनन॥
ज़ीरुनावतम मत हन।
मनि मोह युथ मुनियन॥
देवजुष्ट छुख दुष्टन हन।
पान वन्दयो तोशानन॥
सत् गुरु लगयो चरितन॥०॥

अंत कुस ज्ञानि ज्ञेय अनंतस,
 क्याह नेशचय करि वेदांतीय,
 ब्रह्मादिक गय मोहस,
 तत्पुरुश चय तत्त्व मै भावतम,
 गथ छय सिद्ध शुद्ध मुनियन,
 शाप मोचन ज्ञान लोचन,
 गुरु लगयो पादि कमलन,
 संत व्यसुरेय चैन्तनन ।
 यत्य वेद लग्य पंथनन ॥
 तत्त्व चोन क्या व्यचुरन ।
 वथ मै हावतम ज्ञानन ॥
 सथ छम शाप मोचनन ।
 पौर्य आर्या लोचनन ॥
 सत् गुरु लगयो चरितन ॥०॥

तेजोरूप तेजं चयं ह्युख,	सोम सूर्यन तु अङ्गनु ।
तेजोरूपं चयं भासान,	बह्म अंतरं योगियन ॥
स्वप्रकाशं तु स्व अनुभव गम,	शांतं तेजः ज्ञानियन ।
शिवं मेति दितं कर्म सुमं स्यज्ज,	ज्ञानं यिच्छं जनकादिकन ॥
ज्ञानं ज्ञानुन ज्ञानुनयं चैय,	क्याहं बु ज्ञानु चान्यं ज्ञान्यं व्यन ।
ज्ञानं व्यपदीशं वारं वरतम्,	फिरं अज्ञानं पटलन ॥
गुरुं लगयो पादि कमलन,	सत् गुरुं लगयो चरितन ॥०॥

निष्कारण सर्व कारण,	त्रेय कारण कारणन।
त्रेकार छुख चुय कारण,	सृष्ट स्थित तय प्रलयन॥
चुय कर्ता चुय भर्ता,	चुय हर्ता जगतन।
व्याप्य व्यापक भाव व्यापीत,	चुय निरंतर भवनन॥
बु जि क्याह वन चु जि क्याह छुख, युस न ज़ोन कांसि ज़ॉन्य व्यन।	
ज्ञान सॉरुय चॉन्यी दया,	चॉन्य कृपा भगवन॥
गुरु लगयो पादि कमलन,	सत् गुरु लगयो चरितन॥०॥

देव पोज़ छुख देव पूजनीय,	पूजा व्यद पूजनन ।
विज़ि विज़ि बुजि पज़ि पूज़हथ,	युथ च़ पूजनख वेष्णन ॥
भाव बामन फवलुनॉविथ,	मालु करुहय कोसमन ।
बो स्वमन्य व्यनु लागुहय,	बेयि गौंघ करुहय कोसमन ॥
स्ववोन्दु येछि पछि हंदि पोश,	लागुहय पादि कमलन ।
पादि कमलन तल मे पालतम,	तल ह्यथ क्यथ विघ्नन ॥
गुरु लगयो पादि कमलन,	सत् गुरु लगयो चरितन ॥०॥

शुद्ध निर्मल शिव पूजह्थ,	द्येव सपुन्य शुद्ध मन ।
शुद्ध मनु च़ेय ध्यान द़ौरिथ,	शुद्ध सफ़ाटिक विकसन ॥
नीलु कण्ठस च़े हटि वासुक,	च़ित आत्मस तमोगन ।
सुधा धारा गंग ह्यरि शेरि छेयय,	तारुवुन्य सुजि नरकन ॥
शिवा ध़रमुच़ वाम बागस,	च़ित शक्त च़ित आत्मन ।
धर्म रूप वृशब वगि त्रिशूल,	त्रि अवस्थाय अथि सन ॥
गुरु लगयो पादि कमलन,	सत् गुरु लगयो चरितन ॥० ॥

श्वेत सुन्दर छु तु बस्मा,	तनि प्रकट्योव सतो गुण ।
रुण्ड माला गॅल्य गंडमॅच्च,	रोष कोरमुत येंद्रियन ॥
क्याह छय जटा मुकट शोभान,	छल गोंडमुत रजोगुण ।
ट्येकि शायि हेरि डैकि चन्द्रम,	प्रकट्योय चोन शुद्ध मन ॥
त्रिदाम छुख ज्ञानु ब्वजतय,	त्रिकार रूप त्रिनयण ॥
गुरु लगयो पादि कमलन,	सत् गुरु लगयो चरितन ॥०॥

सम दितम संपदा यव सम, सौम रोज़हा समयन ।
 सम यस गँछिय चॉन्यी दया, लगि सुम स्यज़ समयन ॥
 सम्य सोमरन प्रथ गुण किन्य, समयन तय साधनन ।
 सोम आहार सोम विहार, सम निंद्रा तु जागरन ॥
 संबॉलिथ पानस सुम, सुम शुज़ुरिथ शायहन ।
 लगि समाध योग सम स्यज़, विज़ि सत् ग्वरु वचनन ॥
 गुरु लगयो पादि कमलन, सत् गुरु लगयो चरितन ॥० ॥

भक्ति प्रिय भक्ति दायक दय, युस यछुहन भक्ति ज़न ।
 भक्ति भावत भक्ति भावनाय, च़ेय कुन लॅग्य निशि छेन ॥
 भक्ति वत्सल भक्ति छलुबल, बल फिरि गुडु विशयन ।
 दरि श्रद्धाय ध्यान दॉरिथ, रटि प्रान बुद्ध च्यथ तु मन ॥
 यम नियम शम दम समि मन, स्वरि सुय दय क्षण क्षण ।
 मन ज़ीनिथ पोज़ चीनिथ, गछि ज़ीनिथ भवनन ॥
 गुरु लगयो पादि कमलन, सत् गुरु लगयो चरितन ॥० ॥

यस संस्रति पोत अचि मन, सुस्त ऑस्यतन विभवन ।
 लोर आसि नु अन्न धन्नन, गरबारन तु संतानन ॥
 व्यवहार च्यन काम्यन प्यठ, परद्यन हुंज़ु कामि ज़न ।
 प्रारब्दुक भोग भूगान, भूगवुन ज़न स्वप्नन ॥
 रागीज़न सार्यसुय सुत्य, त्यागिथ सर्व कामनन ।
 गछि संसार सरु तॅरिथ, लड करान सुह ज़न ॥
 गुरु लगयो पादि कमलन, सत् गुरु लगयो चरितन ॥० ॥

लोभ छुम नु स्वर्गन हुंद, ख्यूब तिन बेयि नरकुन।
 रुत कुत स्वख द्वख भूगान, फल पनुन्यन कर्मन॥
 हर नाव सुत्य थरु थरु अज्ञान, दूरि यम केंकरण।
 शिव भक्त संज सहाय छांडान, माय पनुन्य देवगण॥
 अख शुभ दृष्टी शिव छम चॉन्य, लछ विभवन तु स्वर्गण।
 सुय शुभ दृष्ट शिव करतम, पानय वरतम भगवन॥
 गुरु लगयो पादि कमलन, सत् गुरु लगयो चरितन॥०॥

नव नाथेश्वर चय छुख, नव निदान छुख सेवकन।
 नॅवि खोतु नोव नोव वुछुहथ, लगि नोव नोव नवनन॥
 नव गँडिथ नव रटिथुय, नव प्रनव व्याहरन।
 नव दक्षपाल ह्यथ रोजतम, ईश रॉछ निशि विग्नन॥
 नवदुर्गा करि पक्ष म्योन, युस रक्षक शरणनन।
 नवद्वार पुर खस वुफ ह्यथ, नववुन्य शिव भवनन॥
 गुरु लगयो पादि कमलन, सत् गुरु लगयो चरितन॥०॥



लीला 133

निस्पंद साँपन स्व वोंदु सुत्य नित्य भगवत धारना धर।

गोविंद गोविंद गोविंद गोविंद गोविंद गोविंद कर॥

मानुष्य जन्म दुर्लभ देवन, सुलब ज़ीवु प्रोवुथ चै।
 गुरु शास्त्र पुशारिथ पूर्वक, निर्मल बुद्ध साँपनी॥
 क्योँ सोया मोहनी सजया, पर जाग रे चोत्रुर नर।
 गोविंद गोविंद गोविंद गोविंद गोविंद गोविंद कर॥

अब है गोविंद मिलने की भारी सब काज तजा कर ।
 गोविंद चरनरबिन्द अमृत पी के मन रजा कर ॥
 मानुष्य देह फिर हाथ नहीं आवत भवसर पार उतर ।
 गोविंद गोविंद गोविंद गोविंद गोविंद गोविंद कर ॥
 श्रीमान सर्व लोक पाल दीन दयाल भगवान बाल गोपाल ।
 कोमल श्यामल अंग, देव आभरण, गल तुलसी माल ॥
 गगन सदृश्य अविभूत दर्शन आश्चर्यमय अक्षर ।
 गोविंद गोविंद गोविंद गोविंद गोविंद गोविंद कर ॥

त्युथ श्वब समय कर सना यियम युथ मे वरि रघुराये ।
 रघु कुल दीपक दर्शन दियम करि म्योन मोक्षोपाये ॥
 श्याम सुंदर राम चन्द्र दर्शुन आसि नखु शांत भासकर ।
 गोविंद गोविंद गोविंद गोविंद गोविंद गोविंद कर ॥



लीला 134

दिम मे रुच तु शुद्ध वॉणी,	महारॉंजी भवॉनी ।
यछ तु पछ छम मे चॉनी,	महारॉंजी भवॉनी ॥
मंगुहॉय च़ेय बु वरदान,	छुम नु मंगनुक मे त्युथ ज्ञान ।
रुज मा चॉन्य मे निगरॉनी,	महारॉंजी भवॉनी ॥
येलि नु चु थवख म्यॉन्य कल,	वनु कस बु छुस दुर्बल ।
कुस लबन चुय ह्यु बु दॉनी,	महारॉंजी भवॉनी ॥

यलु छु चोनुय योत दरबार,
तोलनस छि ब्रह्म ज्ञानी,

पूरु बॅर्य बॅर्य छि अंबार ।
महाराँजी भवौनी ॥

कांह अखा ति आशावान,
लभि नु ज़ांह सु मानहौनी,

वाति युस च़े निश मायि सान ।
महाराँजी भवौनी ॥

यस चु रोज़ख पानु डखे,
पोरि कुस तस प्राणी,

दौर दिख स्व मनु भक्तु अधिकार ।
महाराँजी भवौनी ॥

भक्ति भावस चु छख लौर,
छुय च़े नाव ईशौनी,

फल दिनस छा च़े निशि तौर ।
महाराँजी भवौनी ॥

छख शिवा चु शिव शक्ति,
चुय उमा चुय ब्रह्मणी,

चुय हय युक्ति तु मुक्ति ।
महाराँजी भवौनी ॥

नव निदान छिय च़े बड्य कोश, दिम मे परम स्वख तु 'संतोश' ।
छुस मंगान बु सुय च़ेय ज़ौनी, महाराँजी भवौनी ॥



लीला 135

मौज्य शारिकौय कर दया,
कर दयायि हंज दृष्टी,

वर दया ही भवानी ।
स्व छि बॅड मेहरबानी ॥

आय लारान च़े निश योर,
मतु वुछतु कर्मन कुन,

कर्म खुरय भवौनी ।
स्वय छम पशेमौनी ॥

श्री शारिका लीला-लहरी

(नविम-तरंग)

लल वाख

अभ्यास किन्य व्यकास फोलुम,
स्व प्रकाश ज़ोनुम यिहोय दिह।
प्रकाश दान म्बख यिय दोरुम,
स्वखुय बोरुम कोरुम तिय।।१।।

ग्वरु कथ, हृदयस मंज बाग रँटुम,
गंगज़लु नॉवुम तन त मन।
सो दीह जीवन मुक्ती प्रोवुम,
यम बयि चोलुम पोलुम अख।।२।।

पानय आव पानस सुतिय,
पानय पनुन कोरुन व्यचार।
पानय पनुन पान नेछिनोवुन,
पानय गुपुन पनुन पान।।३।।

लललि ग्वर ब्रमांड प्यठय किन्य वुछुम
श्यशकल वॉचुम पादन तान्य।
ज्ञानुके अमरयतु प्रकरथ बरुम।
लूबय मोरुम अन्दु वन्द तान्य।।४।।

क्रेया कॅरुम दग्मु कौरुम,
तिरथन नावुम पननिय काय ।
पापन सौंबरिथ बस्म कौरुम,
तति कुस ओस तय योत कमु आय ॥५॥

पवन त प्राण सौमुय डंयूठुम,
मीलिथ रूदुम शेर खोर तान्य ।
दिह यैलि मोठुम अदु क्याह मोतुम,
न कुनि पवन त न कुने प्रान ॥६॥

मनस सैतिय मनुय गोंडुम,
च्यतस रटुम च्वपॉरय वग।
प्रक्रच सैतिय पोरुष वोलुम
सरु मे कोरम लबुम वथ॥७॥

कथा बूजुम कथुय कुर्रुम,
कथाय कुर्रुम च्वपौरुय सथ ।
शास्त्र किनिय कथुय बूजुम,
कथायि हावुम सतच वथ ॥८॥

पूरक वंबक रोचक कोरुम,
 पवनस त्रावुम प्यठय किन्य वथ
 अनाहतस बस्म कोरुम,
 केह नो मोतुम सोय छय कथ ॥९॥

केंहनस प्यठुय क्या छुय नुचुन,
मोचिय केंह न तु नुचुन त्राव ।
पोत फीरिथ छुय तोतुय अचुन,
यिहोय वुचुन च्यतस थाव ॥ १० ॥

कमुर्क कुल नो छुय वनिथ गछन,

वैनिथ गछन क्याह छुय पाय।

कशफुक फल छुय मीलिथ गछुन।

वैलिथ रोजुन कुस छुय न्याय ॥१२॥

कायस अन्दर रूद्रुम अँचिथ।

न्यायस र्थेवनम च्वर्पोर्य शाय,

पाय केहं लोबुम नो माय छस कॅरिथ,

जायस न आयस लोगुम नाव ।। १३ ।।

कोसम बागस ह्योतमय अच्युन ।

पञ्चियय मन तु अच्युन प्राव,

स्वरूप दरशुन छु तौतुय अचुन।

कोत छुय गँछुन पकुन त्राव ।। १४ ।।

कामस सुँतिय प्रय नो बँरुम ।

क्रूदस द्युतुम पवनुन फेश,

लूबस मूहस चरन चॅटिम ।

तृष्णा चजिम गॅयस ख्वश ॥१५॥

ल्यक न थोकु प्यठ शेरि ह्यचम ।

नेन्दा सपनिम पथ ब्रोंठ तान्य,

ललि चिह्न कल ज़ाह नो छेनिम।

अद येलि सपनिस व्यपिहे क्याह ॥१७॥

जगतस अन्दर कौत्याह पौलिम ।

सारिय छि छांडान दयि सँज वथ,

लछि मंज अकिस दया जॉनिम ।

मॉनिम यिय दॅप्यज़ि ईशर गथ ॥१८॥

कायस बल छुय मायस ज्ञागुन,
 प्रानस बल छुय शब्द स्वरूप।
 आयस बल छुय तत्त्व व्यद ज्ञानुन,
 ज्ञानस बल छुय आदि अन्त तान्य॥२३॥

गगनस भूतलस शिव यलि डयूठुम,
रवसु लबि न रोजनस शाय।
सिरियिक्व प्रबावु व्यशमयु ज़ोनुम,
ज़न गव थलस सुत्य मीलित्थ क्याह॥२४॥

वावच ग्राया पानस वुछिथ
वानस डयँठुम सोरि रंग वस।
ध्यानस अन्दर दमु दमु मीलुस,
ग्वनन त्रोवुम मुचरिथ बर॥२५॥

रोज्जुनि आयस गछुन गछयम,
पकुन गछयम वावलूक पाल ।
कैहनस प्यठय नुचुन गछयम,
अचुन गछयम सूक्ष्म प्रकार ॥२६॥

वाख छोह दिथ म्खस ब्यीठिम,
 म्खस डीठुम रोजनस शाय।
 दवखस अन्दर न्यंदुर मीठुम,
 ब्वद यैलि ज़ीठम मीठम कथ॥२७॥

शेलायि हंजय वोतमा बँजम,
 सोंबरुम टयोक् पोश आसन पठ।
 मनस अन्दर व्युच्चार कोरुम,
 वुछम त डयूठुम शेल कनिवठ॥२८॥

जन्म प्राविथ व्यव छोंडुम,
लूबन बूगन बॅरुम प्रय।
सोमुय आहार स्यठा ज़ोनुम,
च़ोलुम द्वख, द्वखु वाव पोलुम॥२९॥

जल प्योव पकुन थ्यकुन लूकन,
नारस अचुन मारस व्यद।
आकॉश्य गमनो वुफुन आसुन,
कपट बासुन आसुन च्यथ॥३०॥

अन्दर ऑसिथ न्यबर छोंडुम,
पवनन रगन फयुरनम स्नेह।
ध्यान किन्य दय दगि कीवल ज़ोनुम,
रंग गव सनास सुत्य मील्लिथ क्यथ॥३१॥

ॐ कार शरीर कीवल ज़ोनुम,
शब्द रुप रस गंध सुतिय ह्यथ।
आत्मस्वरूप सु पानय ओसुम,
परम त्वॅथ दोरुम शेरस प्यठ॥३२॥

जन्म प्राविथ कर्म सोदुम,
दर्म पोलुम स्वय छम सथ।
नयत्रन अन्दर प्रेयम दोरुम,
च़ोरुम तु मोनुम यिहोय अख॥३३॥

स्वर्गस माजुन क्याह छुय बासुनो,
नरकस वासुन आसुन दूश।
चख रश न आसुन शिवमय आसुनो,
पानय आसुन कासुन भेद॥३४॥

लीला 137

श्री कृष्ण कार जी

वंदे शिला त्वम् ईश्वरीय श्री शारिका देवी नमः।:

मेहरे चराचर सुंदरी श्री शारिका देवी नमः ।।

अव्वल तुई आखिर तुई बातिन तुई ज़ाहिर तुई।

गाईब तुई हाज़िर तुई श्री शारिका.....।।

जगरा सशे सामा तुई शाहे शहन्शांहा तुई ।

जिसमे जहां व जान तुरई श्री शारिका.....।।

लक्ष्मी जहांआरा तुई ममाई देश अपज़ा तुई ।

बुद्धी महा विद्या तुई श्री शारिका..... ।।

देवी जगत माता तुई शिव शक्त गुरु दाता तुई ।

माता पिता भ्राता तुई श्री शारिका.....।।

हाजत रवाए आलमें शाहे शुजाअत अक्रमे ।

कायम मुकामे दाम में श्री शारिका.....।।

अज़हर से कारन बर्तनी दर्हर से आलम सर्वरी ।

बर्फर कि इन्द्र मुश्तरी श्री शारिका..... ।।

सीमवो जरो बहरे दुरो लोलोए लाला गवहरी ।

जेबे दु आलम अनवरी श्री शारिका.....।।

सहम व गजन फर वा हनत शिवजी अस्त जेरे आसनत ।

लालो जवाहर दामनत श्री शारिका.....।।

तू चार दह रत्ने गिरा तू नव निदाने बेकराँ।

तु कानि गवहर दर अमा श्री शारिका..... ।।

शक्ते तू कुदरत शुद्ध अचान तहते तू भखते जाविदान ।

तखते तू अरशे लामकान श्री शारिका..... ॥

नागे त्रिलूको तिर्थ जात सरचश्मे आबे हयात ।

आबस बकाये कथनाथ श्री शारिका..... ॥

गरदे रहत कोहलय बसर खाके दरत् नूरे नज़र ।

संगे समीरत सीभव ज़र श्री शारिका..... ॥

नूरे जहांने दावरी ताबन्द मेहरे अनवरी ।

माहे फिरोज़ा अख्तरी श्री शारिका..... ॥

चिकरी शरवहाजत् खा साजद् गदा रा पादश ।

वाह-वाह चह लक्ष्मी थापना श्री शारिका..... ॥

रोगन चरागे पाम्परी सिन्दूरी खासा लाहोरी ।

चहरव कुनम् ज़रदोजरी श्री शारिका..... ॥

दर बारगाहत रोज व शब नारद मुनीशर बा अदब ।

दरबानि दरगाहत तलब श्री शारिका..... ॥

गुल अज़ सरे खुद मी कुनम, ब्रिनज अज़ दिलो जान आपरम् ।

पूजायतू खाहम् कुनम् श्री शारिका..... ॥

अफ सुरद । अम मन बेनवा उफ तादा अभ बेदस्तव पा ।

दस्तम बिगीर अई देवता श्री शारिका..... ॥

ही इश्ट देवी शारिका दासे तु केहतर कृष्ण कार ।

गोय द त्वता जोयद दया श्री शारिका..... ॥



लीला 138

शिव-शंकर

मन स्थिर कर, मन्तर पर

शिव-शंकर शम्भो!

मन शुद्ध बनि साक्षात् ननि, हनि हनि गटि मन्ज्र गाश ।
सुव्यचार ब्ययि श्रद्धायि पर, शिव-शंकर शम्भो ।।

प्रभातस अछ मन्दिरस, गंग-जल तन नाँविथ ।
ध्यान-धारनायि मनि-मन्त्र स्वर, शिव-शंकर शम्भो ।।

शिव नाथस गोड दि अँशि-जल, शेरि लागुस भाव - पोश ।
मन - प्रानु वारु तुता कर, शिव-शंकर शम्भो ।।

इन्द्रिय नवीद स्वम्बराव, मन - त्रामेरि मन्त्र थाव ।
दिह दीप ज़ालिथ वारु पर, शिव-शंकर शम्भो ।।

वासँनायि धूप थाव दज़वुन, विज्ञान - दीप ब्रज़वुन।
व्यज़ - पुर्वक व्यज़ना कर, शिव-शंकर शम्भो॥

सहस्रदल 'कमल' फोलराव, शिव - अनुग्रह यिथु प्राव ।
शिव न्यथ स्वर चलि ज्यत मर, शिव-शंकर शम्भो ।।

पं० जानकीनाथ कौल 'कमल'



लीला 139

गरि गरि पूज कर ग्वरु पादन तय।

बटु यिकवटु रटु मन तय प्राण ।।

ग्वर छुय ब्रह्मा जी आसन तय,

ग्वर छुय सत कनि श्री भगवान ।

ग्वर छु महेश्वर आस मानन तय ।।

बटु यिकवटु रटु मन तय प्राण ॥०॥

ग्वरु शब्दस प्यठ वार थाव कन तय,

तार तार तारसर पननुय पान ।

जेरि जेरि देव आसि नाव नेरन तय ।।

बटु यिकवटु रटु मन तय प्राण ॥०॥

सूहम हम पज़ि रज़ि लमुन तय,

बाल रठ नाव छुय वावु अग्यान।

लबि रोज़ आसख तार लबन तय ।।

बटु यिकवटु रटु मन तय प्राण ॥०॥

व्येल् छुय सुलि व्वथ प्रथ प्रबातन तय,

क्रथ वॅर्यजि व्रथ थॅविजि पेयि लयि सान ।

खय कास मनकिस आईनस तय ।।

बटु यिकवटु रटु मन तय प्राण ॥०॥

पारदिस नख तल येलि रोज़िय स्वन तय,
 रॉविथ आसख म्वखतु लबान।
 म्वज़ि पथ कुन मैज़ि रोपबदन तय॥
 बटु यिकवटु रटु मन तय प्राण॥०॥

काम क्रूध चूरन लूब मुहहन तय,
 राज़स ताहराज कौरुहय जान।
 पानु दातु ऑसिथ छुख बेछन तय॥
 बटु यिकवटु रटु मन तय प्राण॥०॥

ब्रह्मन मनु किन्य छुख चुय ब्रमन तय,
 ब्रह्ममत माया छि ब्याख आसान।
 पनु सुत्य डींज्य ज्ञान डेंजि सुत्य पन तय॥
 बटु यिकवटु रटु मन तय प्राण॥०॥

ब्रह्ममय चराचर त्रेन बवुनन तय,
 दीशि काल दूरि दूरि निशि रोज़ान।
 हिशर न कुनि सुत्य, सुत्य डेंशन तय॥
 बटु यिकवटु रटु मन तय प्राण॥०॥

‘परमानंदसुय’ ग्वंदि ‘लॅख्यमण’ तय,
 वंदु तस पनुनुय जुव तय जान।
 तवु आसु परम आनंद प्रावन तय॥
 बटु यिकवटु रटु मन तय प्राण॥०॥



लीला 140

श्री श्याम स्वंदर म्वरली मनोहर, अज़र अमर मुराँरी ।
 ज्ञानिय नु ब्रह्मा विष्णो महेश्वर, अज़र अमर मुराँरी ॥
 कीशव केशन करहोय चामर, चुय शिव बुछहोत च्वपाँरी ।
 रेशव ति ड्यूढुख नु ही व्यशम्बर, अज़र अमर मुराँरी ॥
 सतन सँदरन हुंदे आगरु, यिम तारु तँर्य तिम कँम्य ताँरी ।
 रँत्न च्वदाह चुय द्राख श्रीदर, अज़र अमर मुराँरी ॥
 शुरा ज़ॉनिथ शुरयन अंदर, गिन्दान च़ेय सुत्य ऑस्य साँरी ।
 शुराह सिंगार पुरिथ छु स्वंदर, अज़र अमर मुराँरी ॥
 दीव कन्यायन मंज़ ह्यथ शंकर, शकर वुठ ऑस्य वुसाँरी ।
 गंदर्व ग्यवान छिय कृष्ण गोन्दर, अज़र अमर मुराँरी ॥
 पूरब पछिम दक्षिन उत्तर, वुछान वुनेमित्य टाँरी ।
 ब्वछि हैत्यन सिरिंय लोग लगनि दरु, अज़र अमर मुराँरी ॥
 वदान अँशिस कोरमुत छु अम्बर, चुय छुख नु बोज़ान यिम ज़ॉरिय ।
 मुनियन गाश सूर गनन छु असर, अज़र अमर मुराँरी ॥
 पथर पेयि अँस्य व्वंदु गोय च़ेय पथर, वतन न्यथुर वथॉरिय ।
 दर्शुन दितु व्वन्य असि ति रछतु सतुर, अज़र अमर मुराँरी ॥
 वँछ्य तु गाँव रूज़िथ चाने आसरु, पछि ज़न छि रूज़िथ अनुहाँरी ।
 गँछ्य असि तिम ह्यथ गछुहव गर, अज़र अमर मुराँरी ॥
 वोमा असि कैह क्षमा सागरु, च़ेय मा नफा असि खाँरी ।
 ईशरु दर्शुन च़लिहे असि शर, अज़र अमर मुराँरी ॥
 गूकल मंज़ येलि वॉचुय खबर, लोबहख नु छॉरिथ च्वपाँरी ।

छारनि लेंगी अंदरु तु न्यबर, अज़र अमर मुराँरी ।।
 वनु वनु फेरान बनि चोन आसरु, पान हाव लगहोय च़ेय पॉरी ।
 जसदा नन्दन वासुदेव पुत्र, अज़र अमर मुरारी ।।
 ‘परमानंद’ ओस वनान आश्चर, अरमान ह्यथ गॉमित्य सॉरी ।
 परमान पननिय करि कोँछा सर, अज़र अमर मुराँरी ।।



लीला 141

श्याम स्वंदर मुरली वोलुय ।

खेलि बना रास मंडोलुय ।।

काचु जूना चमकान द्राये, वाँच बन्दन याद छुय नाये ।
याचनायन यछि बैरिवं लोलुय, खेलि बना रास मंडोलुय ।।
कवु लजिमचु छवु जंजालय, लजि वजिमचु मूहनिस जालस ।
शुर्य तु बाँच बैयि माँज तय मोलुय, खेलि बना रास मंडोलुय ।।
गंगु जलल छैलिने तनय, क्वंग मलवय बैयि चंदनय ।
रंगु रंगय वलवय सोलुय, खेलि बना रास मंडोलुय ।।
प्रेयि कृष्णनि बरवय प्रीती, पकिविय नेरव तस सुत्थ सुतिय ।
ल्वलि करोस लोलु मंजोलुय, खेलि बना रास मंडोलुय ।।
रोशि करवय पोशन मालय, पोशनूलस डौलिवे नालय ।
पालुवन्य अज वादु सोन पोलुय, खेलि बना रास मंडोलुय ।।
मोर मुकट दौरिथ छु स्वन्दर, अज छु तोशन पोशन अन्दर ।
वाँल्य गोशन नौल्य जंगोलुय, खेलि बना रास मंडोलुय ।।
क्वंगु चन्दन द्योक तस मथय, बनसरी बैयि पम्पोश अथय ।
कीशवस केश रम्बोलुय, खेलि बना रास मंडोलुय ।।

राधा अख बैयि गूर्य कन्ये, आरनुय मंज न्यथुनने ।
 मान अभिमान यिमव ज़ि गोलुय, खेलि बना रास मंडोलुय ॥
 रासु रस च्यथ मतेमन्नय, केशिवुने त्रेशि हन्नय ।
 अछु रछन तति मन डोलुय, खेलि बना रास मंडोलुय ॥
 व्यकसनय आमुचु व्वसय, कोई रोवे कोई हसय ।
 वसि मंज फोल अलु ब्योलुय, खेलि बना रास मंडोलुय ॥
 दीव सौरिय सॅमिथ आये, दीव स्वंदर गन्धर्व आये ।
 कॅतिजि ज़न वेरि यीरान ओलुय, खेलि बना रास मंडोलुय ॥
 ज़नि पथ ज़ोन सुत्य सुत्य नन्नान, सारिनुय मंज कुनि छिनु व्यन्नान ।
 वाजि हुंदुय क्रेख म्वलोलय, खेलि बना रास मंडोलुय ॥
 व्यास नारुद ओंद पोख रूजिथ, स्वरु डॅलिमित स्वर्य स्वर्य बूजिथ ।
 साज्ज सारंग मृदंग तय ढोलुय, खेलि बना रास मंडोलुय ॥
 ऋशि तु मुनी वॅथिमित्य तपव, लीन गॉमित्य वीनायि ज़पव ।
 मूह जंगल यिमव ज़ि ज़ोलुय, खेलि बना रास मंडोलुय ॥
 तारि गोमुत तारा मंडल, दीव कनिकन आमुच वदल ।
 होलु गजिमचु कॅरिथ गोलुय, खेलि बना रास मंडोलुय ॥
 साद सतज्जन बोम्बर बनेमित्य, पोशे अम्बरन तल रूदिमुत्य ।
 चरनु कमलन हुंद छुख लोलुय, खेलि बना रास मंडोलुय ॥
 त्रु कारन पोश वरशनस, हरशनस न्यथ दर्शनस ।
 कृष्णु ग्वनन दिवान ज़ोलुय, खेलि बना रास मंडोलुय ॥
 चन्द्र मंडलुक्य लूख पैयि पथर, शबनम ऑसिथ ज़न गॅयि पथर ।
 कृष्णन ज़न वोत म्वखतु ब्योलुय, खेलि बना रास मंडोलुय ॥
 'लक्ष्मनस' दिय ओस मनस, गीथ वनस ज़नारदनस ।
 परमानंदुन तस आव लोलुय, खेलि बना रास मंडोलुय ॥

लीला 143

आरस मंज अचावॉय,
 आरस मंज अचावॉय,
 लागोस पोश पूजे,
 व्वपरस कस पचावॉय,
 लॉजहस तन तने,
 कमव प्रेमव हचावॉय,
 ह्यतिहस पाद शेरे,
 खबर क्या छम कचावॉय,
 अशिकनि म्वखतु हारन,
 तूल्य तूल्य स्वन रचावॉय,
 पोंपुर ज़न शमहस प्यठ,
 मँतिस पथ कर मचावॉय,
 यछन नवि ज़िंदुगीये,
 लबिख प्रान मुह मचावॉय,
 वनस मंज ननवारे,
 कन्यव तापव तचावॉय,
 यि पद क्या छुय वनुन ज्यूठ,
 वुछिथ वोनमुत यचावॉय,

विगिने ज़न नचावॉय।
 विगिने ज़न नचावॉय॥
 कृष्णजू न्यंदरि वुजे।
 विगिने ज़न नचावॉय॥
 शेहल्यख हन हने।
 विगिने ज़न नचावॉय॥
 कृष्णस ज़ि स्नेह फेरे।
 विगिने ज़न नचावॉय॥
 छि लाद्यन म्वखतु हारन।
 विगिने ज़न नचावॉय॥
 नचन छु क्या करन गथ।
 विगिने ज़न नचावॉय॥
 लजिमचु बन्दगीये।
 विगिने ज़न नचावॉय॥
 शरण तिम कृष्ण प्यारे।
 विगिने ज़न नचावॉय॥
 सु 'परमानंद' कैम्य ड्यूठ।
 विगिने ज़न नचावॉय॥



लीला 144

कर्म ब्रूमिकायि दिजि धर्मुक बल।

संतोशि ब्यालि बोवि आनन्द फल ।।

द्वयि प्रान दांद जूर्य द्यन त राथ वाय,

कुम्भके कुर ज़ोर तिमनय लाय ।

हलु कर युथ नु रोज़ि बीठ कांह रयल ।।

संतोशि ब्यालि बोवि आनन्द फल ॥०॥

लोलुकि आलु फालु तुलनाविथ,

दौरु यटफरु दत्त फुटराँविथ ।

वाँहरुक स्नेह न रोज्यस तल ।।

संतोशि ब्यालि बोवि आनन्द फल ॥०॥

व्यचारु बँठ्य तु बेरु लँदिथ क्यथ,

श्रोत्रं यन्निद्वयं शोऽङ्गराविथ वथ ।

समदृष्ट पातजन अदु फेरि ज़ल ॥

संतोशि ब्यालि बोवि आनन्द फल ॥०॥

सोंथ छुय दोह तारु मोत यावुन,

नज़ि पज़ि साथ़ा रावरावुन ।

वव ब्योल मव प्रार करु मंगल ।।

संतोशि ब्यालि बौवि आनन्द फल ॥०॥

त्रौपरिथ फुरनायि नामु व्वडर,

स्वरुके रबि चक्रु सुत्यन बर ।

यंद्रेय गगरन करु वठल ।।

संतोशि ब्यालि बोवि आनन्द फल ॥०॥

भँखुच हंजि न्येदि फेरि सादनायि खीत्य,
ह्यलि नेरि तपके पपु सगु सुत्य।
सम भावनायि फवलि पम्पोशु डल॥
संतोशि ब्यालि बोवि आनन्द फल॥०॥

व्यशय पॅश वारु रछनावुख,
तिमनुय अथि युथ नु खीत्य ख्यावख।
भावचि रावुचि नेर न्यशकल॥

संतोशि ब्यालि बोवि आनन्द फल॥०॥
ह्यलि येलि नेरि तेलि सॉपनस क्राव,
वैराग द्राति सुत्य लून्य लून्य त्राव।
सम बंदु सोस ति मावि लाव्यव वल॥
संतोशि ब्यालि बोवि आनन्द फल॥०॥

मटु खसनुचि रजि मटि मटि सार,
सादुनि अनतु बॉय बन्द तु यार।
न्यति नेमु सुमरनि अदु समि खल॥
संतोशि ब्यालि बोवि आनन्द फल॥०॥

त्रग्वनु त्यागु नोम अख गोन लद,
न्यरवान प्रावख निर्वान पद।
शमिथ तम दिथ करु कुशल॥
संतोशि ब्यालि बोवि आनन्द फल॥०॥

ध्यानु दारनायि दानि मोन्ड व्यसतार,
ज्ञानु दानि खासु खासु गासु निशि चार।
मनुके अनुभव वारु दिस छल॥
संतोशि ब्यालि बोवि आनन्द फल॥०॥

त्यागुके अथु सृत्य वारु छौम्बनाव,
प्रोन तु ज़ग फुटजन ब्योन ब्योन थाव ।
जागि रोज़ लागनय त्रॉविथ ज़्वल ॥
संतोशि ब्यालि बौवि आनन्द फल ॥०॥

तूलिथ अदु थाव अम्बरन माल,
सूहम हायकु सुत्य नखु अदु वाल ।
ल्वतु बारि वॉतनॉविथ खनबल ॥
संतोशि ब्यालि बौवि आनन्द फल ॥०॥

शम दम यम नेमु घाट वातनाव,
शांत श्रद्धायि ज़लु पकनाव नाव ।
शिहल्लिथ पानस मानसबल ॥
संतोशि ब्यालि बोवि आनन्द फल ॥०॥

लागनय वाल माल आगस तार,
खॉल्य युथ नु रोज़ि हॉल्य जॉगीरदार ।
बाक़ुय तु फ़ॉज़िल राज़ि कस तल ॥
संतोशि ब्यालि बोवि आनन्द फल ॥०॥

चौरिथ बैयि ब्योल साँचिथ थव,
 सोथं येलि यियि तैलि फलि फलि वव।
 व्वपकारु व्वपनिय नॅव नॅव थल।।
 संतोशि ब्यालि बोवि आनन्द फल।।०।।

यूग मायायि हुंद बूगी आस,
यिय छेय दुय तिय पानस कास ।
सादुनाव पेयि अदु सादु मो डल ॥
संतोशि ब्यालि बोवि आनन्द फल ॥०॥

कर्म फल सोरनय ग्वरु शब्दय,
संविथ कर्म मान प्रालब्दय।
कर्म काण्ड ज्ञानु नेरि नारु वुजमल॥
संतोशि ब्यालि बोवि आनन्द फल॥०॥

स्वयम प्रकाशुकि विज्ञानय,
त्राँविथ मान बैयि अभिमानुय ।
प्राँविथ रोज़ द्वादशान्त मंडल ॥
संतोशि ब्यालि बोवि आनन्द फल ॥०॥

‘परमानन्द’ ओस ज़मीनदार,
हूरिथ माल तस रुज़स नु लार ।
वान्गुच वारिच चँजिस गांगल ॥
संतोशि ब्यालि बोवि आनन्द फल ॥०॥



लीला 145

गिन्दुना छा ज़िन्दु मरुन,	सहज़ व्य़चार करुन ।
पानु रुस पान स्वरुन,	सहज़ व्य़चार करुन ।।
बूज़िथ वारु पॉठी,	त्रॉविथ टॉठ्य अटॉठी ।
पाखंडी तु पॉठी,	सहज़ व्य़चार करुन ।।
यति सोरुय छु श्रपान,	तति मा पान व्य़पान ।
तथ छु भगवान दपान,	सहज़ व्य़चार करुन ।।

सथ चिदानंदमये,
 प्रॉविथ ति म्वयि म्वये,
 मनि दुय कासवुनुय,
 बॉसिथ ति बासवुनुय,
 परमात्मा तु अपर,
 बोरमुत येम्य चराचर,
 प्रेम सुहेवुज्जने,
 पोन्थ लागि तीलु कने,
 नव द्वार मन्दोरे,
 लुयि दारि त्रोपोरे,
 वारु येलि वुछ ज़ि मन्दर,
 अन्दवन्द छु श्यामसुंदर,
 वछु त्रॉविथ दारे,
 तस रोस क्या छु लारे,
 ललुवुन छु ललुवुनुय,
 वोन थव तु छुख नु ओनुय,
 वोनमुत स्वात्म पछे,
 शम तु दम नाव गछे,
 'परमानंद' च़ेय,
 सुत्य क्याह वंदस,

वॉतिथ छु मोयि मोये ।
 सहज व्यचार करुन ॥
 ऑसिथ ति आसवुनुय ।
 सहज व्यचार करुन ॥
 दीशिकालु व्यन तु सतगवर ।
 सहज व्यचार करुन ॥
 रेह लागि हनि हने ।
 सहज व्यचार करुन ॥
 च्वपोर मन दोरे ।
 सहज व्यचार करुन ॥
 रुज़ि ज़ि नु अथ अन्दर ।
 सहज व्यचार करुन ॥
 यूर्य ज़ानि तूर्य लारे ।
 सहज व्यचार करुन ॥
 बालगूपाल कुनुय ।
 सहज व्यचार करुन ॥
 सहजस प्रावि पछे ।
 सहज व्यचार करुन ॥
 कृष्णस ज़ि पान वंदस ।
 सहज व्यचार करुन ॥



लीला 146

वरदया कर दया ही दया सागर,
हर हर हरु शिव शंकर जी।
निम पानस कुन तार दिम भवसरु॥
हर हर हर शिव शंकर जी॥०॥

करमस म्याँनिस मेति दितु नज़रा,
धर्मस ब्रह्मनस म्वकलावतम ।
शरनागत वतसल् परमीश्वर ॥

हर हर हर शिव शंकर जी ॥०॥

आसर ब्वजु सुत्य गोममा कैह ति सरु,
आस कति गछुन छुम कोर कुन।
औन छुस बो लारान चाने आसर॥
हर हर हर शिव शंकर जी॥०॥

कठिनय कर्म फल प्योमुत मे ईश्वर,
जन्म जन्म ज्यथ ज्यथ वरजुन वाव।
वावस मंज नावि कह अपोर तरु॥
हर हर हर शिव शंकर जी॥०॥

आपदा पुननिय पुननिय पापर,
फुटिमिति दिहकुय ज़र तय जोश ।
वीदा पैदा गछि नतु क्या करु ॥
हर हर हर शिव शंकर जी ॥०॥

यावनस लूटिथ यिथ प्योम बुजर,
 रावनुनि लंकायि कोरनय डास।
 थरु छम पथर प्यमु थदि मन्दरु॥
 हर हर हरु शिव शंकर जी॥०॥

बैड्य बैड्य पबर्त कॉल्य येलि यिन अरु,
मूल म्वंजि कुल्य कॅट्य फलफूल सान।
दिवदार येमि वनकुय बोंठ दूरयर॥
हर हर हर शिव शंकर जी॥०॥

प्रेयम् चानि बावकी मस खॉस्य बर,
अरमान मनि छुम बनिह्यस तिय ।
अमरनाथु चय कासतम मरमरु ॥
हर हर हर शिव शंकर जी ॥०॥

बजि बावनायि सुत्यन चरि आदर,
गरि गरि गोछहम मा स्वरनस चुय ।
मूहने वावु व्यचारु चोंग स्वंदर ॥
हर हर हर शिव शंकर जी ॥०॥

पूजा चॉनी करु तिय पाठ पर,
 बोज़तम तु रोज़तम कन दौरिथ ।
 ज्यनु प्यठ वनहाय योतामथ मरु ॥
 हर हर हर शिव शंकर जी ॥०॥

शंकर उदार म्योन कुस करि येमि व्वदर,
उदार मेलुनम नु न्यत्य कर्म फल।
प्रारय ति चानि बरु छारय चोन गरु॥
हर हर हर शिव शंकर जी॥०॥

शिठेमुच्च आयु यँच्च मा कावरु,
अनहँच्च यि ब्वद म्याँन्य पलङ्ग्यम नु मे ।
गँच्च चानि शर वारया छम सरग्वर ।।
हर हर हर शिव शंकर जी ।।० ।।

वुनि छुम आदन योदवय सखरु,
पादन तल दिमु सादन शेर ।
बोज़तम च़ुति म्यति रोज़तम मु वखरु ॥
हर हर हर शिव शंकर जी ॥०॥

ब्यबूज येंच क्या गोम बेयि बुजर,
पथ ब्रोंठ कोह पॉन्थन दूर।
कोह बार पापुन तु दोह लोगमुत दुर॥
हर हर हर शिव शंकर जी॥०॥

ज़ोनुम नु पानस बु ज़ि पानय फरु,
 ध्यानु दारनायि चानि निशि प्योस दूर ।
 ज्ञानु रौस बु कालस पॉन्य पान आपरु ॥
 हर हर हर शिव शंकर जी ॥०॥

स्वामि स्वर ग्वरु साने यूगीश्वर,
कैलास प्यठु चोन शिवालय ।
रेशि वनवासु सन्यासु वैशम्बर ॥
हर हर हरु शिव शंकर जी ॥०॥

कुमार सुत्य ह्यथ बेयि गनीश्वर,
हिमालस ऑस व्वमा कूर।
दिवता सॉर्य ह्यथ आख स्वयंवर॥
हर हर हर शिव शंकर जी॥०॥

गुरु चीन आसवुन छुय दीह मन्दर,
ब्वज बरु पीठस प्यठ शिवलिंग।
यैन्द्रय पोशव सुत्य पूजा करु॥
हर हर हर शिव शंकर जी॥०॥

आकाश वत सर्वगथ न्यबरु अन्दर,
सौर्यसुय मंज तय सौरिसुय निशि।
ब्योन च्यथ निश त्रभवन बिंदु मातरु॥
हर हर हर शिव शंकर जी॥०॥

प्रकाश चोनुय गटि हुंदि गाशरु,
आकाश पातालु त्रे मकाम छुम।
आश छम चॉनी अविनाश अम्बरु॥
हर हर हर शिव शंकर जी॥०॥

व्यञ्ज हुंदि यूग सँज हुंदे आगरु,
बोज़ रोस आसय शरनुय च़े।
अञ्ज क्या तनमन च़े पान अरपन करु॥
हर हर हर शिव शंकर जी॥०॥

आसन नु डेशन तस यमुकेंकरु,
यस मन दर्शन चानि आसि त्रप्त ।
आसि कुस सासु मंज म्वकलिय येमि ज़रु ॥
हर हर हर शिव शंकर जी ॥०॥

दास छुस चोनुय बरतल त्रॉविथ सर,
बर मुच़रावतम वुछहा म्बख चोन।
मशिहम नु येहलूक परिलूक अन्दरु॥
हर हर हर शिव शंकर जी॥०॥

कृडा करान वोतुम मै बुजर,
हॉज बावुन गोम कुस यावुन ।
थरु छम मरु येलि क्या ह्यथ गछु गरु ॥
हर हर हरु शिव शंकर जी ॥० ॥

उमापति तु बेयि गंगाधर,
ब्रशभ आसन बस्म लिंगाकार ।
गनपत डीडिवोन्य म्वख गज्यन्दरु ॥
हर हर हरु शिव शंकर जी ॥० ॥

त्रनयनु सिरिय अँगन तु चंदरो,
कपाल मालु नॉल्य वासुक नाग ।
मेय अँद्र सिन्दुर करव हर मन्दरु ॥
हर हर हरु शिव शंकर जी ॥० ॥

यिथ यथ जन्मस ह्यथ छुस हजर,
च्यथ छुमनु डंजि तय क्वंजु छम तय ।
ऑरजर कासतम ज़राजर अगूजरु ॥
हर हर हरु शिव शंकर जी ॥० ॥

व्वन्य करतु चारु म्योन वनतु व्वन्य कह हरु,
अरसर जन्मुक्य कह ज़लनम ।
बरु गछु सोंथ ज़ि नतु अछतम बरु ॥
हर हर हरु शिव शंकर जी ॥० ॥

बेगम चानि दर्शन दिगम्बर,
'परमानंद' गछि ज़ेय सुत्य लय ।
त्रौविथ ज़्यनुक्य मरनुक्य अरसरु ॥
हर हर हरु शिव शंकर जी ॥० ॥

लीला 147

अमर पानो भ्रम समसार छुय, आदि दीव बननुक च़ेय आदिकार छुय ।
 हारव रोसतस भवसरुतार छुय, सथ व्यचार, सथ व्यचार ॥
 आदि अंत शब्दन मंज ओमकार छुय, जपनुय मंज अजपाजप सार छुय ।
 ध्यान मंज आत्मुक ध्यान शूभिदार छुय, धारनायि दार, धारनायि दार ॥
 ब्रोंठ पथ प्रारब्दुक व्यवहार छुय, पथ ब्रोंठ नेरनस फेरनस न वार छुय ।
 बॉयबन्ध बब मॉज कुस दरकार छुय, च़थ करु यार, च़थ करु यार ॥
 पराधीन मुखु बोज़ हुंद ल्वकचार छुय, यावनस मंज कामुक अंधकार छुय ।
 बुजरस न ह्यकनुक संकल्प बार छुय, कर चु ह्यतकार, कर चु ह्यतकार ॥
 मुह स्यंदि सुमि कनि यन्द्रेय द्वार छुय, यिम पार गॅय तिम अवतार गॅय ।
 दौह शोमराव देह खँदमतगार छिय, कर चु दशहार, कर चु दशहार ॥
 तीव्र वॉरागुक खासु सबज़ार छुय, ह्यकखय रागु रोस वुछनस वार छुय ।
 शिव शिव बोलान पानु आबशार छुय, शांत शालमार, शांत शालमार ॥
 ग्वडु श्रवनुय बोजुन दरकार छुय, तव पतु च़ेय मंगनुक आधिकार छुय ।
 न्यद्यध्यासन ज़ेन तुरिया तयार छुय, साक्षात कार, साक्षात कार ॥
 अथि आमुत भक्ति हुंद म्वखतहार छुय, पानस नॉल्य छुनुक यखतियार छुय ।
 कुस मना करान कसुंद यकरार छुय, छुख चु म्वखतार, छु चु म्वखतार ॥
 कुस कारबार छुय कुस बेकार छुय, नाहकय दिह दृष्टि हुंद अंधकार छुय ।
 मन ज़ेन वीदुचि ज़्यवि यकरार छुय, साहिब कार, साहिब कार ॥
 हारबर लारिय न योद सुत्य खार छय, ऑस वाहरॉविथ नफसुन्य खार छय ।
 प्रारब्ध फल सूरिथ पतु लार छय, ग्रट अनवार, ग्रट अनवार ॥
 शखति पातकि शाहरूक सूबेदार छुय, धर्म अर्थ काम मूक्ष दुन यखतियार छुय ।
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

लीला 149

लोलु बुलबुल आव यँचकॉल्य व्यसिये,
बालु यारन अँन्य क्या डॉल्य व्यसिये।
राजु हमसा मा खॉल्य व्यसिये॥

बालु यारन अँन्य क्या डॉल्य व्यसिये॥०॥

थोव स्वदामन मंदछिथ स्युर चूरे,
ओस ज़ागन मोहन दूरि दूरे।
यस छि कोस्तुब मालु नॉल्य व्यसिये॥

बालु यारन अँन्य क्या डॉल्य व्यसिये॥०॥

शोकु वुछने आव तस जंदु जामन,
स्युर छीनिथ न्यूनस गनशामन।
बुगबावुचि ब्वछि ख्यनु सॉल्य व्यसिये॥

बालु यारन अँन्य क्या डॉल्य व्यसिये॥०॥

गिरदॉरी आनंद क्या छु प्रावन,
तस रुखमनि मोहन तंबलावन।
क्या ज़ानख मज़ु हीयमॉल्य व्यसिये॥

बालु यारन अँन्य क्या डॉल्य व्यसिये॥०॥

म्वछि त्रैयिह रोकान छस रुखमन,
लोग बावनि तस मनमोहन।
न्यूथ आनंद स्वगन बॉल्य व्यसिये॥

बालु यारन अँन्य क्या डॉल्य व्यसिये॥०॥

ऑस मनु मंजु सोचान यिय रुखमन,
नब तु प्रथ्वी प्रॉव बखतावारन।
येंच खारान भँखतिस चॉल्य व्यसिये॥

बालु यारन अँन्य क्या डॉल्य व्यसिये॥०॥

‘परमानंद’ वोलनस लोलु माये,
म्वछि त्रेयमे बुति हाव कथ जाये।
असि बँखत्यन द्वख तु गम गॉल्य व्यसिये॥

बालु यारन अँन्य क्या डॉल्य व्यसिये॥०॥



लीला 150

टोठतम विशणारपन कृष्ण जीवय, हरे राम नारायण वासुदीवय।
गोबिन्द चरणार बिंद चॉनि सीवय, हरे राम नारायण वासुदीवय॥
शरण चॉन्यन पंकज पादन, वरान सिद्धन संतन तु साधन।
क्षमा करू सान्यन अपराधन, हरे राम नारायण वासुदीवय॥
अलक्षय महिमा चोन क्याह वनय, मन बौद्ध वॉनि तोत नु वातुनय।
पानय ज्ञानख बु क्योहो वनय, हरे राम नारायण वासुदीवय।
प्रबल म्यानि विजि कोत गोय सु बल, यमि बलु सुत्यन खोरथन अजामल।
बुति छुसय प्रारान चाने बरुतल, हरे राम नारायण वासुदीवय॥
भक्त्यन सुत्यन मान कुस करे, सुय करि यस चानि दया वरे।
तँस्य वरि युस नाम निधान स्वरि, हरे राम नारायण वासुदीवय॥
हा ज़ावु क्याजि छुख चिन्ता करान, क्षनु क्षनु आसुन नारायण सौरान।
दासन पनुन्यन पानय वरान, हरे राम नारायण वासुदीवय॥

क्याह रुत ओसुम कर्मय लोनुय, तवय लोगमुत छुम नाव चोनुय ।
 पानय करख उपाय म्योनुय, हरे राम नारायण वासुदीवय ॥
 श्रद्धावान क्याह आसु गूर्यबाये, यिमु लूक लज्जा त्रॉविथ द्राये ।
 पानु भगवानस सेवायि आये, हरे राम नारायण वासुदीवय ॥
 टोठतम अनाथस हे भवु दाता, चुय छुख गुरु म्योन चुय मोक्ष दाता ।
 माता पिता बन्धो भ्राता, हरे राम नारायण वासुदीवय ॥
 'श्रीधर' प्रारान छुसय चानि वेरे, प्रवाह चोन योर कर सना फेरे ।
 सतु भावकि पोश लागय शेरे, हरे राम नारायण वासुदीवय ॥
 भाग्यवान क्याह ऑस्य गोकलवाँसी, यिम बन्सरी चानि बोझान ऑसी ।
 मायायि मोह निशि गँयि उदासी, हरे राम नारायण वासुदीवय ॥
 सुशोभ समय क्याह ओस तेलि, जमुनायि बँठि बँठि गोपाल येले ।
 गोपी ह्यथ फेरान थलि थले, हरे राम नारायण वासुदीवय ॥
 ऐसा शुभ वेला कब आवे, जब कान्हा बन्सरी बजावे ।
 सन्मुख होके हमको सुनावे, हरे राम नारायण वासुदीवय ॥
 बहुत गोपियां और श्यामु अकेला, खेलन से लुट लिया मन मेरा ।
 दुनिया मेला 'आनन्द' अकेला, हरे राम नारायण वासुदीवय ॥



लीला 151

यस कुन वुछान गोम यावुन रसय रसय ।
 तमी मती लोलु अमृत बो चोवनसुय ॥

तस पाक ज्ञातस रॉत्य रातस प्रारान छसय,
 तस रोस्त छमनय नेह नेन्द्र आराम ह्यसुय ।

बुलबुल छु मुशताक पोशु बागन आशक छसुय ॥

तमी मती लोलु अमृत बो चोवनसुय ॥० ॥

अँद्री वँन्य वँन्य वँन्य दिचाम मे थानसुय,

पय ह्यथ वोतुस लय गोमुत मकानसुय ।

परम प्रोवुक गँयि खँसिथ विमानसुय ॥

तमी मती लोलु अमृत बो चोवनसुय ॥० ॥

लाशक छु पानय पॉन्य पानय आशक छसुय,

गुल मेलि गुलस शाख बँगस बेयि मूलसुय ।

तमी मती लोलु अमृत बो चोवनसुय ॥० ॥

कँह छिय वुदी ज़न न्यन्द्रे मंज ख्वाबसुय,

कँचन वोदयन मोह न्यन्द्रे थावान नु ह्यसुय ।

कँह गँयि मीलिथ वॉत्य अन्तस मुक्कामसुय ॥

तमी मती लोलु अमृत बो चोवनसुय ॥० ॥

गिन्दने द्रामुत भवसरस छु ज़ारुसुय,

गिन्दान गिन्दान युथ नु डलख शुमारसुय ।

स्वर थाव पानस ज़ेरि ज़ब्बर किताबसुय ॥

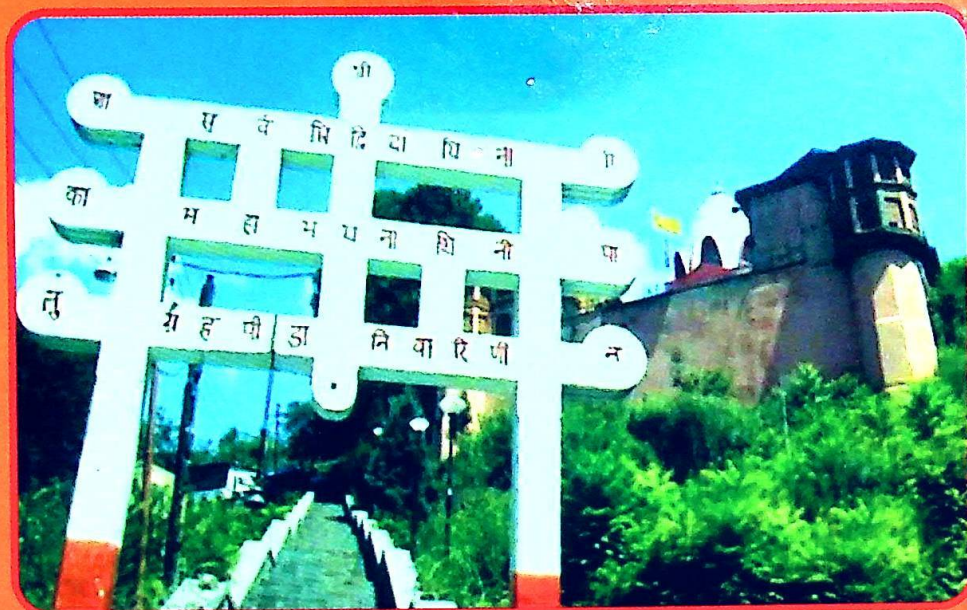
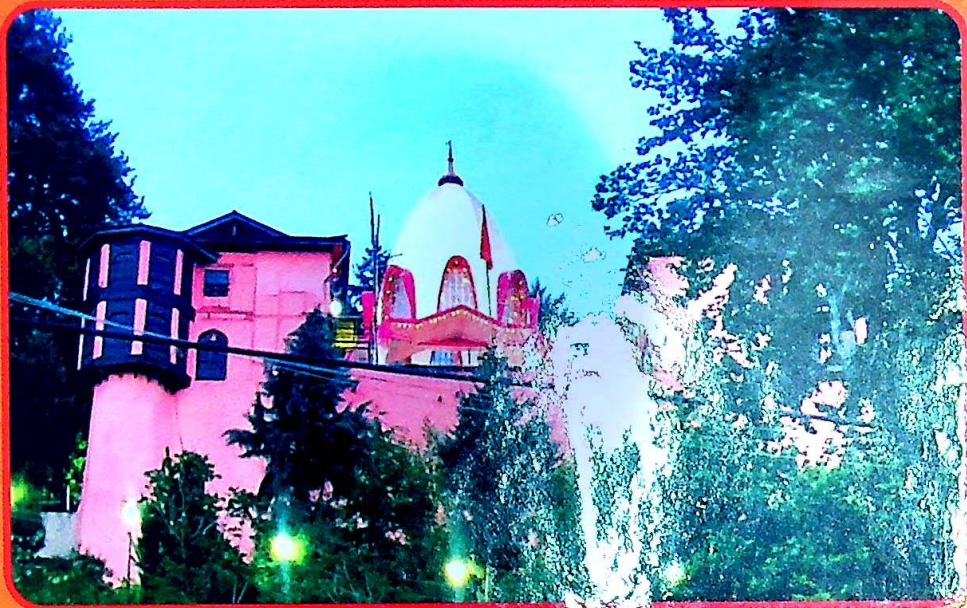
तमी मती लोलु अमृत बो चोवनसुय ॥० ॥

सतु सरु तारुन सुय गारुन प्रथ समुयसुय,

वोन आदि दीवन सत श्रवण कथ पानसुय ।

तमी मती लोलु अमृत बो चोवनसुय ॥० ॥





प्रकाशकः

श्री श्री जगद्म्बा शारिका चक्रेश्वर संस्था-हारी पर्वत
श्रीनगर/देवी आंगन, पलोरा ठोक, जम्मू।